आचार्य्यशिरोमणि श्री १०८ युत पंथश्री उग्रनामसाहब
आचार्य्य कबीरपंथ ।
(संस्थान कोदरमाऊ)

सत्तनाम।

प्रस्तावना।

इसके कहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है कि, धर्म्मही सर्व श्रेष्ठ पदार्थ, सबका जीवन और सबका उपास्य देव है। यदि धर्म्म छूट जावे तो जीव अधर्म्म में पडकर मृतकसे भी निकृष्ट अवस्थाको प्राप्त होजाता है।

धर्म्महीको बताने और धर्म्महीकी रक्षा करनेके लिये नित्य मुक्त स्वतंत्र धर्म्म स्वरूप महात्मा गण बारम्बार पृथ्वीपर प्रगट हो, जीवों को धर्म्माचरण का उपदेश करते हैं। जबरधर्म्मका बहुत न्हास होताहै तबी तबी संत महात्मा प्रगट होतेहैं अथवा औतार होता है। उनके गुप्त होने के पश्चात् उनका उपदेश संसार में पुस्तकाकार अथवा वांणीस्वरूप से वर्तमान रहता है जिसको मननकर जीव लौकिक पारलौकिक ज्ञान प्राप्तकर सदाचरणमें प्रवृत्त हो सुखी होतेहैं।

यदि महात्माओंकी वाणी पृथ्वीपर न रहे उनका उपदेश जीवोंको न मिले तोसंसार की मर्यादा भ्रष्ट हो जगदान्ध प्रसंगसे सृष्टि क्रम ही बिगड जावेयोंतो उपरोक्त बातें ऐसी सामान्यहैंकि, संसार भरके सर्व धर्म्मों(मजहबों)के ऊपर लग सक्ती हैं परन्तु पाठक गणोंसे यहां पर मेरा कहना विशेष यहहै कि, यह पुस्तक जो आपके हस्तकमलों में उपस्थित है कबीरपंथकी अनन्त उपदेश रत्नमय पुस्तको में से कैएक लघु२ पुस्तकोंका संग्रह है। यद्यपि कबीर पंथकी पुस्तकों को प्रकाशित होते अबही बहुत दिन न-

हीहुये हैं तथापि,उनथोडे पुस्तकोंको प्रकाशित होते देख,लोगोंके हृदयमें,पुस्तकों को छपे देखनेका विशेष उत्साह पाया जाताहैं।

यद्यपि बहुतसे स्वार्थी और मिथ्या स्वांगधारी लोगोंने पुस्तकोंके प्रकाशित होनेका विरोधभी कियाहै तथापि कौन ऐसा सामर्थ्यवान है कि,जो प्रकृतिके कार्य्यको रोकसके यदि कोई प्रकृतिसे भी सामना करनेको उपस्थित हो तो हो परन्तु सत्य संकल्प महात्माओंके वचनको उलंघन करनेवाला कौन है ? कौन है ? जो उनकी भविष्यत् वानी को झूठा करसके । जिस प्रकार सूर्य्यके प्रकाशित होनेसे अन्धकार के साथ २ उलूक, चमगीदड, आदि निशिचर अंधकार प्रिय अधम जीवोंका कहीं पता भी नहीं लगता अथवा किसी गुफा आदिक में बैठकर छुछुन्दर आदि अपनी बडाई हांकते हुये सूर्य्यकी निन्दा भी करतेहैं; तौ भी न तो सूर्य्यकी कुछ हानी होतीहै न उन अधम जीवोंको उसके प्रकाशमें निकलनेकी सामर्थ्य ।

इसी प्रकारसे यद्यपि आजकल सद्गुरु की वाणीके प्रकाश को देखकर नाना प्रकार के स्वार्थी, देहात्म वादी, सतगुरुद्रोहि,विषय विलासी, पामर लोगोंके हृदयमें द्वेष और भय की अग्नि भडक उठीहै और अपनी सामर्थ्य अनुसार वे पामर गण विघ्न डालनेमें उठा नही रखतेहैं तथापि, सतगुरु की आज्ञानुसार कार्य्य होताही चला जाताहै ।

ग्रन्थों में लिखा है कि, सत्य गुरुके पंथमें भी छल और कपट द्वारा काल पैठेगा और अर्थका अनर्थ कर गुरुआ रूपसे जीवन को ठगकर नाना प्रकारको वादित्र तथा बाजीगरी आदि द्वारा जीवोंको सतगुरुके नामके ओटमें कालके जालमें फँसाके

गा तब तेरहवे वंशमें पं श्री दया नाम साहब प्रगटहोकर पाखण्डियोंका मानमर्दनकर जीवोंको सत्य मार्गपर लगावेंगे।

ग्रन्थोंके वचनानुसार आज कल सतगुरु के नामके ओटेमें जैसे २ अधम और पापकर्म्म हो रहे हैं वह लोगोंसे छिपा नहीं है। सतगुरुके प्यारे और भक्तोंका आदर नही रहा। गुरुकी वाणी और आज्ञाकी कुछ परवाह न करके सत्य पंथके भेषोंको ग्रहण करके, कालदूतोंने कैसा २ पाखण्ड और पापका प्रचार करके सत्य उपदेशकों और सत्य धारियोंसें द्वेष कर जीवोंको नर्क मार्ग दिखलाया है। इधर तो अत्यन्त पाखण्ड फैलगया है उधर सतगुरुकी भविष्यत् वाणीके अनुसार पाखण्डको नाश करके सत्यके प्रचारक स्वामी श्री० १०८ पं श्री दयानाम साहबका प्राकट्य हुआ है।

पंश्री दयानाम साहबका प्रताप प्रत्यक्ष यह देखनेमें आताहै कि, जिस दिनसे आपने पृथ्वी पर पदार्पण किया है उसके थोडे दिन पहलेसेही सद्गुरुकी वाणीका प्रकाश फैलने लग गया है।

लखनऊ, बनारस, प्रयाग, कानपुर, बिलासपुर, नरसिंघपुर, कलकत्ता, गया और बम्बई आदि स्थानोंमें अनेक सत्यपंथ की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

बर्तमान आचार्य्य श्रीमानश्री १०८ युत पं श्री उग्रनामसाहेबकीभी रुचि वाणीके प्रकाशित करनेमें अत्यन्तउत्साहसेहुकी है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाणरूप यह ग्रन्थ आपके हस्तकमलमें उपस्थित है। क्योंकि, इस पुस्तकको छापनेकी आज्ञा पं श्रीहजूर साहबसे प्राप्तकरके ही यह पुस्तक छपीहै।

यह पुस्तक परमभक्त सेठठक्कर गोविन्दजी भगवान ने अपने

बयसे छपाकर अपने धर्म्म परायणता का पूर्ण परिचयदिया है।

विशेष क्या कहूं उपहारमें इस प्रस्तावनाको समाप्त करते २मुझसे एक परम सज्जन पुरुषको धन्य वाद दिये बिना नहीं रहा जाता, जिन्होंने इस पुस्तक को शुद्ध करनेमें यथा अवकाश अपना अमूल्य समय लगाकर मेरे ऊपर तथा इस पुस्तकको बांचने वालोंके ऊपर बड़ा उपकार कियाहै क्यों कि, मूलप्रति हाथकी लिखी हुई ऐसी अशुद्ध थी कि, बांचने में भी अति कठिनाई होती थी। वह मेरे परम धन्यवाद के पात्र सज्जन बर पण्डित श्रीधर शिवलालात्मज पण्डित कृष्णलालजी 'ज्ञानसागर' प्रेस बम्बईके अधिपतिहैं। इन महाशयको जितना धन्यवाद दियाजावे वह थोडाहै।

मैंहूं सर्व संतोका दासानुदास।

बालादास कबीर पंथी.

ग्रान्टरोड (बम्बई.)

श्री

सत्तनामकबीर।

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनीन्द्र करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, पंश्री धीरजनाम; उग्र नाम, दयानाम,–

वंश बयालिसकी दया।

छंद-हरिगीति।

प्रथम बन्दु गुरु चरणरज जिन अगम्य गम्य लखाइया॥ गुरु ज्ञान दीप प्रकाश करि पट खोलि दरश दिखाइया॥ जेहि कारणे सिद्धा पचे सो गुरुकृपासे पाइया॥ अकह मूरति अमी सूरति तामें जाय समाइया॥

सोरठा छंद ।

कृपासिन्धु गुरुदेव, दीनदयालु कृपालुहो ॥ विरला पावे भेव, जिन चिन्हें प्रगटे तेहि ॥

हरिगीति ।

कोइ बूझही जन जवहरी जो शब्द कीपारख करे ॥ चित लायके सुनह सिखापनो हित जानिके हिरदै धरे ॥ तम मोह मो सम ज्ञान रवि जब प्रगटहो तब सूझही ॥ कहत हूं अनुरागसागर सन्त कोइ कोइ बूझही ॥

छन्द-चर्चरी ।

तेहि बहुत कहि समझावही नहिं नारि समझत सो धनी। नहिं काम है धन धाम सो कछु मोहि तो ऐसी बनी ॥जग जीवनो दिन चार है कोई नाहिं साथी

अन्तको।यह समुझि देख्यो ऐ सखी ता
ते गह्यो पद कन्त को ॥

सोरठा।

लिये पिऊ कर मांह, जाय चिता
ऊपर चढी॥ गोद लिये निज नाह, राम
राम कहते जली ॥

छन्द हरिगीति ।

निरालम्ब अवलम्ब सतगुरु, एकआशा
नामकी। गुरुवचन लीन आधीन निशि
दिन, चाह नहीं धन धामकी ॥ सुतना
रि सब बिसार विषया, गुरुचरनन दृढ
कै गहे। सतगुरु कृपा दुख दूरनाशे,
धाम अविचल सोलहे ॥

सत्तनाम कबीर।

सत्तनाम, सत्त सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिंत,पुरुष, मुनिंद्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतायन, धनी धर्म्मदास ॥ चूडामनि नाम ॥ सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति स्नेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंश्री उग्रनाम, दयानाम, साहेब बंसबयालीसकीदया॥

अथ ग्रंथ (बडा) संतोष बोध ॥

धर्मदास उवाच–

धर्मदास पूछे चितलाई ॥ तत्व भेद मोहि कहो समझाई ॥ कौन तुरी को योजन दौरा ॥ भाषो साहेब हम है भो

रा ॥ तत्वनको असथान चिन्हावो ॥ भि
न्न भिन्न करि मोहि बतावो ॥ विनयकरौं
कीजे प्रभुदाया ॥ धरमदास गहे दुनो
पाया ॥ सत्गुरु बचन ॥ धर्मदास सुनो
तत्व व्यवहारा ॥ निशि वासरका कहूं
विचारा ॥ लालतुरी योजन परवाना ॥
मुशकी योजन डेढ सिधाना ॥ हरातुरी
योजन दोइ जायी ॥ पीरा योजन तीन
चलायी ॥ हंसा योजन चार सिधायी ॥
फिरके दण्ड तबे लहि आयी ॥ मूल कँव
लहै तेज ठिकाना ॥ षटदल तत्व आका
श बखाना ॥ कमल अष्टदल वाहि बता
ई ॥ द्वादश कमल पृथ्वी रहाई ॥ षोड
श दल जल तत्व बखाना ॥ धर्मदास ग
हि राख ठिकाना ॥ याहि विधि पांचो

आवै जाई॥ आपनि आपनि मंजिल क
राई॥ पांच तुरी रथ येक सँवाँरा ॥ ता
भीतर मन जीव पसारा ॥ जीव पड़ा है
मनके हाथा ॥ नाच नचावे राखेसाथा॥

साखी ।

अष्ट पांखुरीकमलहै, ता भीतर जिव
बास॥ तापर मनका आसना, नख
सिख तेहिके पास ॥ सूर मिलावे चंद
कूँ, चंद मिलावे सूर ॥ यहि जिन भेद
बिचारिहै, जाहिमिला गुरुपूर ॥ जाही
पवन पर चंदा बसे, ताहि न ग्रासे
काल ॥ जो यह भेद बिचारई, सोई
जवहरी लाल ॥ पानीमें पावक बसे,
अतिघन बरसे मेह ॥ तीनो अधर अका
श है, कौन पवनको थेह॥ महिमा है
वा नामकी, इनका आयसु कीन्ह ॥

जो यह भेद बतावही, सीस अरपि तेहि दीन ॥

चौपाई ।

धर्मदासो वचन ॥ साहेब कहो भेद टकसारा ॥ जेहि ते जीवन होय उबारा ॥ नौ तत्वनको भेद बतावो ॥ सकल का मना मोरि मिटावो ॥ पांच तत्व खेले मैदाना ॥ चारतत्व वे रहैं ठिकाना ॥ छे तत्वनको भोजन केता ॥ ताको चीन्हे आगम चेता ॥ सतगुरो वचन ॥ धर्मदास मैं तोहि समझाऊँ ॥ नव तत्वनको भेदबताऊं ॥ छठेतत्व निरंजन नाऊं ॥ नयनन बीच बसावल गाऊं ॥ नाभीकमल शब्द उठे नाला ॥ नयन न बीच निरंजनकाला ॥ ताहि कमल का नाम बताई ॥ चार बरन होय रूपदि

खाई ॥ लखे शब्दजो जाने भेदा ॥ राता पीला श्याम सपेदा ॥ कमल येक बानीहै चारी ॥ बैठ निरंजन आसन मारी ॥

साखी ।

ताहि कमलकू छोडिके, कीजे शब्द विचार ॥ पांचोतत्व विचारिके, उतरो भवजल पार ॥

चौपाई ।

छैसौ और यकबीस हजारा ॥ येते निशि दिन स्वाँस सुधारा ॥ ताकोसब जन संग मिलपावे ॥ सो सतगुरु यह भेद बतावे ॥ बीस सहस्र पंच देवन पाई ॥ ताका लेख कहों समजाई ॥ प्रतिदेव पीछे चतुर हजारा ॥ सहस्र जाप रहु छे सो धारा॥ सो रहसै मे बाकी रहई ता

काभेद हंसकोइगहई ॥ जाप अष्टोतर जब रहिजाई ॥ तेहि छिन शब्दहि सुरति मिलाई ॥ साहसमै बारह चौपाई ॥ तत् छिन हंसा लोकको जाई ॥

साखी।

जादिन काल ग्रासही, नखसे करै उजार ॥ भाग जीव चढ़ि बैठही, शब्दहि कुलुप उघार ॥

चौपाई।

सुषमना तत्व करे असवारी ॥ जब हि काल कि पडंचे धारी॥धर्मदासोवचन॥ साहेब तिनका भेद बताई ॥ जाते काल छुवन नहिं पाई॥नौ तत्वनकोकहिये भेदा॥ एक एक कर कहो निषेदा॥ सतगुरु बचन ॥ नव तत्वनका भेद बताऊं ॥ द्वारा तिनका कहि समझाऊं ॥ बाय त

त्वमे छूटे देहा ॥ पवन मंडलमे जाय उ
रेहा ॥ तेज तत्वमे करे पियाना ॥ बज्र
शिलामे जाय समाना ॥ अकाश तत्व
मे छूटे भाई ॥ तारा गनमे जाय समाई
॥ धरती तत्वमे छूटे देहा ॥ जल जीवन
मे जाय उरेहा ॥ जलके तत्व छूट जिव
जाई ॥ नरकी देह धरे तब आई ॥ सुष
मनि तत्वहिं छुटे शरीरा ॥ पशु पंछी
असकहैं कबीरा ॥ छे तत्वनका कहा वि
चारा ॥ तीन तत्वनका भेद है न्यारा ॥
तीन तत्वका भेद जो पावे ॥ निश्चय
हंसा लोक सिधावे ॥ तीन तत्व अब प्र
गट बताई ॥ जो बूझेसो लोकहिं जाई ॥
शब्द तत्वको जाने भाई॥ सुरत तत्वको
ध्यान लगाई ॥ निरत तत्व जाके घट

होई ॥ आवा गमन रहित सो होई ॥
नव तत्वनका कहा विचारा धरमदास
तुम करो सँम्हारा ॥ तत्व भेद कहा
तोही वानी ॥ छत्र अधर है नाम नि
शानी ॥ तीन भेद है पुरुषके पासा ॥
छोडे काल जीवकी आसा ॥ पुरुष श-
ब्दहै शीतल अंगा ॥ तत्व निरक्षर क
मलके संगा ॥ आप पुरुष तेहि पिंड न
माथा ॥ पुरुष शब्दतेही देखे साथा ॥
काया मांहिं लगीयक नाला ॥ तहवाँ
रहे निरंजन काला ॥ ता शिर ऊपर
पांजी लागे॥ तेहिचाढि हंसा जइहै आगे॥
श्वेतरूपीत कमल है राता ॥ तीन तत्व
जीव संग रहाता ॥ तवन तत्वको भाव
सुनाई ॥ तीन रूपते संग रहाई ॥ काया

क्षेत्र जाहि हमदीना॥खेत कमाई आग
म चीन्हा ॥ सत पाखुरी कमल यक हो
ई॥ताका भेद कहूँ मैं जोई ॥कमल एक
लोक है तीना ॥ तीनो लोक दीनो पर
वीना॥चवथा लोक अधर कहँ चीन्हा॥
ताकर कालगम्य नहि कीन्हा ॥

साखी।

तीन लोक बिचारिके, गहो शब्द
टकसार ॥ कहे कबीर धर्मदाससो, उ
तरो भवजल पार ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ साहेब वचन कहो प
रवाना ॥ तीन लोक का कहो ठिकाना॥
सतगुरुवचन ॥ ब्रह्मलोक लिंग अ
स्थाना ॥ ताते उत्पत्ति होयनिधाना ॥
विष्णुलोक नाभी विसतारा ॥ शीव

का लोक हृदय मंझारा ॥ चवथालोक अधर अस्थाना ॥ कहे कबीरयों कहा बखाना ॥ ताहि लोकको ध्यान लगावे ॥ चलत हंसा काल नहिंपावे ॥ पाखुरीको कहों ठिकानो ॥ धर्मदास तुम सत्य कर मानो ॥ श्रवन दोय पाखुरी बखानी ॥ सब सुख लेई सुने जो वानी ॥ तीजे नयन पाखुरी आनी ॥ चौथी दूजा नयन बखानी ॥ पांचवीं का कहूँ विचारा ॥ रसना शब्द उठे हंकारा ॥ छट्ठी पाखुरी इंद्री जानी ॥ उत्पत्ति बीज ले डारे आमी ॥ सात पाखुरी ठाम बतावा ॥ खोज कवल अस्थिर घर पावा ॥ पाखुरी सात कमल है एका ॥ भीतर जाहि जीव मन टेका॥

ताहि कमल मे तार लगाई ॥ सोइ तार को चीनो भाई ॥ सो वहतार अधर ले राखा ॥ जो कोई साधु हिरदै ताखा ॥ ताहि तार का बहुत पसारा ॥ खंड ब्रह्मांड पताल सवांरा ॥ ताहि तारमे डोरी लागी ॥ विरला चिन्हे हंस सुभागी ॥ ताकर भावहै सेतही अंगा ॥ नाम निरक्षर ताके संगा ॥

साखी।

धर्मनि निरक्षर गुप्तहै, आक्षर कहे जेहि नाम ॥ कहे कबीर लखिपावे, होवे जिवको काम ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ साहेब कहो जीव किमि आवा ॥ नरदेही कैसे के पावा ॥ सतगुरु बचन ॥ पवन जीव ब्रह्मांड

रहाई ।। ता पीछे नाभी चलि जाई ।। नयन नाशिका कीनी साखी ।। मूलहि कमल सुरति गहि राखी।।चक्षु ज्योति जहां ब्रह्म सँवारा ।। हिरदय कमल ब्रह्मांड मंझारा ।।

साखी।

बैठ जीव जहाँ जायके, दीयो छेत्र मंझार कहे कबीर धर्मदाससो, ऐसो कीन बिचार ।।

चौपाई।

शीस सँवारि बाहुँ निर्माई ॥ कंठ कमल मुख हृदय बनाई।।तापर छबि यक बरन सवाँरा ।। पवन जीवसो भया उजियारा।।कमल सब्ज और सेतहि राता। नाभि कीन्हा सकल पुनिगाता॥ ता पी

छे दो खम्भ बनाई ॥ रचि काया पुनि जीव समाई ॥ सत्त पवनहै पुरुषकी स्वासा ॥ सो कीना जीवन संग बासा ॥ ताका भेद सुनो धर्मदासा ॥ तैलिलेहु सत्ताविस मासा ॥ छिन छिन पल पल आवे जाई ॥ जीवको संधि लखे नहिं पाई ॥ प्रथम घडी ब्रह्माण्ड रहाई ॥ दूजे घडी नाभी चलि जाई॥जो रहे सबकर प्राण अधारा ॥ खेतगहै इस देह मँझारा ॥

साखी ।

तीजे घड़ीके बीते, फिर तहवाँ चलिजाई ॥ यहि विधि रहनी जीवकी, कहे कबीर समुझाई ॥

चौपाई ।

धर्मदासो बचन ॥ दयावंत प्रभु और बताई ॥ छुटे हंस कौन दिशिजाई ॥

तौन ठौर प्रभु देहु बताई ॥ तहां सुरति राखो ठहराई ॥

साखी ।

उत्तर दिशि होय निकसे, अधरहि बैठेजाय ॥ सो मारग बाकी रहा, सत गुरु देहु लखाय ॥

साखी ।

चार खुँट धरती अहै, आठ दिशी है पवन ॥ सतगुरु कहो बिचारिके, हंसाके दिशि कवन ॥ सतगुरु बचन ॥ पश्चिम सूर कीन रहि बासा ॥ पूरव चंद करे प्रकासा ॥ दक्षिण दिशा बाट नही पावे ॥ उत्तर दिशा लोक दिखलावे ॥

साखी ।

उत्तर घाटी उतरे, पांजि बैठे जाय ॥ तहवाँ सुरति लगाइके, पुरुषके परशे पाय ॥

साखी

धरति अकाशके बाहिरे, जहाँ शब्द निर्वान ॥ तहाँ जाय चढि बैठई, काल मरम नहिजान ॥

चौपाई।

प्रथम हंस सुख सागर जाई॥सुखसागरमें दर्शन पाई ॥ सुख सागरको यही संदेशा॥उडगन पाती लागे केशा॥ हंसा पैठि कीन्हा असनाना ॥ उगे लिलाट ज्यों षोडश भाना ॥ लगी डोर शब्दकी नेहा ॥ अस पांजी है अधर बिदेहा ॥ लागी सुरति शब्द की तारी ॥ चढे हंस पांजी उजियारी ॥ चढिके हंस अधरसे पेखा ॥ हंसा उलटि ठाढ होय देखा ॥ भलसाहेव कीन्हीं मोहि दाया ॥ छुटी सकल मोह अरु माया॥पुष्पमाँहि जस

गन्ध समाना ॥ हंस तिमि धरे पुरुषको ध्याना ॥ यहि विधि जीव अमर घर जाई ॥ धर्मदास सुनियो चित लाई ॥

धर्मदासो वचन ॥ सतगुरु भेद सत्यमैं जाना ॥ द्वीप खण्डका कहो ठिकाना ॥ काया खण्ड कहो मोहिभाषी ॥ जाते जीव अमर घर राखी ॥ पृथक पृथक दीजे समझाई । जाते सब संशय मिटि जाई ॥

सतगुरु वचन ॥ धर्मदास समझा भल बानी ॥ सत्य बचन तोहि कहों बखानी ॥ प्रथम शब्द खण्ड है भाई ॥ दूसर खंड निरति उठिधाई ॥ तीसर खंड सुरतिमें ठयऊ ॥ चौथाखंड प्रेम निर्मयऊ ॥ पांचवां खंड शील है भाई ॥ छठा खण्ड क्षमा निर्माई ॥सातवां खंड

संतोष दृढाई॥ आठमो खण्ड दया स
मझाई॥ नवमा खंण्ड भक्तिकहि दीनो॥
धर्मदास तुम निजकै चीनो॥ इन खण्ड
न मेंखेलै कोई॥ निश्चय हंसा लोक कहँ
होई॥ सुनो सातद्वीपन के नाऊँ॥ भिन्न
भिन्न मैं कहि समझाऊँ॥ वाय तत्व सुनु
धर्मनि वानी॥ पवन द्विपमें जाय समा
नी॥ तत्व अकाश कहा समझाइ॥ द्वी
प सागरमें जाय समाई॥ अग्नि तत्वकी
सुनियो वानी॥द्वीपअग्नि में जाय समा
नी॥ धर्ती तत्व आगम कछु होई॥ द्वीप
जल निधि जाय समोई॥ तत्व शून्य मैं
तुमको कहेऊ॥ छट्टे शून्य द्वीप लय
भयऊ॥ तेज तत्व मैं भाषि सुनाई॥
द्वीप शून्यमें जाय समाई॥जलका तत्व

कहूं बिसतारा ॥ तेहि सुखसागर द्वीप अपारा ॥ सुषुमनि तत्व कहों समझाई ॥ द्वीप अधरमें बैठे जाई ॥

साखी ।

सात द्वीप नव खण्ड है, इनमें रहो समाय ॥ कहे कबीर धर्मदाससो, निश्चय लोक समाय ॥

चौपाई ।

धर्मदासो वचन ॥ साहब भेद कहा हम जानी ॥ सात वार कहाँते आनी ॥ सतगुरु वचन ॥ धर्मदास बूझै भल नागर ॥ सत्य सुकृत तुम ज्ञान उजागर ॥ मैं तोहि कहूँ सुनो चित लाई ॥ चंद सूर दिन वार बताई ॥ पुरुष कमलमो साते वारा॥ताका भेद कहों टकसारा॥ सात पाँखुरि जब विगसाई॥ साते वार

तहाँ ते आई ॥ आये बार कमलमें र
हेऊ ॥ ताहि वारते सातो कियऊ ॥ सोर
ह कमलसे सातो वारा ॥ निशि वासर
का कहों विचारा ॥

साखी ।

मंजन कीन्हो कमलको, छोलन प
रगई पास ॥ ताते चंद सूरज भयो, पृथ्वी
को प्रकाश ॥

चौपाई ।

पहिले छोलन जल नहि परिया ॥
ताते सूरज तेज अनुसरिया ॥ सुनियो
चंदाकी शितलाई॥धर्मदास मै देऊँ बता
ई॥सिंच्यो अमी छोलन पुनि जबहीं॥शी
तल चंदा उपज्यो तबहीं ॥ छोलन चुनी
जो झरि झरि परहीं ॥ नक्षत्र चंद्रमाँ सं
गति करहीं ॥ यह सब रचना कूर्महिं दी

न्हा ॥ पाछे ध्यान अधरमें कीन्हा॥ रहे जाय कूरमके पेटा ॥ धरम राय सो घर नहि भेटा ॥ पुरुष दीना उत्पत्ति धर्म राई ॥ धायके लडा कुरुमसे जाई ॥

साखी।

छीने माथा नखनसो, हेरी सब विस्तार ॥ महा शून्य ले आयऊ, धरम राय बटपार ॥ कूर्म उदरसे नीकस्यो, ना कोई कीन्ह बिचार ॥ मूलबीज जव पायऊ, काल भया बरियार ॥

चौपाई।

निकसी खानि बेद रस बानी ॥ चंद्र सूर और उडगन जानी ॥ सब विस्तार निकरि जब आई ॥ धरम जला निधि राखु छिपाई॥ आज्ञा पुरुष दीन पठ वाई॥ आदि भवानी अमृत लाई ॥ अष्टांगी दे

खा धरम राई॥ताते रति संयोग बनाई॥ अदिके बिंद शीव मुरारी ॥ भये जला निधि हेरिनि झारी ॥ अष्टांगी ते भौ बिस्तारा ॥ सब रचना कर कीन्ह बिचारा ॥ बिनती कूर्म पुरुषसो लाई ॥ तुम सुत शीस हमार छिनाई ॥

साखी।

वचन तुह्मारे जानेऊ, शब्द शीसके कान ॥ नीर्जला निधि सोखिके, मेटत सब उत्पान ॥

चौपाई।

छूछ उदर अब भयो हमारा॥ अहो पुरुष कछु देउ अहारा ॥ वानी पुरुष अधर ते कीन्हा ॥ चाहो कूर्म मांगि तुम लीन्हा ॥

साखी ।

ना कछु भोजन चहौ, ना कछु करौं अहार ॥ चंद सूर जब पाइहों, तब लई हौं शिर भार ॥ चंद सूर चलि आइहैं, तबमैं करौं अहार॥ चंद्र सूर पहुँचे नहीं, लीलि लेउँ संसार ॥

चौपाई ।

पुरुष वचन तब कहें पुकारी ॥ भोज न सूर प्रहर लेउ चारी॥ शसि भोजनका कहों बिवेका ॥ घरी दोयका करो विशे का ॥ अमृत छीनि छीनि तुम लेहू ॥ पा छे संपूरण करि देहू ॥ चन्द सूर धरणी पै आनी ॥ सूर तेज जिमि बहुत बखानी॥ कूर्म पुरुष वचन नहि देखा ॥ घरी प्रहर का बाँधे लेखा ॥ क्षण और पलक दण्ड परमाना ॥ घडी पहर की कहों ठिका

ना ॥ चार वर्षको एक पल होई ॥ दोय पलका छन जानो सोई ॥ चार छनका दण्ड बखाना ॥ चार दण्डका घडी पर माना ॥ चार घडी एक प्रहर बिशेषा ॥ चार प्रहरका दीन यक लेखा॥ सात वार दूने तब आना॥यहि बिधि पाख भयो प रमाना ॥ दोय पाख यक मासबखानी॥ तीन चौकरी बर्ष यक जानी ॥ आगे देखो ताकर लेखा ॥ धरमदास अब क हूँ बिबेखा ॥ निशि वासर पुनि होये ज वहीं ॥ कूरम प्रहर सूर लेहि तबहीं ॥ नि शि चंदा पुनिकीन प्रकासा ॥ बासर सू र कीन रहि बासा ॥ अमी चंदके पेट र हाई ॥ ताका लेखा सब समझाई ॥ कूर म अहार चंद्र ईमि लीना॥घडी दोय घ

टती तब कीना ॥ पाख दिना लो होय प्रकासा ॥ पूरण चंद्रमा भयो निवासा॥ ब्रत अखण्डित पूनम होई ॥ यह चौका कूरमका सोई ॥ ताते ब्रत बंश कहि दीना ॥ अंश बचाय जीवको लीना ॥ यह सुनि कूरम हर्ष मन आई ॥ पुरुष बचन सब कहि समझाई ॥ धर्मदासो बचन ॥ साहब कहा भेद मै पेखा ॥ अब भाषो पवननका लेखा॥ पवन भेद मोहि कहो समझाई ॥ बचन तुह्मार हृदय जुडाई॥ कहाँ ते यह पवन उठावा ॥ दिशा भेद मोहि कहु समुझावा॥ताहि पवनको नामसुनाई ॥तवन भेद मोहि देहु बताई ॥ सुरति सह्मारि चरनो चित देऊ॥ साहब मोहि आपन करि लेऊ ॥ सतगुरुबच

न ॥ धरमदास सुनु पवन अरु पानी ॥ कूरमके मुखसे उतपानी ॥ चारो ओर पवन उठि धावा ॥ ताका भेद कोई नहि पावा ॥ कूरम माथा मैं कहा बखानी ॥ सज्जन संत कोई कोई जानी॥ आठ माथा पृथ्वी सो भीना ॥ आठ दिशा जाके भय चीना ॥ माथा तीन छीन लैगयऊ॥ धरमराय तिहिंआसन करेऊ ॥ ताका उदर भवन बनाई ॥ सोई रूप नरकेर सुभाई ॥ अधर पवनसो जीव उतपानी॥चले अधरसो उरध समानी ॥ताहि पवनका जाने नाऊ ॥ करम काटि करै मुकताऊ ॥ तेही पवनका पारस नामा ॥ होय संयोग उठे जब कामा ॥ बाहेर होयके देई जगाई ॥ उठे बिंद जब

चले मनराई ॥ ऋतुवंती त्रिया जादिन होई ॥ स्वाती पवन पड़े पुनि सोई ॥ धरमदान तोहि कहों बिचारा ॥शून्य सो परैभेद है न्यारा ॥ स्वाती पवन छुवन नाहिंपावे ॥ बिंदु अकेलो जो उठि धावे॥ ताते शून्य होय पुनि जाई॥ कहूं भेद चित्त राखु समाई ॥ तीन तत्वबिंदु गहे जोई॥ ताते बाँझ होय पुनि सोई ॥उत्पति पवन कहा मैं सोंई ॥ स्वाती पधन ले संपुट होई ॥ तीन नाम सुन हंसा पावे॥ कहै कबीर सो लोक सिधावे ॥ चलत बिंद तीनो मुख धाई ॥ अधर नाम ले अधर चाढ़ि जाई ॥ अढ़ाई अक्षरमें संसारा ॥ अधर नाम सो लोक हमारा ॥ तीन नाम है अधर निवासा ॥ काया ते बाहर प्रकाशा ॥

साखी।

धरनि अकाशके बाहरे, योजन आठ प्रमान॥ तहाँ क्षत्र तनि राखेऊ, हंस करे विश्राम॥

साखी।

साठ कोसके ऊपरे, अकहनाम निज सार॥ तहँवाँ ध्यान लगावहीं, हंसा उतरे पार॥

चौपाई।

सतगुरु मिले तो भेद बतावे॥ नातो योनी संकट आवे॥

साखी।

अंकुर नाम वह शब्द है, कीना सकल पसार॥ कहैं कबीर धरम दाससो, सुनो वचन टकसार॥

चौपाई।

राई भर जो वस्तु हमारी॥ अर्द्ध

राई अस्थूल संभारी॥लहर लहर सो दिलमे होई॥ पुरुष मूल निज जाने सोई॥ उनको सौंप दियो शिर भारा॥ तुम जीवनका करो उबारा॥ भाष्यो शब्द पृथ्वी राई॥फूट आकाश शब्द हो जाई॥ विषम भाव जो छुटे शरीरा॥आवे लोक अस कहे कबीरा॥ तत्व प्रमान औ अधर है धामा॥ तत्व अंश और अजर है नामा॥ तीन नाम हंस उड़ाई॥ छूटत पिंड काल नहि पाई॥

साखी।

पवन भेद मैं भाखेऊ, कहा भेद टकसार॥ पंचाशी पवनके भीतरे, उनमें काल पसार॥

साखी।

पंचाशी पवनके वाहिरे, अजर शब्द

निजसार॥धरमदास परतीति करि सु मिरो नाम हमार॥

चौपाई।

सुमरो नाम और हंस उबारो॥ नाम पान और सुरति समारो॥

साखी।

दीजे अपने बंसको, करे शब्द स म्हार॥ गुप्त नाम गहि राखिके, हंस उ तारे पार॥

चौपाई।

कहुं अधर तुम सुनो ठिकाना॥ जा हि अधरमें जीव समाना॥

साखी।

एक अधर होय आवई, एक अ धर होय जाय॥ एक अधर घट आ सना, अधरहि मांहि समाय॥

साखी।

अधरकरे घट आसना, पिंडमें रोके

नीर ॥ मैं अदली कदलीवसौं, दया क्ष
मा शरीर ॥

चौपाई।

धर्मदासोवचन॥कहेउ तत्व मेरे मन
माना ॥ अब प्रभु कहिये सुरति ठिका
ना॥ कहां सुरति की उत्पति भयऊ॥ क
हां सुरति दूसर निरमयऊ॥ कैसेके घट
आनि समानी ॥ सो समरथ मोहि कहो
बखानी ॥ सुरति निरति संगम किमि भ
यऊ॥ पशु पंछी कैसे निरमयऊ ॥ सत
गुरु बचन॥ मूल नाभिते शब्द उचारा॥
फूटी नाल भयो दुई धारा॥स्वाती पवन
अधरसो आई ॥ सुरति निरति संग लागे
धाई॥ ताका भेद कोइ नाहि पाई॥ पशु पं
छिनमें रहे समाई॥ पशु पंछी मोहित हो

गयऊ॥ सुरति बांधि शब्द नहि गहेऊ॥
सोई शब्दकाकरे पसारा॥ सुरति निरति
ले करे सह्मारा॥ गहे शब्द तब लोक
सिधाई॥ बिना शब्द पशु पंछी भाई॥
बिनाशब्द जिमि घटअँधियारा॥ छिन
छिन ताका काल अहारा॥ सुरति नि
रति शब्द एक ठौरा॥ तब मुख बचन
होय कछु थोरा॥ आगम तत्व तुम म
थो शरीरा॥ निरति नाम भये सत क
बीरा॥ निरति धरे शब्दकी आसा॥ सु
रति नाम तुम हो धर्मदासा॥ सुरति
निरति सो बाँधे नेहा॥ पावे नाम हंस
की देहा॥ कथ्यो ज्ञान भाष्यो टकसारा
॥ धर्म दा[illegible] करो विचारा॥ हम तु
[illegible] नमानत

मूढ गवाँरा ॥ मथुरा वैठिके शब्द सुनाई ॥ धर्मदास गह्यो दोनों पाई ॥

साखी।

वचन हमारा जानिके, सीख शब्द दे कान ॥ लज्जा निंदा शोक कूँ, मेटत सब उतपान ॥ इती श्री ग्रंथ वडा संतोप बोध ॥ संपूर्ण ॥ ॥ ॥

॥ सत्यकबीरो जयति ॥

श्री

अथ श्रीग्रंथमुक्तिमूल ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनीन्द्र करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, पंश्री धीरजनाम, उग्र नाम, दयानाम,–

वंश बयालिसकी दया।

चौपाई।

धरमदास यक बचन उचारा ॥ मुक्तिमूलका कहो बिचारा ॥ मुक्ति मूल काहे सो कहिये ॥ सुरति लगाय तहाँ सुख लहिये ॥ सत्यगुरु होय सो पूछे कहई ॥ शिष्य होय भेद सो लहई ॥ मुक्ति मूल गति मोहि लखावो ॥ मेरा मनसंदे

ह मिटावो ॥ सत्तगुरुरुवाच ॥ सुनु धर
मदास बुद्धिके आगर ॥ तुमसे भाषूँ ज्ञा
न उजागर ॥ मुक्ति मूलकी युक्ति बता
ऊँ॥ सार असार सकल समझाऊँ॥ जो
कछु पूछो सो सब कहिहौं ॥ बिन पूछे
मौन गहिं रहिहौं॥ इच्छा होय सो पूछो
भाई ॥ तुमको सब कुछ देव बताई ॥ मु
क्ति मूलका कहूं विचारा ॥ ताका तुम
अब करो संह्मारा॥मुक्ति मूल गति काहु
न जाना॥ ताका अब मैं करूँ बखाना॥
मुक्ति मूल अक्षर है एका ॥ धर्मदास ता
का गहु टेका ॥ अक्षर सो उतरो भव
पारा ॥ सो अक्षर अक्षर ते न्यारा ॥ ता
को नहि जाने संसारा ॥ अक्षर बिना न
उत्तरे पारा ॥ अक्षर अक्षय वृक्ष फल दू

रा ॥ पावेगा कोइ साधू पूरा ॥ सो अक्षर तुम चिन्हो भाई ॥ अक्षर माँहि रहो स माई ॥ अक्षर अक्षर माहीं भेदा ॥ ता का पार न पावे बेदा ॥ सो अक्षर लखि राखो पासा ॥ मूक्ति मूल हंस करे बासा ॥ मूक्ति मूलको येही बिचारा ॥ बिन अक्षर नहि पावे पारा ॥

साखी।

अक्षर आदि अनादि है, निःअक्षर ता पार ॥ यही भेद जाने विना, डूबा सब संसार ॥

चौपाई।

धर्मदास उवाच। धर्मदास कहे सुनो गोसाईं ॥ अक्षर भेद सुनाओ साईं ॥ जो कछु पूछों और सुनावो ॥ मेरे मनका संदेह मिटावो ॥ सतगुरुहोय

शिष संशय हरई ॥ शिष्य होय सतगु
रु पग धरई ॥ मैं पूछत हूं ज्ञान विज्ञा
ना ॥ भक्तिभाव सब कहो बखाना ॥

साखी।

भक्तिज्ञान विज्ञान पद, कहो मोहि
समझाय॥ फिरि कछू आगे पूछिहौं,
दया तुह्मारी पाय॥

चौपाई।

सतुगुरुबचन॥ धर्मदास सुनो बच
न हमारा॥तुमसूं सबही कहूं बिचारा॥
प्रथम सुनो ज्ञानकी वाणी॥ सुक्षम ग
ति सकल समानी॥ सब घट माहि रहा
समाई॥ ज्ञान स्वरूप लखो नहि जाई
॥ जिन आपनि गति आपहि जाना॥
सबही माही आप समाना॥ आतम रू
प लखे सो ज्ञाना॥ जग महँ सोई साधु

सुजाना ॥ जिन काहू आप आपकूँ ची न्हा ॥ सोई ज्ञानी सब सुख लीन्हा ॥

साखी ।

ज्ञान गति अति सुक्षम, जो लखि पावे कोय ॥ मूक्ति मुल कूँ पहुँचे, संशय सूल न होय ॥

चौपाई ।

धर्मदास सुनि लेहु विज्ञाना॥तुमसूँ भाषूँ भेद निधाना ॥ ज्ञान समेटि लगावे ध्याना ॥ उनमुनि पद जहाँ ज्ञान विज्ञाना ॥ लागे सुरति सुषमनकी डोरी ॥ राखे सुरति निरति सोजोरी॥विसरे ज्ञान सकल जग केरा ॥ जगमें सुरति न फेरे हेरा ॥ जैसे बालक कूँ सुधि नाहीं ॥ ऐसे रहे जगके माहीं ॥ सोई साधु लहै विज्ञाना ॥ मुक्ति मूल जिन ऐसे जाना ॥

समै।

कह्यो ज्ञान बिज्ञान पद, अब सुनि लेहु भक्ति बिचार॥ धर्मदास निजके कहूं, लेहू सुरति सह्मार॥

चौपाई।

धर्मदास सुनो चित लाई ॥ भक्ति भाव मैं देउँ लखाई॥ भक्ति भक्ति संसार बखाने ॥ भक्ति भेद कोई बिरला जाने॥भक्ति मांहि भेद बहु भारी ॥ सबही भक्ति करे नर नारी ॥ भक्ति करे मुक्ति की सेवा ॥ भक्ति करे अरु पूजे देवा ॥ करे भक्ति मुक्ति तब होई॥सार भक्ति बूझे नहि कोई ॥ भक्ति भक्तीकी बहुत बडाई॥ कहे मुक्ति होय नहिं भाई॥बिनु समझे भक्ति सब ठानी॥ताकी मुक्ति न होई प्रानी ॥ भक्ति न होई नाचे गा

ये ॥ भक्ति न होई ध्यान लगाये ॥ भक्ति न होय पाथर पूजा ॥ एक छांडि भ जत ये दूजा ॥ भक्ति न होई नाचे कूदे ॥ भक्ति न होइ आँखी मूँदे ॥ राटारंभ करे संसारा॥ भक्ति भेद सबहीते न्यारा ॥ भक्ति नहोई बिनु आतम ची न्हे ॥ भक्ति नहोई टोपी दीन्हे ॥ केतेक भक्ति करे बिनु जाने ॥ भक्ति हेतु बहु स्वांग बखाने ॥ भक्ति न होई माला डारे ॥ भक्ति न होई तिलक सवाँरे ॥ भक्ति न होई पोथी पाठा ॥ मन कठोर जैसे सूखी काठा ॥ भक्ति न होईसा खी सीखा ॥ भक्ति न होई देखी देखा ॥ भक्ति होई नहि तूरेताना ॥ भक्ति होय नहि गाये ज्ञाना ॥ कथनी कथे भक्ति

जो होई ॥ ऐसी भक्ति करै सबकोई ॥ साधे बिना साधु नाहि होई ॥ केतो ज्ञान कथे जो कोई ॥ भक्ति करे जो शिरको देवे ॥ शिरके साँटे जो कोई लेवे ॥

साखी।

भक्ति भेद समझाइके, कहौं मुक्तिको मूल ॥भक्ति भाव तब जानिये, होय न संशय शूल॥

चौपाई।

सुनो धर्मदास भक्ति पद ऊंचा ॥ तहां कोई संत बिरले पहुँचा ॥ दया गरीबी होय अधीना ॥ प्रेम भाव सुसाधु चीना ॥साधु संत सेवे दिन राती॥ परसे नाहीं जाति अजाती ॥ प्रीति सहित सुरति लौ लावे ॥ साधु मिले तो साधु कहावे॥मन निरमल करि साधु हिं सेवै ॥

भक्ति पदारथ सो जन लेवै॥ भक्त होना दुर्लभ है भाई ॥ शिर सांटे कोई लेइ ब नाई॥भक्ति मूक्ति मूलहै सारा॥तन मन धन भक्ति पर वारा ॥

समै ।

भक्ति भाव तोसूँ कह्यो, सुनु धर्म दास सुजान ॥ ऐसी भक्ती जो करै, पावै पद निरबान ॥

चौपाई ।

धर्मदासोवाच ॥ ज्ञान विज्ञान भक्ति पद भापा ॥ सो मैं अपनो चित गहि राखा ॥ मेरे मन है यह अबिलाषा ॥ ताकी मोहि बतावो साखा॥ योग वैराग कौन सो कहिये॥इनकी युक्ति कौन वि धि लहिये॥कौन वस्तु कहिये वैरागा॥ कौन वस्तुको कीजे त्यागा ॥ काहेसो

कहिये वैरागी ॥ काहे सो कहिये वड भागी ॥ सतगुरु होय सो पूछे कहै ॥ शिष्य होय भेद सो लहै ॥

सोरठा।

योग युक्ति वैराग पद, बीतराग की युक्ति ॥ कहो मोहि समझायके। होय मोर निज मुक्ति ॥

चौपाई।

सद्गुरुरुवाच ॥ सुनु धर्मदास कहूँ तोहि युक्ती ॥ जासो होय महा निज मुक्ती ॥ प्रथम योगका सुनों संदेसा ॥ तासे मीटि जाय सकल क्लेशा ॥ मुद्रापांचो अवस्था चारी ॥ चंद सूर घर करे सह्मारी ॥ आसन असीचार तुम जानो ॥ योग युक्ति याहि बिधि पहिचानो ॥ भिन्न भिन्न ताका करूं बखाना॥चक्र चक्र

होय करे पयाना ॥ चक्र चक्र से बांधे ता
रा ॥ इस विधि योगी योग बिचारा ॥ प्र
थमे मूल चक्र है भाई ॥ तहांदेव गणे
श रहाई ॥ पवन अपान की तहाँ बासा
॥ सुरति लगाई देख तमाशा ॥ दूसर च
क्र ता ऊपर होई ॥ इंद्री नाल तहँ पवन
समोई॥रजोगुण पवन बसे तेही जागा॥
मूल इंद्री का जोरे धागा ॥ तीसर चक्र
ता ऊपर होई ॥ पवनचालता तहाँ स
मोई ॥ तीनों चक्र मिलावे तारा ॥ चक्र
चक्र देखो उजियारा ॥चौथा चक्र जा
य समाना ॥ लागे तार प्रगट होय ज्ञा
ना ॥ पांचवाँ चक्र बायु उदाना ॥ कंठ
द्वार देखो करि ज्ञाना ॥ छठा चक्र त्रिकु
टीके तीरा॥ तहवाँ सुगंध पवन बसेरा॥

सातवाँ चक्र बसे असमाना ॥ इस विधि योगी लावे ध्याना ॥ पांच चक्रका तार लगावे ॥ मेरु दण्ड छेदि घर आवे ॥ खोले गाँठि पवनसो छेदे ॥ तबहीं योगी योगकूँ भेदे ॥ मकरतार होय त्रिकुटी आवै ॥ वहाँ बैठिके ध्यान लगावे ॥ देखै ऊपरका उजियारा ॥ योगी मगन रहे मतवारा ॥ काया चक्र भेद मैं भाखा ॥ अब सुनु अगम लखाऊँ शाखा ॥

साखी ।

चक्र सात और आठ लगि, यहि योगीका दौर ॥ धरमदास जनि भूलियो, वस्तू औरही ठौर ॥

चौपाई ।

सुनो धर्मदास तुम ज्ञानी ॥ मुद्रा पांच अब कहूँ बखानी ॥ चाचरी भूचरी

खेचरी साधे॥ अगोचरी उनमुनी अरा
धे ॥इनकी क्रिया तोहि सुनाऊँ॥ठौरठौ
र की युगति लखाऊँ॥ चाचरी मुद्रा नेत्र
के माहीं ॥ ज्योति झग मग बसे तेहि
ठाँई॥सुरति लगाय ध्यान तहँ करिये॥
ज्योति देखिके तारीधरिये॥पहिले दर्प
न मांजो भाई॥ बिनु मांजे दर्शन नाहि
पाई॥यहि बिधि चाचरि साधन करई॥
बाहर ध्यान अगरको धरई॥ नासिका
अग्र ज्योति ठहरावै ॥ सकल ज्योति
बाहेर लै लावे॥तब अपना मुख आपहिं
देखै॥यहि विधि योगी योग बिवेखे॥अ
ब दूजी मुद्राको करई ॥ त्रिकुटी बीच
ध्यान तहँ धरई॥सकल ज्योति त्रिकुटी
केमाहीं॥बिन्दु प्रकाश बसेतेहि ठाहीं॥

नेत्र चक्र ऊपर कूँ ताने ॥ यहि विधि ज्योति एक करि जाने ॥यहि विधि ध्यान धरे सो योगी ॥ मदन रूप त्रिकुटी संयोगी ॥ज्योतिहिंसे जागत है कामा॥ वश करि राखे अपने धामा ॥ सोई बिंदु बंदकरि राखे ॥ यहि विधि योगी अमृत चाखे ॥ अब सुनु मुद्रा तीजी भाई ॥ कला खेचरी काहु न पाई॥इनका साधन करे जो कोई ॥ निश्चय करी सिद्ध सो होई ॥ प्रथम साधन इस विधि करना ॥ मनकूँ दशवें द्वारमें धरना ॥ वहाँ लगाये राखि मन धोवै॥ द्वारासो उज्वल तव होवे ॥ उज्वल करे अंगूठा फेरे ॥ वज्र शिला जायके घेरे ॥ पाछे जिह्वा नित्त बढ़ावै ॥ जड़ काटे और उर्ध चढ़ावैं ॥

तासुको देखिलेइ विस्तारा ॥ तव ले रा
खे वाही द्वारा ॥ नित्यनेम धोवे घृत से
ती ॥ शीतल जल और मिरच समेती॥
खेचरी साधे तब सिधि होई॥दशवें द्वार कूँ
पावे सोई ॥मुद्रा तीन किये अनुसारा ॥
अब चौथीको सुनो विस्तारा।मुद्रा अगम
अगोचरी भाई ॥ सो तो रहे श्रवनके ठा
ई ॥ ताला लागिरहे जेहि जागा ॥ बिन
कूँची नहि लागे धागा ॥ कूची पावे खु
ले जब द्वारा ॥ त्रिकुटी माँहि लगावे ता
रा ॥ देखो अगम ज्योति उजियारा ॥
अगोचरी मुद्रा यही बिचारा ॥ उनमु
नी ओंकार झनकारा ॥ अना हत
वाजे अगम अपारा ॥ योगी मगन रहे
मन माई॥ मन और सुरति गर्क हो जा

ई ॥ करम योगको यही बिचारा॥योगी सिद्ध रहे संसारा ॥ अजपा जपे योग होय पूरा ॥ सोहं सोहं स्वास हजूरा ॥ यहि सुकृत सूँ साधो योगी ॥ चंद सूर स्वर रहे रस भोगी॥दिवसे चंदा रात्रीको सूरा॥यहि जाने सो योगी पूरा ॥ यहि साधन नित्यंप्रति करई ॥ योगी ध्यान त्रिकुटी में धरई ॥स्वाँसा चले त्रिकुटि के ताईं ॥ आगे काहूको गम नाईं ॥ धरम दास योग यह पूरा ॥ अनाहत बाजे त्रिकुटी तूरा ॥ कर्म योगका यही बिचारा ॥ काया राखे रहे संसारा ॥ नेती धोती नौली करमा॥इन बातन छूटे नहि भरमा॥

समै।

मुद्रा साधन योग गति, साधे तो

सिध होय॥काया अगम अगाधि गति, लखि नहि पावे कोय॥

समै।

कर्म योग जेहि बिधि करे, सो मैं कहा बिचार ॥ अब तुमसे मैं कहत हूँ, ज्ञान अवस्था चार॥

चौपाई।

धर्मदास सुनो ज्ञान बिचारा॥चारिअवस्था का निरवारा ॥ प्रथम जाग्रत सकल पसारा॥यही अवस्था है संसारा॥दूजी सुपन अवस्था भाई ॥ सोमैं तोको देउँ लखाई ॥ चित् चंचल सुपनाके राजा ॥ केतेउ कहत साज समाजा ॥ जाग्रत कूँ सपना करि जाना ॥ सो ज्ञानी निज ज्ञान समाना ॥ जाग्रत सुपन एक करि देखा ॥ सोज्ञानी है संत्त विवेखा ॥ अब

सुनि लेहु सुषुप्ती तीजी ॥ काया सकल समापति सीजी ॥ जड अवस्था काया माहीं ॥ ज्ञानी वासकरे ता ठाहीं ॥ सुषुप्ति माहिं दुखी नहि होई ॥ जाग्रत सुपन्न तहाँ नहि कोई ॥ चौथी तुरिया तत्व बखानूँ ॥ चारि अवस्था यही विधि जानूँ ॥ तुरिया ध्यान उनमुनि लागा॥चार पांच नव जोरे धागा ॥ नौ नारी करे एक सूता॥योगी ज्ञानी सोई अवधूता॥ नौ और नौ अठारह होई ॥ एक सूतमें राखे पोई ॥ योग ज्ञानका कहूं विचारा ॥ धरमदास कछु वार न पारा ॥ यहि विधि बूझि बूझि सब थाका॥अगम महल कोई नहिं ताका ॥

समै।

अगम महल की अगम गति, तहाँ

सत्त अस्थान॥ तहाँ काहुकी गम्य नही, कहाँ ज्ञान कहाँ ध्यान॥

चौपाई।

धरमदास तुम बडे सुभागा॥ अब सुनु बीत राग वैरागा॥ करत सबै वैराग बडाई॥ जो वैराग सो काहु न पाई॥ कहत सब हम हैं वैरागी॥ एको वस्तु न तनसे त्यागी॥ महा कठिन कहिये वैरागी॥ पूरन पद जहाँ सुरति न लागी॥ वहाँ नाम निरंजन भाई॥ स्वाँसा सुषुमना रहे समाई॥ शीतल दशा तेज तन नाहीं॥ सुरति निरति समता घर माहीं॥ अजपा ध्यान रहे मन लागी॥ निज मन मिले होय वैरागी॥ ज्ञान योगके लछन बतीसा॥ सब साधे कोई करे न खीसा॥

ताको नाम होय बैरागी।सुरति योग उन मुनि लागी॥ वैराग्य है नही आसाना॥ कोइ एक बिरले साधु जाना॥धरमदास यह दुरलभ ज्ञाना॥ जामे होय सोही परमाना॥ कहन सुननको है वैरागा॥ यह मन सत्तनाम नहि लागा॥

समै।

सत्त नामकी टेक धरी, जपे अजपा जाप॥ सो साँचा बैराग है, लखे आप को आप॥

चौपाई।

सोई वैराग राग नहि लेखा॥बीत राग ताकूं हम देखा॥राग द्वेष हिरदय नहिं आने॥ सो बीत राग मेरे मन माने॥ सब घट समता शीतल होई॥ बीत राग तुम जानो सोई॥ सुख दुख कूँ समता

करि जाने ॥ सब विधि त्यागे सत्त बखा ने॥बीत राग वैराग बखाना ॥पूछो और सुनाऊँ ज्ञाना ॥

समै।

कह्यो योग वैराग पद, वीतराग सुख सार ॥ जो पूछो सो फिर कहूँ, लेखा अगम अपार ॥

चौपाई।

धर्मदासो वचन ॥ अहो साहेब यह युगति बखान्यो॥सो मेरे मन सबही मा न्यो ॥ अब कछु और सुनाओ ज्ञाना ॥ जो पुछूँ सो करो बखाना ॥ येती विधि योगेश्वर पाई॥आगम ज्ञान कछु करो ल खाई ॥तत्व तत्व सब ठाठ उठावा॥ त्री गुनसूँ बंधा बंधावा॥सो सब मोहि कहो समझाई ॥ कैसे उपजे कहाँ समाई ॥

समै।

तत्व गुनन सो सब भयो, जहाँ लगि यह विस्तार॥ कहो मोहि समझाइ के, को मिश्रितको न्यार॥

चौपाई।

सतगुरुवचन॥ सुनो धरमदास यह जुगती॥ कहूं सार मूल निज मुकती॥तत्व आठ तामें त्रिय सारा॥ताको कोइ न पावे पारा॥ताकूं नाहि जाने संसारा॥ विन पाये होय नाहि न्यारा॥ प्रथम तत्व सत्तसो आया॥ शब्द निरति तासो निरमाया॥ शब्द रूप महा तत्व अकाशा॥ दूसर शब्द कीन्ह प्रकाशा॥ तीसर शून्य तत्व भयो भारी॥ महा शक्ति कीन्हा उजियारी॥ शून्य तत्व भयो ओंकारा॥ चौथा तत्व भया विस्तारा॥ पांच

वाँ तत्व पवन प्रचंडा ॥ ताको तेज स
कल ब्रम्हण्डा॥ वाहि तेजसो तेज निका
रा ॥ सकल रूप कीन्हा उजियारा ॥
सातवाँ जल तत्व उपजाया ॥ सत्य बी
ज सो जलहि समाया ॥ जलते जमीन
तत्त्व भयो भाई॥ आठवाँ तत्वकी करी
लखाई ॥ यही आठका सब विस्तारा ॥
गुप्त प्रगट सो भया पसारा ॥ इन आठ
नसो है जो न्यारा ॥ सोई गुरु है अगम
अपारा ॥ ताको कोइ नहि जानन हारा॥
धरमदास तुम करो बिचारा॥जीवत मरे
सोई निज पावे ॥ बिना मरे वह हाथ
न आवे ॥ याही ते मेरो घर न्यारा ॥ ता
हि ते नहिं माने संसारा ॥

समै।

आठ तत्वसूँ सब निर्माया, तीन

गुप्त तत्व जान ॥ पांच तत्व परगट अहै सबही करे बखान॥

चौपाई।

तीन गुण कहिये ओंकारा ॥ ओं कारहिं ते भया पसारा ॥ रजगुन तम गुन सत्वगुन भाई ॥ तीन गुनन से सृष्टि उपाई ॥ तीनगुन कहावतहै जोई॥ब्रम्हा विष्णु महादेव सोई॥ तीनगुन की त्रि विधि काया ॥ त्रिविधि काया त्रिविधि माया ॥ देवे जनम मानुष अवतारा ॥ तीनगुन सब रूप सवाँरा ॥

सखै।

तीन गुन और ओंकारा है, ओंकार त्री स्वरूप ॥ तासे सब जग ऊपजा, राव रंक अरु भूप ॥

चौपाई।

धर्मदास पूछत है युगती ॥ सत्तगुरु कह्यो मूल निज मुक्ती ॥ सो सब अपने मनमे जाना ॥ अब कछु और सुनाओ ज्ञाना ॥ षट दर्शन की पूछौं बाता ॥ सो मोहि कहिय सतगुरु दाता ॥ कहो कौन दर्शन संसारा॥ ताका सब मोहि कहो विचारा ॥

साखी।

षट दर्शन की महिमा, मोहि कहो समझाय॥ अपनी अपनी सबकहैं, बातें बहुत बनाय ॥

सतगुरु बचन।

सुनो धर्मदास आदिका दर्शन ॥ ताको सुनि होय मन परसन ॥ पानी पवन ज़मीं अकाशा ॥ चन्द्र सूर घट किया

प्रकाशा ॥ यहि षट दर्शन घट मों कहि
ये ॥ भेदी होय भेद सो लहिये ॥ यही द
र्शन आदि कहावे ॥ भेदी होय भेद सो
पावे ॥ विरले साधु भेद को पावे ॥ घट
भीतर की युक्ति लखावे ॥ बाहर का द
र्शन सुनि लेहू॥ समझि बूझि तजहु सं
देहू ॥ ब्राह्मण योगी जैनी यंगम ॥
तीरथ मेला होय सब संगम ॥ से
वड़ा और संन्यासी कहिये ॥ दुर्वेश
दरशन षट लहिये॥ इन दरर्शनको है अ
भिमाना ॥ विनु सतगुरु नाहि पावे ज्ञा
ना ॥इनकी मुक्ति होय नाहि भाई ॥ बू
ड़े हैं सब मान बड़ाई ॥ अपनी अपनी
सबहीं गावैं ॥ इन बातन सत्य भेद नाहिं
पावैं ॥ साधु मिले तो साधू होई ॥ नाहि

तो दरशन जाय बिगोई॥ धरमदास समुझिके रहना॥ भली बुरी काहू नहिं कहना॥

समै।

षट दर्शन की सब कही, मुक्ति भेद नहि चीन्ह ॥ अपने अपने मनमे, होय रहे लौलीन॥

चौपाई।

धर्मदासबचन ॥ धर्मदास बिन्ती अनुसारा॥ मुक्ति मूल का कहो बिचारा॥ यहसब भेद दिया निवारी ॥ मुक्तिमूल काकहो बिचारी॥ कहो पुरुष गति प्रभु मोंहीं॥ प्रेम प्रीति से सेऊँ तोही ॥कहिये हंस और परम हंसा॥पाऊं भेद मिटे सब संसा ॥ सुख सागर मुक्ति गतिमूला॥ ताहि मिले जाय सब सूला ॥ सतगुरु होय

सो पुछे कहै ॥ शिष्य होय भेद सो लहै॥

समै।

जो जो पुछों सो कहो, तुम सत गुरु हो मोर॥ सोई युक्ति बताइये,॥ लागे प्रेमकी डोर॥

चौपाई।

धरमदास तुम सत्य सुजाना॥सकल भेद मैं कहब बखाना॥ तुमही हंस औ र परम हंसा॥ उतपन भये पुरुषके अं सा॥ पुरुष अगम अपार अपारा ॥यही भेद तुम सुनो निनारा ॥पुरुष पारस अ गम घर माहीं॥आपे आप दूसरा नाहीं॥ ताकी गति काहू नहि जानी॥ सोईस न्धि हम तुम पै आनी ॥ तुमसे खोलि कहूंगा युगती॥ तासो होय मूल निज मुकती॥पुरुष अरश अधर पर अहई॥ता

का भेद न कोऊ लहई ॥ महा सुक्षम गति है जाकी॥कैसे डोर गहे कोइ ताकी ॥ मन गति सुरति निरति नहि जाई॥कैसे बीधि कोई तहाँ रहाई ॥ अमृत अमिको कूप यक सारा ॥संपुट खुली भयो उजियारा॥ता माहीं तार तत्वसारा॥ ताको कोई न पावैपारा॥ तासे उपजा अक्षर एका॥ता अक्षरका करो विवेका॥सो आक्षर अक्षरते न्यारा ॥ ताको नाहिं जाने संसारा॥सोई है मुकतीकी मूला ॥ ताको लखो मिटै सब शूला॥ अक्षरमें है एक तारा॥अमी अक्षरमें रुप सवाँरा॥ सोई तार निरक्षर भाई ॥ बीनु सतगुरु कोई नहि पाई ॥ जाको सतगुरु होय सहाई॥ सो यही पदको पावे भाई॥ तासो

उपजे हैं परमहंसा ॥ ताको अंश भया एक हंसा ॥ वहां से फैलगया फैलावा ॥ आप आपकूँ काहु न पावा ॥ पुरुष नाम पावे जो हंसा ॥ मुक्ति मूल का नहिं कछु संसा ॥ यही भेद आहि निजसारा ॥ का पूछो अब बहुत विस्तारा ॥

साखी।

यही भेद निज सार है, समझि लखो धर्मदास ॥ कहे कबीर यह मूल है, सुरति निरति ता पास ॥ इतिश्रीग्रंथ मुक्तिमूलसंपूर्णम् ॥

॥ सत्य कबीरो जयति ॥

न्यासी ॥ गृह माया तजि भये उदासी॥ प्रेम ज्योति सबहिन ठहरावा ॥ दूर ध्यान सबहीं लौ लावा ॥ अजपा जाप जपे सब ज्ञानी॥सत सरूप न काहू जानी ॥ वेद गरवते पंडित भूला ॥ कला हिंडोले अधो मुख झूला ॥ सत सरूप उनहू नहिं जाना॥धोखे यमके हाथ विकाना॥ संशय काल कठिन रे भाई ॥ संशय करि करि गये नसाई ॥ कहा हमार किनहू नहिं माना ॥ धरि धरि पाखंड भये दिवाना॥ कहे कबीर सुनु गोरख योगी॥ कर्ता चीन्हो सब रस भोगी ॥ जोग किया पर युगति न जानो ॥ यम राजाके हाथ बिकानो ॥

सखी।

प्रगट ब्रह्म घटमें बसे, ताको मरम

श्री

अथ श्रीग्रंथगोरखगुष्टि॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

बंश बयालीसकी दया।

अथ ग्रन्थ गोरख गुष्टि प्रारम्भः॥

चौपाई।

सतगुरुवचन॥ सुभ बचन सुरस कहे बानी॥तत्व चिन्हावे सो गुरु ज्ञानी॥ सत्त सत्त सबन गोहरावा॥ सत स्वरूप कोउ विरले पावा॥ योगी यती तपी सं

न्यासी ॥ गृह माया तजि भये उदासी॥ प्रेम ज्योति सबहिन ठहरावा ॥ दूर ध्या न सबहीं लौ लावा ॥ अजपा जाप जपे सब ज्ञानी॥सत सरूप न काहू जानी ॥ वेद गरवते पंडित भूला ॥ कला हिंडो ले अधो मुख झूला ॥ सत सरूप उनहू नहिं जाना॥धोखे यमकेहाथविकाना॥ संशय काल कठिन रे भाई ॥ संशय करि करि गये नसाई ॥ कहा हमार कि नहू नहिं माना ॥ धरि धरि पाखंड भये दिवाना॥ कहे कबीर सुनु गोरख योगी॥ कर्ता चीन्हो सब रस भोगी ॥ जोग कि या पर युगति न जानो ॥ यम राजाके हाथ बिकानो ॥

समै।

प्रगट ब्रह्म घटमें बसे, ताको मरम

नहि जान ॥ सुर नर मुनि सब जग, झूठे भरम भुलान ॥

चौपाई।

गोरखउवाच ॥ गोरख कहे सुनो हो स्वामी ॥ पार ब्रह्म है अंतरयामी ॥ योग विना सो हाथ न आवे ॥ माया सापिनि सब भरमावे ॥ कनक कामिनी यमकी फाँसी ॥ इनके संग परे चौरासी ॥ पाँच तत्व प्रकृति पचीसा ॥ इनको जीत रहे सुख ईसा ॥ साँपिनिकाया सकल सवाँरा ॥ काम क्रोध बस होय संसारा ॥ जौ लगि मन मायामें फूला ॥ तौ लगि मिलै न सुखके मूला ॥

समै।

तेतीसो तन सोधिके, निष्कंटक करे राज ॥ इनमें कोइ मुंड उठवे, तो सिधि होय न काज ॥

चौपाई।

कबीरउवाच॥ सुनु हो गोरख योगी सिद्धा॥तुम कबहू न तज धोखा धंधा॥ इन्द्री जीति कहा तुम जैहो॥ कौन ठौर जहँ जाय समैहो॥ को हैं सकल दृष्टि को स्वामी॥ कहाँ बसे सो अंतर जामी॥ कनक कामिनी किन निमाँई॥ बिन संभोग कहाँते आई॥ पार ब्रह्म कहाँते होजाई॥ उनके इंद्री है के नाही॥ मनमथ कर्म कहाँते आया॥पांचो तत्व कौने निर्माया॥ कहाँते है प्रकृति पचीसा॥ गुन तीनों कौने परदीसा॥

समै।

यह रचना है कौन की, स्त्री पुरुष संभोग॥ फूल फले सो कौन है, कौन करे रस भोग॥

साखी।

एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ॥ उलटी सींचे मूलकूँ, फूले फले अघाय ॥

चौपाई।

गोरख उवाच ॥ सुनो कबीर परम गुरु ज्ञानी ॥ निर्गुनकी गति विरले जानी ॥ निर्गुन परम ज्योति उजियारा ॥ कर्ता सदा कर्मसे न्यारा ॥ उनके रूप न उन के रेखा॥ निराकार हरि आप अलेखा॥ अविगति नाथ निरंजन देवा ॥ उनका खेल अजब है भेवा ॥ अगम अथाह अखंडित रूपा ॥ परम पुरुष है ज्योति स्वरूपा॥ उनके पिंड न उनके प्राना ॥ उनके नेत्र न उनके काना ॥ उनके त त्व न उनके माया ॥ उनके धरम न उन

के दाया ॥ वहाँ न बेद वहाँ नहि बानी॥ वहाँ नहिं पवन वहाँ नहिं पानी ॥ वहाँ न धर्ती अगिन अकाशा ॥ पांच तत्व स भिन्न प्रकाशा ॥ भवन चतुर्दश ते है न्या रा॥ ज्योति स्वरूप सदा उजियारा ॥ व हाँ न ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ वहाँ न शा रदा गौरि गनेशा॥वहाँ नहिं गंगा जमुना संगम ॥ वहाँ न योगी वहाँ न जंगम ॥ वहाँ न शेख सेवरा संन्यासी ॥ षटदरश न सिद्ध नहिं चौरासी ॥

सर्मे।

वाके हुकुम चलै सब, वह है सबसे भि न्न ॥ वाकी आशा सब करे, वह काहू न आधीन ॥

चौपाई।

कबीरउवाच॥जहाँ अगम तहाँ का ग

म लहिये ॥ सोई अथाह जहाँ थाह न प
इये॥जिनके पिंड न जिनके माना॥सो
कर्ता कैसे पहिचाना ॥ जिनके नयन
न जिनके काना॥बिना नजर कैसे सच
माना ॥ मुख बिनु बचन उचारे कैसे ॥
समझिके कहो निशा होय जैसे॥श्रवण
बिनु बचन का गहिये ॥ कहे सुने बिनु
का सुख लहिये ॥ जिनके धर्म्म न जिन
के दाया ॥ बिना दया बेपीर कहाया ॥
कासो कहिये गुनके कर्मा ॥ दया धरम
बिन सकल अधर्मा ॥ जहां नाहिं बेद ज
हाँ नहिं बानी ॥ कैसी लखी ताहि सहि
दानी ॥ जहाँ न पानी जहाँ न पवना ॥
बिना तत्व कैसे कारि रचना॥जहाँ न धर
ती अगिन अकासा ॥ वहि कर्ताकी कौन

निवासा॥पांच तत्व जहाँ नहिं भाई॥पर घट तहाँ कौन ठकुराई ॥ शून्य विन से तव आप नशाई ॥ देखा योगी ज्ञान निकाई॥तुम निर्गुन यहि सबै बतावा ॥ गुन तीन ये कहाँ ते आवा ॥ तुमतो ज्योति स्वरूप विचारा ॥ तत्व बिना को करे उजारा ॥ तुम कर्ता कहो सबसे न्यारा ॥ कहाँसे भया काम अनुसारा ॥ रूप रेख बिनु तुम ठहरावा ॥ रूप बिना कैसे नजर वह आवा ॥ तुम अविगति नाथ निरंजन कहिया॥गति अंजन कहो कैसे लहिया ॥ सबते दूर अलग जो रहिया ॥ तुम उनकी गति कैसे लहिया ॥ देखा गोरख योग तुह्मारा ॥ धोखे नाथ जाओ यमद्वारा ॥ जाकी गति ब्रह्मा न

हिं पाई ॥ शीव समाधि रहे उरझाई ॥ विष्णु जाका अंत न पावे ॥ अलख निरंजन नहि लखिपावे ॥ हरि हर ब्रह्मा गम नहि पाई ॥ सिद्ध साधुकी कौन चलाई॥ योगी योग गर्वते करई ॥ धोखे पाप नर कर्मे परई ॥

समै।

जिहि पैडे पडिंत गये, ताहि गई बहीर ॥ ऊँची घाँटी नामकी, जहाँ चढ़ि रहै कवीर ॥

चौपाई।

जहाँ न ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ तहाँ न शारदा गौरि गनेशा ॥ इनकी आदि कहाँ ते आई॥ काके सुत हैं तीनो भाई॥ शारद गौरि गनेश किमि भयऊ ॥ बिना काम बीज किमि निर्मयऊ ॥ कहाँते

गंगा जमुना संगम ॥ कहाँते आयो योगी जंगम ॥ कहाँतें सिद्ध सेवरा संन्यासी ॥ विनु समझे परे कालकी फाँसी ॥ षट दर्शन कौने मत ठयऊ ॥ घर चीन्हे बिनु मम घर गयऊ ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्धा॥का गहि बिनु समझे बिनु अंधा॥

समै।

कौने हुकम चलावा, कहत हौ कर्म ते भिन्न ॥ कर्ता तोहि हजूर है, मोहि नकाहू चीन्ह ॥ धोखे गोरख तुम भये, मुद्रा पहिरे कान॥ कहाँ मिलोगे अलखसो, जब पिंड तजोगे प्रान ॥ बीज अंकुर जहाँ नहीं, नहीं तत्व संभोग ॥ तहाँ जाय कह लेउगे,छोडो झूठा योग॥ अपना बचन आपे लखो, कहत हो पिंड न प्रान ॥ रुप रेख जाके नहीं, कहाँ

तजोगे जान ॥ घटमें बोलता ब्रह्म है, ताको मरम न जान ॥ कर्ता आपे सोइ है, दूर कथे नर ज्ञान ॥

चौपाई।

गोरखउवाच॥सुनिके गोरख चकित भयऊ॥धन्य कबीरजी भल मत ठयऊ। गोरख कहे सुनो गुरु ज्ञानी ॥ बडे बडे सिद्धन योग बखानी ॥ बडे बडे ऋषि मुनि भयऊ ॥ योग ध्यान सब मिलि कहेऊ ॥ निसि दिन बेद बिमल पद गावे ॥ हरि निरगुन सुमति गोहरावे ॥ शीव समान शून्य लौ लावे ॥ अलख पुरुषका दरशन पावे ॥ अवघड़ नाथ महा मुनि योगी ॥ भस्म किया जिन काम बियोगी ॥

समै।

आदि नाथको नाथ मछिंदर, उनको मैं पूत ॥ गोरख मेरो नाम है, मारग है अवधूत ॥

चौपाई।

सुषमनि सापिनि मैं बस कीना ॥ बंकनाल गहि मारग लीना ॥ सहस्र पाँखुरी कमल अनूपा ॥ बसे निरंजन ज्योति सरूपा ॥ यही ध्यान युग युग चलि आवा ॥ तुम यह कौने मती उठावा ॥

समै

काम लोभ दुनियां पडा, योग मता है सार ॥ मैं जागूँ याजगतसो, सोवे नाम हमार ॥

चौपाई।

कबीरौउवाच ॥ सुनु योगी तैं मुक्ति न जानी ॥ झूठी आशा सो मन मानी॥ इ

न बातन बनवे की नाहीं ॥ धोके पडे भ
य लागत माँही ॥ कहो तो भोग कहाँते
आवा ॥ कौन योग ध्यान निर्मावा ॥
रा अक्षर कहाँ ते आवा ॥ मा अक्षर
तहँ कौन मिलावा ॥ छोडो हाट सुनो
कहा हमारा ॥ योगी यती गये यम
द्वारा ॥ शंकर ध्यान थाह नहि पाई ॥
खोजत ब्रह्मा जनम गवाँई ॥ अनेक प्र
कार करे नट बाजी ॥ साच लखे विनु
राज विराजी॥अवधू समझ राखु मन
घेरा ॥भरम भरम कहाँ भटकेरा॥ ज्यो
तिमें तरुवर पेड पुराना॥ ताहिमें गि
रिवर सुमेरु समाना॥ ताहिमें रविशसि
ताहिमें तारा ॥ ताहिमें सात समुद्र
मँझारा ॥ताहिमें देवता ताहिमें देवा॥

बोलन हारा ताहिमें सेवा॥सत्त कर पात्र क्षमा कर झोरी ॥ शील आसन करि दृढ मति मोरी॥रीद्धि सिद्धि के कारन धावो॥पूजो भैरव भूत मनावो॥ इस विधि मुक्ति होय नाहिभाई॥जौ लगि कर्ता नही लखिपाई ॥ कहें कबीर याकूं यम जाने ॥ दूसर कोइ नहीं मन माने ॥

समै ।

अब नहिं भूलो गोरखा,मानो वचन हमार॥ यम बंधन धोखा तजो, तब भल होय तुह्मार ॥

चौपाई ।

गोरखोवाच॥ अब तुम मोहि भली बतावा ॥ तुम यह ज्ञान कहाँते लावा॥ अष्टांगी योग और पांचो मुद्रा ॥ यह गुरु मोहि दीन मछिंद्रा॥ अब तुह्मारा

मता सत करि माना ॥ मैं अवधूत(गोरख)सब जग जाना॥निश्चल पदको मोहि लखावो ॥ मम कर्ता मोहि चिन्हावो ॥ परम ज्योति कहतें हैं ताही ॥ सो साँची पुनि है कि नाही ॥ शिव शुकदेव कौन कूं ध्यावे ॥ बेद अस्तुति कौनकी गावे ॥ अनंत कला कहत है काकी ॥ मोहि बतावो रचना व्हाँकी ॥ अब यह वात मोहि जो लागी ॥ दूसरे दौड़ मीले तुम आगी ॥

समै ।

सो निज बात बतावो, अब तुम होइ दयाल ॥ अस्थिर पद कस पाइये, जहँ नहि काल जंजाल ॥

चौपाई ।

सतगुरु कबीरोवाच ॥ कहे कबीर सु

नु गोरख योगी ॥ कर्ता चीन्हो सब रस भोगी ॥ जहां तत्व तहँ बीज अँकूरा ॥ त्रिगुण सहित है सोइ हजूरा॥पूरन ब्रह्म सकल घट माहीं ॥ बोलनहारा ते दूसर नाहीं ॥ एक अनेक आप हो आवे ॥ ए को चिन्ह कोइ बिरला पावे॥ब्रह्मा चारो वेद प्रकाशा॥ उनहू रोपी दूसर आशा ॥ कर्ता कहिये विष्णु स्थाना ॥ दूसर धोखा उनहू माना ॥ आप आपने सवन सम्हाँरा ॥ उनहूं दूसर भोग पसारा ॥ सुर नर मुनि गन गंधर्व देवा ॥ दूसर सव क र ठाने भेवा॥दूसर धोखा सवन कूँमारे ॥ अध्यातम ज्ञान कोइ विरला धारे ॥ किनहू तीरथ वरत ठहरावा ॥ कोई भोग ध्यान मन लावा ॥

समै।

गोरख आप सह्वारहू, लखो आपमें आप॥ अस्थिर होहुगे आपमें, तजो दूसरा पाप॥ दूसर आसा छाडिके, अविचल राखु शरीर॥ अनंत कला है आपमें, सोहं सत्त कबीर॥ सुनि गोरख सच मानिया, हरषि गहे परतीति॥ अविचल सत्त कबीरहै, जानि परी सब रीति॥ नौ नाथ सिद्ध चौराशी, इनको अनाहत ज्ञान॥ अस्थिर घर कबीरका, यह बिरले पहिचान॥ टोपी कोपीन कूबरी, झोरीझंडा साथ॥ दया करी कबीरने, चढ़ाई गोरख नाथ॥

इतिश्रीग्रंथकबीरगोरखसंवादसंपूर्णम्॥

॥ सत्यकबीरो जयति॥

श्री

अथ श्रीग्रंथभेदसार ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

अथ ग्रन्थ भेदसार प्रारम्भः ॥

सोरठा।

सतगुरुवचन ॥ सत नाम है सार, बुझो संत विवेक करि॥ उतरो भवजल पार, सतगुरु के उपदेशते ॥ सतगुरु दीन दयाल, सुमरो मन चित एक करि ॥

छेरि सके नहि काल, अगम शब्द परमान है ॥ बंदो गुरु पद कंज, बंदी छोर दयाल प्रभु ॥ तुव चरनन मन रंज, देत सार जो मुक्ति फल ॥

चौपाई।

सतगुरु वचन॥धरमदास तुम संत सुजाना ॥ तुमसे भाषूँ मूलक ज्ञाना ॥ पानी पवन है ज्ञान हमारा ॥ ताका मैं अब कहूं विचारा ॥ पवन सवही मैं कहूं वखानी ॥ जाकी आदि अंत नहि जानी ॥ सो ग्रंथमैं भाषि सुनाई॥ काहू विरले साधू पाई ॥ पुरुष अंगसे उतपति भयऊ ॥ भिन्नभिन्नमैं ग्रंथन कहेऊ ॥

समै।

पानी पवनकी रचना, जड चैत

न विस्तार ॥ जो कोई चीन्हे भेदको॥ उतरे भवजल पार ॥

चौपाई।

अब पानीका कहूँ विचारा ॥ पवन भेद ले उतरे पारा ॥ राग छतीसो भये हैं जलके ॥ एक बुंद सबही में ढरके ॥ वाहि बुंदते उतपाति भयऊ॥ अमी बुंद काहू नहि लयऊ॥ अमी बुंदका अगम विचारा ॥ ताको नहि पावे संसारा ॥ अमी बुंदको जाने जो कोई ॥ पवन भेद पावेगा सोई ॥ पानी ब्रह्मा विष्णु महेशा ॥ पानी कृष्ण शक्ति और शेशा॥ पानी पांचो तत्व उपजाया ॥ तीन लोकमें जाकी छाया ॥ ये सबही मनकी

१ इसी चरणको अन्य ग्रन्थों में ऐसा लिखाहै॥पानी में निगुणमर्म्म समाया॥

उतपानी॥सो कोइ पावे बिरला ज्ञानी॥

समै।

पानी पवनकी माडहै,तीन लोक बिस्तार॥ ज्ञानी होयसो पावई, इन सो पुरुष है न्यार॥

चौपाई।

मूल सुरति पुरुषसो आई॥तासो सब बाज़ी फैलाई॥बाज़ी कीन्हा अनंत अपारा॥कहां लौं गिनो वार नहि पारा॥ कर्ता काल किये विस्तारा॥ लख चौरासी रूप सवाँरा॥चार मुक़ाम गुप्त पुनि कियऊ॥ताका मरम न काहू लहेऊ॥ सुरति संग सुषमना स्वांसा॥आप हि लीन गगनमें बासा॥ योगी यती कहत सब कोई॥गुपतप्रगट पावत नहिं सोई॥जो निज मूल सुरति कूं पावे॥पर

म पुरुष सोई दरसावे॥मूल सुरति लखे जो कोई ॥ सत्त लोक पहुँचेगा सोई ॥ सुरति सार जब कोइ पावे ॥ भवसागर को भरम मिटावे ॥

समै।

सार शब्द है शिखर पर, मूल ठिकाना सोय ॥ सतगुरु बिना न पावई, लाख कथे जो कोय ॥

चौपाई।

जो काहू पर दाया करों ॥ निमिष माहिं पार लेधरों ॥ पढे गुने कोई भेद न पावे ॥ सत्तगुरु मिले तो अलख लखावे ॥ निअक्षर नाम निज सारा ॥ सुरति सनेही पावे पारा ॥ नाभि कमलसो सुरति लौ लावे ॥ गगन शिखरमें जाय समावे॥निः अक्षर निज स्वांसा कहिये ॥

सुरतिमें धसि निज पद लहिये ॥ बानी चौदा अरब मैं भाखी ॥ सार वस्तु निज न्यारी राखी ॥ काहु काहु मैं दीन चिन्हाई ॥ बिनु बूझे सब गये नसाई॥ पानी भेद में सकल पसारा ॥ उतपति परलय सिर्जनहारा ॥ पानी छाड़ि पवनको गहई ॥ सोई साधु सियाना अहई ॥ आदि पुरुषको चीनो भाई॥ बिन इच्छासे मता उठाई ॥ पानी पवनकी रचना ठानी ॥ ताकेआगे पद निरबानी॥सुनु धरमदास युगती करहू ॥समझि बूझि न्यारा हो रहहू ॥ पवन ज्ञान योग सो लागा ॥ बस्तु न पाये भये अभागा॥पवन ज्ञानसो काया साधी ॥ त्रिकुटी मध्ये करे समाधी॥ तहवां काल पुरुष अस्थाना॥नित्यंप्रति

धरे निरंजन ध्याना॥यही आश योगेश्वर भूला ॥ कैसे गहे सार निज मूला ॥ अब सुनो ज्ञान बीज सो भाखों ॥ पानी ज्ञान प्रगट करि राखों ॥ उतपति सब पानी से होई ॥ पानी रंग लखे नहिं कोई ॥ जो रंग सेती पानी भयऊ ॥ ता रंग काहु खोज ना लहेऊ ॥ बस्तु अरंग रंग सो न्यारा॥अपरंपार पारके पारा॥पानी ज्ञान लगे कंडिहारा ॥ औघट परे बज्रकी धारा ॥ बिना भेद पावे नहिं कोई ॥ सतगुरु बिना न दर्शन होई ॥ मनके ख्याल लगे संसारा ॥ कैसे पावे अपरं पारा ॥ मन योगी मनही अवधूता ॥ यहि मन लाख भूतके भूता ॥ सुर नर मुनि और गन्धर्व देवा ॥ सब लागे यहि मनकी

सेवा ॥ सिद्ध साधक और योगी यती ॥ आगे खोज न पावे रती ॥ पीर पैगंबर कुतुब औलिया ॥ ये मन काल सबको छलिया ॥ कहाँ लगि कहूं जगतकी बाजी ॥ तीन लोक में मनसाहि बिराजी॥ मनकी राह चले सब कोई ॥ निःअक्षर बिनु गये बिगोई ॥ तासो पवन सकल चलि आई ॥ ताकी गम काहू नहिं पाई ॥ पानी भेदमें सकल पसारा ॥ उतपति परले सिरजन हारा ॥ पानी छांडे पवनको गहई ॥ सोई साधु सयाना अहई ॥ आदि पुरुषको चिन्हो भाई॥ तासो पवन सकल चलि आई॥ आदि पानीका करो विचारा ॥ भाँति भाँतिका घाट सवाँरा ॥ पानी तजि अनेक युग गयऊ ॥

सार नाम भेद तुम लहेऊ॥ कहै कबीर सुनो धर्मदासा ॥ मूल भेद मैं कीन प्रकासा ॥ ताकर भेद काहू नहिं चीन्हा ॥ गुप्त नाम तुमसों कहि दीन्ह॥यही नाम तुम राखो गोई ॥ ताकर भेद न पावे कोई ॥ सार नाम पावे निज सोई ॥ जाका सत गुरु पूरा होई ॥ आगम नाम सबहीं ते न्यारा ॥ धरमदास ले पहुँचो पारा ॥ जो कोई हंस नाम निज पावे ॥सोई हंस लोकको जावे ॥ नाम बिना मुक्ति नहिं भाई ॥ सो मैं तुमको दिया चिन्हाइ ॥ यहि नाम चीन्ह जो पावे ॥आवा गमन रहित होई जावे ॥ बार बार मैं कहूं चिताई ॥बिना नाम सब यम पुर जाई॥ नाम कहूं यहप्रगट नाही॥यह निजभेद ह

मारे माहीं॥मरे जिवे के काजमैं कही॥ सत्त प्रतीति यही है सही ॥ धरमदास यह सार बिचारा ॥ भवसागरसे उतरे पारा ॥

समै।

निःअक्षर निज गुप्तहै, कहूं भेद तो इ सार ॥ जो पावे सो बांचिहैं, नाहिं सब काल पसार ॥

चौपाई।

शब्द शब्द सब सृष्टि बखाने ॥ शब्द भेद कोई नहि जाने॥ज्ञानी गुनी कवेश्वर पंडित ॥सबही कहे शब्दका मंडित ॥ शब्द सुरति आये संसारा ॥ आपहि समरत्थ रहे निनारा ॥ शब्द अगम गम कोउ पावे नाहीं ॥ भूलि रहा सब भरम के माहीं॥पांचो शब्द जो पुरुष उचारा॥

मूल भेदहै सबसेन्यारा॥पांचो शब्द पुरु
षसो भयऊ॥जासो भय सो खोज न लय
ऊ॥प्रथम शब्द जो सोहं कीन॥सब घट
माही ताकर चीन्हा ॥ दूसर शब्द
ररंकार उचारी॥ ब्रह्मा विष्णु जपे त्रिपु
रारी॥ तीसर ओंकार शब्द जो भयऊ॥
तिन सबही रचना करि लयऊ॥ शब्द
स्वरूपी निरंजन जाना॥जिन यह किया
सकल वंधाना॥ शब्द स्वरूपी शक्ति सो
बोले॥ पुरुष अडोल कबहूं नहिं डोले॥
पांचो शब्द शक्ति उपजाया ॥ न्यारा
भेद न काहू पाया॥ पांचो शब्द ब्रह्मके
रूपा॥इनके आगे नाम अनूपा॥ पांच
शब्द अटके तब चूरी॥ तब पावेगा शब्द
हजूरी॥ सोहं सोहं जपे वड ज्ञानी॥निः

अक्षरकी खबर न जानी॥सत्त नाम निः अक्षर सारा ॥ सो सबसे है अगम अपारा ॥ ताकर भेद न जाने कोई ॥ बडे बडे सब गये बिगोई ॥पांच ब्रह्मका कह्यो ठिकाना॥सो कोइ बीरले साधू जाना ॥यह पांचो कायामें जाना ॥ ताके आगे पद निरबाना ॥ सबके ऊपर सत्त बिराजे ॥ निःअक्षर ता ऊपर गाजे॥ भँवर गुफा ढिग सोहं सारा ॥ ररंकार है दशवें द्वारा ॥ ओंकार है त्रिकुटी भूपा॥ नयनन माहिं निरंजन रूपा॥इनके आगे भेद हमारा ॥ ताका लहै न कोई पारा ॥ अब निज भेद तोहिं मैं दीन्हा ॥ सत्त सत्त सत्त तुम चीन्हा ॥ ब्रह्मांड को है खेल अपारा ॥ सार नाम ताहूसे पारा ॥

अनंत कोटि तहँ बाजा बाजे ॥ सहज
सिंहाँसन पुरुष बिराजे ॥ पांच शब्द त
हँ चौकी देवे ॥ एक टक ध्यान पुरुषको
सेवे ॥ अपनी अपनी बोले बानी ॥ जो
जिव आसा लागे ज्ञानी ॥ सबी बोलता
ब्रह्म कहावे॥सत्त बोलता कोइ न पावे॥
ते पांचो ऊपर कहि आया॥ ये सब सत्त
पुरुषकी माया ॥ सिद्ध साधक मुनिवर
ज्ञानी ॥ इनकी सेवा सबने ठानी ॥ आ
गम भेद न पावे कोई ॥ फिरि फिरि वा
हि में धाइ समोई॥अगम ज्ञान यहि भेद
अभेदा॥ताकी जुगति न पावे वेदा ॥ अब
एक युक्ति बताऊँ भाई ॥ बूझि लेहू मन
की चतुराई॥मुद्रा पांच अवस्था चारी॥
अपने दिलमें लेउ बिचारी ॥ यह कार

न मनइ ते होई ॥ इनके पार संत है सो
ई ॥ इनको भेद निज कहो बुझाई ॥ को
इक ज्ञानी यह गम पाई ॥ इनमें अट
कि रहे सब कोई॥तीन लोक जो उपजे
सोई ॥ अटकि रहा घाट नहिं सूझे ॥ अ
गम पंथ कैसे करि बूझे ॥ प्रथम मुद्रा
की युक्ति बताऊँ॥ पांच चारिते अलग
लखाऊँ॥ मुद्रा पांच अवस्था चारी ॥
नाम युक्तिहै सबसे न्यारी ॥ चाचरी मु
द्रा नेत्र के माहीं ॥ महा तेज दीसे तेहि
ठाहीं॥ भूचरी बसे त्रिकुटी तीरा॥तहवाँ
चंद सूर दोउ बीरा ॥ खेचरी जिभ्या द
शवें द्वारा ॥ अगोचरी श्रवण माहिं वि
चारा ॥ उनमुनि बसे अकासके माँहीं॥
भोगी वास करे तेहि ठाहीं ॥ पांचो मुद्रा

पांचो ध्याना॥ताके आगे पद निर्वाना॥
चारि अवस्था कहूँ विचारी॥ भिन्न भि
न्न सो न्यारी न्यारी॥ जाग्रतका अबक
हूँ विचारा॥ ज्ञान दृष्टि करि नयन उघा
रा॥सुपन अवस्था देखु सहचारी॥जाग्रत
सुपन ज्ञान विचारी॥ सुषुप्ति भेद दोउन
समावे॥ तुरिया भेद अलगहि ध्यावे॥
जड चैतनकी युगति भाखूँ॥तुमसे गोय
कछु नहि राखूँ॥ जड माया सो जाय
बिहाई॥ चैतन शक्ति रहे एक भाई॥
मनसा वुद्धि गगनमें रहई॥ चैतन्य
शक्तिसे चित्तको गहई॥ चैतन्य श
क्ति रहे सब ऊपर॥ आनंद वचन तहाँ
पुरुष परात्पर॥तुरिया तीत तहँ रह अ
काशा॥ वुद्धजन योगीकर तहँ बासा॥

मुद्रा पांच अवस्था चारी॥ योगी सिद्ध यही विचारी॥यही विधि योगी योग कराहीं॥मुद्रा साधि रहे घट माहीं॥करे कर्मसो मनके कारन॥वार वार भवसागर डारन ॥शुभ अशुभ दोऊ फल दाता॥म नहीं कर्ता जगत विधाता॥अब यक सहज योग मैं कहेऊ॥ ताको खोज न कोई लहेऊ ॥ सहज अगमगम काहू नाहीं॥ सहज सहज कहत सब आहीं ॥ महा शुन्यके पार प्रकासा ॥तामे सहज पुरुषको बासा॥आठ प्रहर लौ लागा रहई॥ सहज नाम ताहि को कहई॥ ओहं सोहं ररंकारा ॥ ताकेआगे नाम भंडारा ॥ वाहि नामसो सत्त समाधी ॥ऋषि मुनि योगेश्वर साधी ॥ ताहि सत्यसो निकसी बा.

नी ॥ तीन लोक पृथ्वी मैं जानी ॥ तेहि
बानी अटके संसारा॥नाम भेद है अगम
अपारा ॥ संशययुक्त प्रतीतिकी बानी॥
तेही अटकि रहे सब ज्ञानी ॥ कहाँ लगि
कहूं पार नहिं कोई ॥ जो आये सो गये
बिगोई॥कोइ एक हंस लोकको गयऊ॥
सतगुरुभेद संत जो लहेऊ॥सतगुरु सत
गुरु जगत बखाने ॥सतगुरुका कोई मर
म न जाने ॥ सत्त सोही गुरु ज्ञान प्रका
सा ॥ तासो मिटै कालको त्रासा ॥ सत्त
पुरुष सोई सतगुरु दाता ॥ जाकी गति
नहिं लखे विधाता ॥ संत जगतको गुरु
कहावें॥त्रि देवा सो भेद न पावे॥कहे क
बीर सुनो धर्मदासा॥दृढ प्रतीति करो बि
श्वासा॥है निःअक्षर मूल सबहिनका ॥

पावे कारज होय जीवका॥नहि तो औ र अनेक उपावा ॥ कर कर थाके लोक न आवा ॥ यही नाम विनु मुक्ति न पा वे॥ जो कोई कोटि यतन करि धावे॥सो है नाम हमारे पासा ॥ पावे सत्त लोकमे वासा ॥ विरले हंस पावहिं भाई ॥ सो मैं तोको दीन चिन्हाई ॥ कहैं कबीर सुनो धर्मदासा॥सार नाम विनु हंस निरासा॥

समै।

कहे कबीर धर्मदास सो, लेहू नाम सम्हार ॥ नाम बिना छूटे नहीं, कालब डो बरियार ॥

समै।

काया काल पसार है, सारनाम है दू र॥विरले हंसा पावहीं, सार ज्ञान भरपूर ॥

चौपाई।

धर्मदास सत्त मैं भाखी ॥ गुप्त वस्तु प्रगट करि राखी ॥ स्वांसा एक प्राण है भाई॥ निःस्वांसा सो करो लखाई ॥ निःस्वांसा निःअक्षर होई ॥ सतगुरु भेद कहावे सोई ॥ शब्द माँहि निःशब्द दिखावे ॥ हद माँहि बेहद कहलावे ॥ काल महा काल है दोई ॥ महापरलयमें रहें न कोई ॥ तब रहि है निःअक्षर सारा ॥ सो है सब का सिरजन हारा ॥ आदि शक्ति निरंजन देवा ॥ सिद्ध साधुलगे तेहि सेवा ॥ अष्ट कर्मके दाता वोई ॥ कर्म करे मुक्तावे सोई ॥ निःअक्षर है अलख अनामी ॥ शक्ति निरंजनके सो स्वामी ॥ पांच तत्वगुन तीन सवाँरा॥सो यह आ

दि शक्ति विस्तारा ॥ तीन लोक शक्ति विस्तारा ॥ चौथा लोक पुरुष है न्यारा॥ सोतो लोक पुरुष विस्तारा ॥ पुरुष पुरातम अगम अपारा ॥

समै।

कहैं कबीर धर्मदास सो, यहि निज भेद हमार ॥ जो पावे उस नामको, लहे न जग औतार ॥

चौपाई।

सार नाम गहि उतरे पारा ॥ बार बार मैं कह्या पुकारा ॥ मुखसे कहे कबीर कबीरु॥तऊ ना मिटै कालको पीरु॥ नाम हमार जगत सब कहई ॥ भेद हमारा कोइ न लहई ॥ मेरा निज स्वरूप है सोई ॥ ताको चीन्हे बिरला कोई ॥ मेरे निज स्वरूपको पावे ॥ सो हंसा

सत्त लोक सिधावे ॥ धर्मदास तेरा वड भागा ॥ तोको दीनो अटल सुहागा ॥ धरमदास मैं कहों पुकारी ॥ नाम विना नहि मुक्ति तुमारी ॥ यह मैं कह्यो भेद की बानी ॥ धर्मदास तुम हो वड ज्ञानी ॥ बानीको कछु वार न पारा ॥ भेद सार सबको तत्वसारा ॥ बहुत जीव अटके यम द्वारा ॥ तब मैं कहेउ भेद निजसारा ॥ सत शब्द सो प्रीति लगावे ॥ सो भवसागर बहुरि न आवे ॥ सत्य गहे और सेवा करई ॥ तासो काल दूरसे डरई ॥ निराधार नाम निज पावे ॥ भवसागरमें बहुरि न आवे ॥ जनम जनम भक्ति जिन कीना ॥ शब्द हमार चीन्ह तिन लीना ॥ वीरा नाम सार निज ध्यावे ॥ मा

नुष देही सही सो पावे ॥भेद हमारा अ
गम अपारा ॥ निःअक्षर नाम सबसे
न्यारा॥मूल शब्द और मूल ठिकाना ॥
धर्मदास तुम निजुके जाना ॥ चारो गु
रु जगतके सही ॥ भेद सार मैं तुम सो
कही॥चार गुरु थापन हम कीना॥जीव
कारज होयसो दीना॥धर्मदासतुम और
सहतेजी ॥ चतुर्भुज और राय बंकेजी॥
चारो गुरु जगत कंडिहारा ॥ नाम
भेद सो उतरे पारा ॥ नाम नाम सबन
गोहरावा ॥ मेरा नाम न काहू पावा ॥
धर्मदास तोहि दीन लखाई ॥ युद्ध क
रो कालसो जाई ॥ होय निःशंक जीव
मुक्ताओ ॥ अमर पुरको ले पहुँचाओ॥
ऐसे करो जीवको काजू॥सब जीवनकी

तोहै लाजू ॥ हदसे लेइ बेहद पहुँचा ओ॥ पीछे सुख सागर लेआओ॥ कहैं कबीर सुनो धर्मदासा ॥ यहि विधि करो लोक में बासा ॥ अब मैं नामकी युक्ति बखानूँ॥यहि विधि जीवलोक लेआनूँ ॥ हमारा नाम एक है भाई ॥जहाँ दोय तहाँ काल समाई॥सबी एक कहा अगम अपारा॥है घर माहीं घरते न्यारा ॥ उनका भेद न पावे कोई॥जहाँ आपनी सबनी खोई॥ब्रह्मा विष्णु और महादेवा॥तिनहु न पायो हमारो भेवा॥सिद्ध साधु नव नाथ न पावे॥और जिवनकी कौन चलावे ॥ पावे ताका भय मिटि जावे ॥ बाँह पकड़िके लोक पहुँचावे॥आवे लोक अमर होय सोई ॥ ताका आवा गमन

होई॥धर्मदास यह भेद अपारा॥गुप्त ना
म सबहीं ते न्यारा॥ अपनी सुरति मैं
देउँ लखाई ॥ भवसागर को भरम मि
टाई॥ मूल वस्तु बंशको देहु॥ यह कहि
देहु नामको सेहू॥धर्मदासो वचन॥ धर्म
दास बिनवे कर जोरी ॥ हे स्वामी एक
विन्ती मोरी॥ हे साहेब बालक भोरा॥
कैसे गहे मूल का डोरा॥ धरमराय को
बहुतहि जारा॥कैसे माने कहा हमारा॥
कबीरोवाच ॥ धर्मदास चिंता मति
करहू॥ सार नाम सुरतिमें धरहू ॥ य
ही नाम बंशनको दीजे॥ सब जीवन
को कारज कीजे॥ यही नाम दीना नि
ज सारा॥ सब जीवनका होय उबारा॥
मूल वस्तु सार है भाई॥ मूल नाम की

करो बड़ाई ॥ युग युग हम संसार चलि आये॥ मूलनाम सो जीव मुक्ताये ॥ विना मूल पहुँचे नहिं कोई॥कहे सुने कछु काज न होई॥सत्त सत्त सत्त मैं भाखूँ॥धरमदास गोय कछु नहि राखूँ॥कहे कबीर भेद निज सारा ॥ जो पावे सो जग से न्यारा ॥ अब एक युक्ति अगम की कहऊँ ॥ प्रगट कहों गुप्त जो धरऊँ ॥द्वादश नाम जीवके जानो॥द्वादश नाम पुरुष परवानो॥चौविस नाम सोहै कंडिहारा ॥ काटे करम भरमकी धारा ॥ यही सुमिरन यही है ज्ञाना ॥ यही अजपा यही है ध्याना ॥ पद निरवान प्रगट कहुँ तोई ॥ धरमदास राखो मन गोई ॥ प्रथम पुरुषको नाम उच्चारु॥ यही नामका

करो दीदारु॥ सत्त नाम सबसो कहि
दीना॥ताका भेद न काहू लीना॥अकह
नाम है अगम अपारा॥ सोई सबका
सिरजन हारा॥ अजर नाम अमृत
निज नामा॥गगन मंडल पर ताको
धामा॥ अमी नाम पारस भव पा
रा॥ बिरले जन कोई लखने हारा॥ अ
भय नाम पावे गति नीका॥ पाये कार
ज होय जीका॥ सत्त सिंधु अदली जिन
जाना॥ताका आवागमन नसाना॥
अमोदित निःचिन्त निज नामा॥ द्वा
दश नाम सार निज धामा॥ द्वादश ना
म जो हंसा लेई॥ करम भरम संशय त
जि देई॥ कहें कबीर सुनो धर्म दासा॥
द्वादश नाम पुरुष परकासा॥ द्वादश

नाम जीवके सारा ॥ ताका अबमैं कहूँ विचारा ॥ जीव स्वासा सुरति बखानो॥ तीन नाम यहि विधि जानो ॥ प्रान पुरुष और हंस कहीजे ॥ षट नामका भेद लहीजे ॥ ओहं सोहं मुक्तामनि नामा ॥ तिनका है अगम पुरगामा ॥ त्वं पद तत् पद असि पद लेखा ॥ द्वादश नामका करो विवेखा ॥ मन और सुरति एक घर करहू ॥ परम पुरुषसो तारी धरहू॥यहि विधि ध्यान धरे जो कोई ॥ सत्त पुरुष घर पहुँचे सोई ॥ कहें कबीर सुनो धर्म दासा ॥ निःअक्षरमें कीजे बासा ॥ विरला जाने याका भेदा ॥ जाने मिटे जगत का खेदा॥ नाम निःअक्षर न्यारा भाई॥ ताहीमें तुम रहो समाई ॥ तहां से आये

हैं सब जीवा॥ तीन लोक और सब भी
वा॥ जो जिव रहे द्वादश माहीं ॥ तिन
का संशय छूटत नाहीं ॥ जो निज सार
नामको पावे॥सो जीव सत्त लोकमें आ
वे॥ दोय अटक और है भाई ॥ सो मैं तो
कूँ देउँ लखाई ॥ बड़े बड़े सिद्ध साधक
अटके॥ खरे स्याने ते सब भटके॥निरा
कार निरंजन देवा ॥ यहि निरगुणकी
साधी सेवा ॥ इनमें अटकि रहे सब ज्ञा
नी॥यहि वस्तुको अगम सब जानी॥ज
नम मरन छूटे नहि जिवकी॥ खबर न
पावे साँचे पिवकी ॥ ओं ओंकार और
है भाई॥इनमें सकल रहे उरझाई॥आगे
भेद न पावे कोई ॥ खोजत खोजत सब
गये बिगोई ॥ कहे कबीर गुप्त घर मेरा॥

सो निज भेद काहु न हेरा ॥ इनके पार
न्यार है नामा ॥ सोई है सत्त पुरुष नि
ज धामा॥तहाँ जीवपावे विश्रामा॥ बहु
रि न आइ धरे जग नामा॥कहे कबीर स
त्त विश्वासा ॥ यह निज भेद हमारे पा
सा॥सो निज भेद मैं दीन बताई॥ यही
नाम बिनुयम पुर जाई ॥ यही नाम
मूल निज सारा ॥ जो पावे सो पहुँचे
पारा ॥ कहैं कबीर हंनसनके राई ॥
गुप्त भेद शिर लेउ चढाई॥ सुनो धर्मदा
स भेदकी बानी ॥ ताहाँ न रूपरेख नि
सानी ॥ वहाँ नहीं आदि शक्ति अवता
रा॥पार ब्रह्म है सबसे न्यारा ॥वहाँ नहीं
आदि निरंजनदेवा ॥ ब्रह्मा विष्णु महे
श न सेवा॥वहाँ नहीं चंद सूर औतारा॥

आगम पुरुष सवहि ते न्यारा॥ पा
च तीन तहाँ नहिं भाई॥ ताको गम
न काहू पाई॥ओहं सोहं ॐ रंकागम॥
न और प्रान अगम ते न्यारा॥ कोइ न
आया कोइ न जाई॥ यह खबर कोइ न
पाई॥ सो मैं तोकूँ कहूँ वुझाई॥गम्य ग
म्र भेद यह भाई॥आई मूल वस्तु निर्या

कछु अलग दिखाई॥ नव नारी वसे नव पवना॥ रसके भोगी जाने कौना॥ और वहत्तर कुंड कहीजे॥ पवन वहत्तर तहाँ लहीजे॥ पवन चढे गगनके माहीं॥ चौकी देहिं पुरुपके ठाहीं॥सवकी डोर गगसो लागी॥ धर्मदास जाने वड भागी॥ पांच तत्व प्रकृति पचीसा॥ तीन गुन तेतीसो ईसा॥ और कहाँ लो वरनों काया॥ थाके कोऊ भेद न पाया॥ ये तो है काया वंधाना॥ जानेगें कोई संत सुजाना॥ तीन लोक काया के माहीं॥ कही सवन पै पाया नाहीं॥ ब्रह्माण्डे सोइ पिण्डे जाना॥ ताके आगे पद निरवाना॥ सो पहिने निरंतर वासी॥ जो पावे सोई अविनासी॥ नाम निरंतर कहे वखानी॥ सुने धर्मदास कहे

आगम पुरुष सबहि ते न्यारा ॥ पा
च तीन तहाँ नहिं भाई ॥ ताकी गम
न काहू पाई॥ओहं सोहं औ ररंकाराम॥
न और आन अगम ते न्यारा ॥ कोई न
आया कोइ न जाई ॥ यह खबर कोई न
पाई ॥ सो मैं तोकूँ कहूँ बुझाई ॥राखो गु
प्त भेद यह भाई॥आई मूल वस्तु निरधा
रा ॥उनही आई सब जगत सुधारा॥निः
स्वांसाते उतपन भयऊ ॥ यहाँ आय
स्वांसा होगयऊ ॥ स्वांसा होयकें किया
बंधाना॥तासो भये पिण्ड और प्राणा ॥
खानि वानि सबमें भरी रही॥ एक वस्तु
है मूल निज सही॥ अब सुनि लेहु पिण्ड
विस्तारा ॥ बूझि लेहु तो जग निज धा
रा॥सुक्षम भेद तो हि चीन्हाई॥कायाते

कछु अलग दिखाई ॥ नव नारी बसे नव पवना ॥ रसके भोगी जाने कौना ॥ और बहत्तर कुंड कहीजे ॥ पवन बहत्तर तहाँ लहीजे ॥ पवन चढे गगनके मा हीं ॥ चौकी देहिं पुरुषके ठाहीं ॥सबकी डोर गगसो लागी ॥ धर्मदास जाने बड भागी ॥ पांच तत्व प्रकृति पची सा ॥ तीन गुन तेतीसो ईसा ॥ और क हाँ लो बरनों काया॥ थाके कोऊ भेद न पाया ॥ ये तो है काया वंधाना ॥ जाने गं कोई संत सुजाना ॥ तीन लोक काया के माहीं ॥ कही सबन पै पाया नाहीं ॥ ब्रह्माण्डे सोइ पिण्डे जाना ॥ ताके आगे पद निरबाना ॥ सो पहिने निरंतर वा सी ॥ जो पावे सोई अविनासी ॥ नाम निरंतर कहे बखानी ॥ सुने धर्मदास कहे

मुख ज्ञानी ॥ अकह अथाह अडोल अ
संसा ॥ अचल अचिंत अखंडित हंसा ॥
अजर अमर अधर अरूपा ॥ मूलनाम
सबहीके भूपा ॥ मकरतार सो झीनी
धागा ॥ बिरले कोई संत तहँ पागा ॥
निःअक्षर निःस्वास निःजाता ॥ आनंद
कंद सत सोई दाता ॥ निरगुन सरगु
सबके पारा ॥ नहिं जहँ

समै।

मूल नाम निज सार है, सब सारन के सार॥ जो कोई पावे नामको, सोई हंस हमार॥

चौपाई।

मूल नाम सबने मुख भाखा॥ मूल नामका भेद न चाखा॥ मूल नाम और मूल ठिकाना॥ पहुंचे गे कोई संत सुजाना॥

समै।

वार वार पुकारिया, मूल नाम निज लेहु॥ जो कोई हंसा पावई, होय हिरं बर देहु॥

मूल नाम निज सार है, कही पुकार पुकार॥ जो पावे सो बाचई, नहीं तो काल पसार॥

मुख ज्ञानी ॥ अकह अथाह अडोल अ
संसा ॥ अचल अचिंत अखंडित हंसा ॥
अजर अमर अधर अरूपा ॥ मूलनाम
सबहीके भूपा ॥ मकरतार सो झीनी
धागा ॥ बिरले कोई संत तहँ पागा ॥
निःअक्षर निःस्वास निःजाता ॥ आनंद
कंद सत सोई दाता ॥ निरगुन सरगुन
सबके पारा ॥ नहिं जहँ उपजे नहिं तहँ
मारा ॥ मूल नाम निरवान निरूपा ॥
अगम अगोचर अलख अरूपा॥सत सा
हेबकी सुक्रित डोरी ॥ राखो सुरति निर
तिसो जोरी ॥ नाम एक अनंत हो गय
ऊ॥गाम ठाम सोई भरि रहेऊ ॥ अनल
पंछी भृंगी गुंजारा ॥ भँवर गुंजार गुफा
के पारा ॥

साखी।

मूल नाम निज सार है, सब सारन के सार॥ जो कोई पावे नामको, सोई हंस हमार॥

चौपाई।

मूल नाम सबने मुख भाखा॥ मूल नामका भेद न चाखा॥ मूल नाम और मूल ठिकाना॥ पहुंचे गे कोई संत सुजाना॥

साखी।

वार वार पुकारिया, मूल नाम निज लेहु॥ जो कोई हंसा पावई, होय हिरं वर देहु॥

मूल नाम निज सार है, कही पुकार पुकार॥ जो पावे सो बाचई, नहीं तो काल पसार॥

चौपाई।

मकर तार है झीनी डोरी ॥ तहँवां काल करे नहिं चोरी॥ता डोरी हँस चढ़ि आवे ॥ सो हँसा सुख सागर पावे ॥ काल महाकाल नहि दोई ॥ तहां हँस सुख बिलसे सोई ॥ अमर होय सुख सागर पावे ॥ जोनी संकट कबहुँ न आवे ॥ मूल नाम निज मूल उचारा ॥ घर अधर दोऊ ते न्यारा ॥

समै।

काल बली तिहुँ लोकमें, जीव शीव के नाथ ॥ मूल नाम जो पावई, सो चले हमारे साथ ॥

चौपाई।

धरमदास मैं सत्यहि भाखा ॥ तुम से गोय कछु नहि राखा ॥ चौदह अरब

ज्ञान मैं भाखा ॥ मूल नाम गुप्त कारि राखा ॥ मूल नाम है सबके भेदा ॥ पावे हँसा होय अखेदा ॥ गुप्त प्रगट हम तुमसे भाखा ॥ पिण्ड ब्रह्माण्डके ऊपर राखा ॥

समै।

मूल नाम निज ऊपरे, मूल ठिकाना सोय ॥ मूल विना पहुँचे नहीं, लाख कथे जो कोय ॥

मूल नाम जिन नामहै, सत्त मान धरमदास ॥ जो पावे सो बाचि हैं, और सबे जम फांस॥ मूल नाम पाये विना, हंसा जाय बिगोय ॥ कहें कबीर धर्म दास सो, मोर दोष नहि होय ॥

चौपाई।

मूल नाम प्रगट नहि करिये ॥ यहि

नामको गुपतहिं धरिये ॥ मूल नामसो जीव उबारा ॥ और नाम प्रगट संसारा॥ मूल नाम जाके घट आवे॥सो हंसा सत्य लोक सिधावे॥मूल नाम की पावे डोरी॥ टूटे घाट अठासी करोरी ॥ युगन युगन लेई अवतारा॥मूल नाम सो हँस उबारा॥ मूल नाम गुपत तुम राखो॥सत्त नाम प्रगट तुम भाखो॥कोटिकर्म हँसाके होई॥ मूल नाम सो डारो धोई॥ पानी पवनका भेद अपारा॥ मूल नाम इनहूते न्यारा॥ मूल नाम बिनु मुक्ति न होई ॥ लाख ज्ञान कथे जो कोई ॥ अकह नाम जीवके सारा ॥ पावे हंसा होय भवपारा ॥

साखी ।

जीव्हा कहूं तो जग तरे, प्रगट क

ह्यो नहिं जाय ॥ गुप्त नाम तोकूँ दियो, लेहू शीस चढाय ॥

इतिश्री ग्रंथभेदसार संपूर्णम् ॥

॥ सत्यकबीरो जयति ॥

श्री

अथ श्रीग्रंथपृथ्वीखण्ड ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
वंश बयालीसकी दया ।

चौपाई ।

धर्मदासोवचन ॥ अहो ज्ञानी तव ज्ञान समाना॥सबकी उतपाति भल तुम जाना ॥ पृथ्वी परमान कहो समझाई ॥ कै योजन पृथ्वी निरमाई ॥ कै योजन पृथ्वी चौड़ाई ॥ सो सब उतपाति कहो

समझाई ॥ कैसे भई अकासकी बानी॥ कैसे भई वायु उतपानी॥कैसे भया कहो परकासा॥ कैसे भया नीर निरवासा॥ जहाँ लगि सब कहो बखानी॥ पृथ्वी खण्ड को कहो परमानी ॥ और सुमेरु का कहो परवाना ॥ कै योजन सुमेरु बंधाना ॥

साखी ॥

अहो ज्ञानी विनती करूँ, सबका कहो विवेख॥ तुम भेदी सत लोकके, निजके भाखो लेख ॥

चौपाई।

कबीरोवचन ॥ धरमदास भल बूझ्यो ज्ञाना ॥ पुरुष प्रताप सकल हम जाना ॥ सकल गम भाषूँ उतपानी॥ पुरुष नाम धरा मम ज्ञानी ॥ एके

शब्द अकाश बनाया ॥ बिहंगम शब्द वायु उठि धाया ॥ कुटीछ शब्दकी होगई अग्नी ॥ नीरमल शब्दसो नीर उतपनी ॥ कुचित शब्द चंद्रमा को वीना ॥ समीर शब्द सरब अंग दीना ॥ आकाशते बाय उतपानी ॥ बायुते तेज प्रगट कहानी ॥तेजते कह्यो कुहा उतपानी ॥ वाहीसे भयो नीरनिरबानी ॥ तेहि पानीमें ब्रह्मा रहेऊ॥ यहि विधि मैं उतपन कहेऊ ॥ ब्रह्मा कोटि जल मध्ये रहेऊ ॥ धर्मदास मैं तोहि लखयऊ ॥ परमेश्वरके नाभि ब्रह्म रहई ॥ ते ब्रह्मा पृथ्वी बाढन करई ॥ उनचास कोटि पृथ्वी परमाना ॥ परथम खंड सुमेरु बखाना ॥ एकरूप रोपा है सूँ

चा ॥ चौराशी लाख योजन ऊंचा ॥ चौराशी लाख गडाहै भाई ॥ यही पर मान सुमेरु बनाई ॥ते सुमेरुकी कहूँ उ तपानी॥भिन्न भिन्न सब कहूँ वखानी ॥ सबहि हकीकत जो कछु होई॥ कहे क बीर समझाऊँ तोई ॥ ऐसा सुमेरु बडा है भाई॥ प्रगट तुमको देउँ लखाई ॥ सु मेरु पर अष्ट सिद्ध हैं न्यारा ॥ उन सिद्ध न का कहूँ विचारा ॥ तापर जौन जौन सिद्ध है भाई॥ तिनका नाम कहूँ समझा ई॥हेमन्त सिद्ध भये हैं नामा ॥निला ना म सिद्ध तेहि ठामा ॥स्वाती नाम तहँ सि द्ध है भाई ॥ ऊँच नाम सिद्ध निर्माई ॥ मला नाम सिद्ध तहाँ बताई ॥ज्ञान नाम सिद्ध तेहि ठाई ॥ मद नाम सिद्ध है तहा

सोई ॥ महा नाम सिद्ध पुनि होई ॥ येते अष्ट सिद्ध परवानो ॥ धर्मदास तुम निजकैजानो ॥ एक एक सिद्ध की अंतर भाई॥ सो सब भेद कहों समुझाई ॥ एक एक लक्ष योजन राखा ॥ तुमसे सत्त वचन मुख भाखा ॥ ता सुमेरु पर चन्द्रमा है भाई ॥ वदन माया आन समाई॥ता परवत पर कैलासहै भाई ॥ माया मंदिर बहुत निर्माई ॥ गण गन्धर्व मुनिवर भयऊ॥ न्याव सवन का तहां करेऊ ॥ परमज्योतिका येही नामा ॥ सोइ रहत है तेहि ठामा ॥ पुनि जादिन एक करत है ताही ॥ पाप नाहिं तहां रती समाहीं ॥ ता सुमेरु पर दक्षिण दिशि भाई ॥ एक जाम्बुनका वृक्ष र

हाई॥लक्ष योजन विस्तार तेहि जाना॥
वृक्षके फल हस्ति समाना ॥ धर्मदास
तुमसे कहूँ निशाना ॥ समुझि बूझि
मन करहू ज्ञाना ॥ ता फलका रस झ
रत है ताई ॥ डाल पात होय उतरे भा
ई ॥ डाल होयके मूल समावे ॥ सो रस
मानसरोवर आवे॥ तेहि रसते जमुना
उतपानी॥सबकी होत पापकी हानी॥ ते
हि उदक होय कंचन धातु ॥ तुमसे क
हूँ यह विख्यातु ॥ जांबु वृक्षते जंबू द्वि
प भाई ॥ नव खंड पृथ्वी कहूँ समझा
ई ॥ पश्चिम दिशा बाद्रायन खंड है ॥प्र
थम खण्ड यहि विधि कहै॥द्वितिया खंड
ताहि ठिकाना ॥ इला वरत खंड कहूं
परवाना ॥ राम खंड है ताहि ठिकाना॥

हरि आसीन नव खंड निदाना ॥ भरत खंड अहै सही अस्थाना ॥दातमल खंड कहूँ निधाना॥उतकल खंडकी तहाँ निसाना ॥ प्रेम एक खंड है अनामी ॥ नौ खंड माहि दुनिया कर गामी ॥सात द्वीप पृथ्वी परवाना॥पृथ्वी है द्वीप ठिकाना॥ द्वीप द्वीपके नाम सुनाऊँ॥ भिन्न भिन्न सबी समझाऊँ॥ प्रथम सिंगल द्वीप बखाना ॥ पोहोकर द्वीप सही अस्थाना ॥ द्वीप सिलमिली कहूँ निशानी॥ कुश द्वीप पृथ्वी मद आनी ॥ उलका द्वीप एक ठैराना ॥ जंबु द्वीपमें किया ठिकाना ॥ तहाँ ही हम हूँ रोप्यो थाना ॥ चार गुरु की किया निर्माना ॥ सात द्वीप तुमसे कहि दीना ॥ धरमदास तुम निजके

चीना॥ अब इनका बखान सुनाऊँ॥भि
न्न भिन्न तोहि समझाऊँ॥ कोटि योज
न जंबु द्वीप निर्मावा॥ ता पीछे रत्ना
गिरि रहावा॥ ते ठाँईं जंबु द्वीप बसा
ई॥ धर्मदास मैं तोहि लखाई॥ खार
समुद्र जंबु द्वीप नामा॥ जहँ भरत
खण्ड पुनीत है धामा॥तीन कोटि जो
जन सिंगल द्वीपा॥ क्षिर समुद्र बस ते
हि समीपा॥ पांच कोटि योजन सिंग
ल द्वीप कही॥ मधुसागर बसे तेहि ठ
हीं॥ सातकोटि (जोजन) पुष्कर द्वी
प निवासा॥ श्वेत सागर बसे तेहि पा
सा॥धर्मदास यह तुम को कहिदीना॥
नौ कोटि योजन क्रौंच द्विप लीना॥
तहाँ दधि सागर अहै ठिकाना॥ आगे

कर अब सुनहु परमाना॥ ग्यारह कोटि कुश द्वीप कहाई॥ स्वादिक सागर बसे तेहि ठाई॥ तेराकोटि (जोजन) उत का द्वीप प्रमाना॥ तहँ मैनागिरि सागर निदाना॥ सिलमिलि द्वीपमें गरुड अस्थाना॥ यहि विधि सातो द्वीपहि जाना॥

साखी।

कहें कबीर धरमदास से,तुमसे कहूँ बखान॥सत समुद्र पृथ्वी पर, सात द्वीप निदान॥

चौपाई।

उनमुनि ऊपर पताल ठिकाना॥ पताल ऊपर तेज निर्माना॥ तेज ऊपर सत शब्द कहि दीना॥ सत शब्द ऊपर धर्मासन कीना॥ रजके ऊपर कूर्मआस

न लीना ॥ कूर्मके ऊपर गिरिवर कीना ॥ गिरि ऊपर जलनाल निधाना ॥ पुरुष परताप सकल हम जाना ॥ प्रथम कूर्म नर रूप दिखाई ॥ दया पुरुष तब उपजा आई ॥ कूर्म विस्तार कहत है भाई ॥ सो सब भेद कहूं अर्थाई ॥ कोटि जोजन कूर्म मुख जाना ॥ पचास कोटि जोजन पृष्ठ प्रमाना ॥ चार कोटि(जोजन)चार चरन उपजाई ॥ दश कोटि (जोजन)अंगुलिन रेख अहाई ॥ सात कोटि (जोजन)कूर्म पुच्छ बनाई॥ धर्मदास मैं कहूँ अर्थाई ॥

साखी।

कहें कबीर धर्मदाससे, कहूँ बचन समतूल॥ पृथ्वीसे दूना कूर्म है, भाषूं भेद निज मूल॥

चौपाई।

कूर्म मुख पूरब दिशि रहाई॥ पश्चिम दिशा पुच्छ है भाई॥उत्तर दिशा जाको हम देखा॥ चारों दिशा चार पग रेखा॥ येताहै कूर्म परमाना॥ जो देखा सो किया वखाना॥ कूर्म पीठ दश दिकपाल बैठाई॥ ताका गम्म काहू न पाई॥ एक एक दिकपालकी साख बताऊँ॥ कहैं कबीर मैं भाषि सुनाऊँ॥ चार खंडके कहूँ जो नाऊँ॥ पुरी पुरीके नाम दिढाऊँ॥ सात लक्ष योजन ऊँचा भाई॥ पंद्रह कोटि जोजन देह दिढाई॥ भाषूँ भेद सुनो चित लाई॥ एक एक दिकपाल तहाँ रहाई॥ अठतालिस लक्ष (जोजन) अंतर रहाई॥ कहैं कबीर कहूँ अ

रथाई ॥ ऐसे दिगपाल दश हैं भाई ॥ दशो दिशा बैठि रहाई ॥ ये सब है पृथ्वी रछपाला ॥ कहें कबीर अविगतका ख्याला ॥ कबहूँ कुर्म जो उलटे भाई ॥ तत्क्षन पृथ्वी परले जाई ॥ कूर्मके पीठ पर बाराह रहाई ॥ बाराह ऊपर पृथ्वी है भाई ॥ आदि वराह कीन तहाँ काया ॥ कादो माँटी लगी है ताया ॥ तापर शेष नाग बिठाई ॥ सहस्र फणी नाग दिढाई ॥ दो सहस्र नैन जो जाने ॥ यहि विधि भिन्न भिन्न करे बखाने॥ कोटि जोजन का कहूँ जो लेखा ॥ एक एक फणी विस्तार जो देखा ॥ ऐसी पृथ्वी देखि जो जाने ॥ भाखूँ वचन लेहु पहिचाने ॥ ता पृथ्वी पै अष्ट कुल निर्माई॥

तिनका प्रगट नाम दिखलाई ॥ रत्नाच ल पर्वत उत्तर दिशि होई ॥ हेमांचल इसान कोन रहोई ॥ उदयाचल पूरब दि शा दिढाई ॥ अग्नि कोन मलयागिरि नामा ॥ मंद्राचल पर्वत दक्षिण धामा ॥ खनिंद्र पर्वत नैऋत्य कोना ॥ अस्ताच ल पर्वत पश्चिम होना ॥ द्रोणाचल पर्व त वायव्य जाना ॥ यही अष्टकुलि पर्वत परवाना ॥ सो हम तुमसे कही बखानी सत्त पताल कर सुनहू बानी ॥ जलमें धरे रसातल बासा ॥ रसातल मध्ये पताल प्रकासा ॥ पताल मध्ये ज्योति अनुसा रा ॥ छतीस युगन का कहूं बिचारा ॥ प्रथम छतीस युग अनुमाना ॥ घड़ी अंतर का

१ अतल वितल पुनि सुतल कही और तलातल जान ॥ महातल अरु रसातले पुनि पताल गुण सान ॥ बिबेक कोष ॥

कहूँ बखाना ॥ प्रथम मही युग नाम बखानी ॥ २ अलंब युग कहूँ परवानी ॥ ३ उलनाम युग एक भाखा ॥ ४ दुंदुक नाम युग कहि राखा ॥ ५ अंधा नाम युग एक रहाई ॥ ६ कूर्म नाम युगपुनिहै भाई ॥ ७ कुरंग नाम युग एक भावा ॥ ८ यलीथा नाम युग ठहरावा ॥ ९ गोश नाम युग उतपानी ॥ १० गोविंद नाम युग पुनि ठानी ॥ ११ अगोचर नाम युग एक ठाना ॥ १२ तम नाम युगएक माना ॥ १३ इलूखा नाम युग एक भाखा ॥ १४ आदि नाम युग तहाँ राखा ॥ १५ तन नाम युग एक पसारा॥१६ त्रिविधि नाम युग एक ढारा ॥ १७ अंकुर नाम युग आदि है भाई॥१८त्रिपती नाम युग पुनि चलिआई॥१९वंदीकनाम

युगमें भाखा ॥ २० नीकुल नामं युग पुनि ताखा ॥ २१ बंधी नाम युग मैं जानी ॥ २२ अदवुद नाम युग परवानी ॥ २३ धीर नाम युग पुनि जाना ॥ २४ घोर नाम युग उतपाना ॥ २५ ऐश नाम युग एक बनाई ॥ २६ तनव नाम युग पुनि ठहराई ॥ २७ भेदवीसवा नाम युग निर्माई ॥ २८ बंधीच नाम युग पुनि ठाई ॥ २९ अमृत नाम युग तहाँ जानी ॥ ३० अविगत नाम युग पुनः वखानी ॥ ३१ घट नाम युगतहाँ दिढावा॥ ३२ कूर्म नामयुग प्रगट चिन्हावा॥ ३३ उवाग नाम युग प्रथमदोधारा ॥ एक नरमयुग भया भंडारा ॥ ३५ सुन्न नाम युग कहूँ निर्मानी ॥ ३६ आदि ना

म युग कहा बखानी ॥ छत्तिस युग प्रथम उतपानी ॥ जाका तुमसे कहा बखानी॥छत्तिस चौकडी कही बखानी॥ धर्मदास तुम निजके जानी ॥

साखी।

कहेंकबीरधर्मदाससे, छत्तिस युग परमान ॥ ये सब युग बखानिया,अब भाषूं नाम निधान ॥

साखी।

भोगल युग छत्तिस है, कहें कबीर समझाय॥ निजके धर्मनि मानहू, सुनो धर्म चितलाय ॥

चौपाई।

अब सुमेरु की उतपन भाई ॥ चार दिशा चार पुरी निर्माई ॥ पूरब अमरावति पुरी है भाई ॥ सोमैं भेद कहूँ स

मझाई ॥ चौबीस सहस्र योजन विस्ता
रा॥ येहि अमरावति केर पसारा ॥ तहाँ
इन्द्रराज राज कराई॥ तेंतीस कोटि देव
तहाँ रहाई ॥ अठासी सहस्र ऋषेश्वर बा
सा ॥ देवन देव अनेक परकासा ॥ ऋषे
श्वर काम धेनु बिस्तारा ॥ और ऐराव
ती हरित दरबारा ॥ कल्प बृक्षका तहाँ
ठिकाना॥पाप नहीं तहाँ रती समाना॥
देवता देव अनेक तह पेखे ॥ देव प्र
तिपाल करत जो देखे ॥ रंभावति
नृत्य तहाँ करई॥शोभा बनि तहाँ अबर
रहई ॥ येही अम्रावति केर परमाना ॥
येही भेद तुम सुनो निधाना॥दछिनादि
शि यम पुरी रहोई ॥एक सहस्र योजन
बिस्तारि होई ॥ तहां जमराजा राजक

र भाई ॥ ते यमके नाम कहूँ समझाई ॥ चल नाम यम तक परवाना॥ कूर नाम यमकेर ठिकाना ॥ नल नाम यम भाषो भाई ॥ सूल नाम यम देउँ चिन्हाई॥ ईस नाम यम सो होय बखानी ॥ धर्म राय यम राज अभिमानी ॥ विपति नाम यम भये बरियारा ॥ आनन्द नाम यम तहां विकारा ॥ गन्ध नाम यम जीव सतावे ॥ विकार नाम यम ले भरमावे ॥ त्रिशूल नाम यम करे चवाई ॥ मुद्गल नाम यम दण्ड उठाई ॥ जो कोई जीव निज शब्द समाई ॥ करे द्वन्द पुनि तोइ न पाई ॥ मुसंड नाम यम बहुत अपारा ॥ जीव सतावे करे वसियारा ॥ हाथो हाथ जीव चबाई ॥ हा

ड खोड़ यम सासत दाई ॥ सुरति भंग यम होई विकराला ॥ जीव भुलावे न आय संभाला ॥ परमेश्वर नाम यम अधिकारी ॥ अंग नाम यम माया गन उचारी ॥ अग्नि बचावे देहि मे देही ॥ यही विधि जीव पुनि लेही॥ बिकार नाम यम किलकार कराई ॥उपडि उपडि जीव ले जाई ॥जो ज्ञानीके हृदय समाई ॥ तहांसे कर दरद लगाई॥काल यम कलिपत होई॥दिलमें पैठि जाय पुनि सोई ॥ ज्ञानी होयके गाल फुलावे ॥ त्रास नाम यम मध्य दिखावे॥ निर्दई नाम यम निंदा ठाने॥गुनी और साधू नहि माने॥करेघात पुनि जीव छलाई॥गुरू हीन जिव निर्फल जाई॥यही नाम यम अहै सा

रा ॥ ले जीव डारें नरक मँझारा॥ यक्ष नाम यम आहि अधिकारा॥ले जीवनका करे अहारा ॥ गुस्सा नाम यम देउँ चिन्हाई ॥ धमरदास सुनो चित लाई ॥ मन भंग यम मनको भंगे ॥ चार गुप्त दोय लेखा मंगे ॥ येते यम जो रहत है भाई॥ सो हम तुमको दिया बताई ॥ येते यमपुरी का प्रवाना ॥ कहा भाषि तुम सुना निदाना ॥ पश्चिम दिशा वृष्णावति पुर भाई॥ राजा राज करत अधिकाई॥ पंच सहस्र योजन विस्तारा ॥ ताका धर्मनी कहूं विचारा ॥ सुमेरु में बरतत है भाई॥छयानवे कोटि मेघ रहाई ॥ जबहीं मेघ पुनि बसे सोई ॥ सो जल आय समुद्र कहँ होई॥ त्रितिय

बृष्णावती पुर विस्तारा॥सो मैं तोसो कहा विचारा ॥ ना सुमेरुके उत्तर दिशि भाई ॥ आलंका पूरी तहाँ निर्माई ॥ सोलह सहस्र योजन (आलंकापुरी) परवाना ॥ कुबेर राज करत सब जाना ॥ सब मेघ तहाँ नित्य रहई ॥ आलंका पुरीमें धर्म निर्बहई ॥ पाप काटिके वाहेर डारा ॥ यही अलंका पुरी को बिचारा॥ चार पुरी जेता परवाना ॥ सो हम तुमसे कहूं बखाना ॥ जलते समीरकी गति रहाई ॥ तहाँसे पवन निसि बासर धाई ॥ उदयाचलपर्वत तहाँ है भाई ॥ तहाँका भेद कहूँ समझाई॥सूर्य उदय तेहि ठाम करावा ॥ताका भेद कोइ बिरला पावा ॥

साखी।

कहैं कबीर धर्मदाससो, तुमसे कहूँ

विवेख॥ सूरज चाल निज भाखउँ,सत्त सत्त कर लेख॥

चौपाई।

सूरज चाल संध्या लग सोई॥ ताका मरम न जाने कोई ॥ वर्ष सहस्र दो जितना चलई ॥ इतना एक निमिषमें निर्बहई ॥ आँखके पलक निमिष एक होई ॥ ताका मरम न जाने कोई ॥ इतनी सूरज चलना प्रवाना ॥ धर्मदास तुम निजके जाना ॥ लक्ष योजन ऊँचा रहाई ॥ अलंका पुरी मध्यमें आई ॥ वरुणावति पुरी और सो होई ॥ सुरज चाल निज भाष्यो सोई॥ ताते आकास येता प्रवाना ॥ तीन भेद कहों निर्वाना ॥ नौ पदम अडतालीस लाखा ॥

तील चोवीस खोहोनी भाखा ॥ बहत्तर अरब सत्यानव कोटी ॥ पैसट लक्ष पंच हजार बेखोटी ॥ इतना जोजन आकास प्रवाना ॥ इतना जोजन बिस्तारहिं जाना ॥ इतना जोजन आकास है भाई ॥ ताते आकास अस्थान निर्माई ॥ अब एकवीस ब्रह्मांड सुनाऊँ ॥ भिन्न भिन्न सब कहि समझाऊँ ॥ भूमिते अंतर सूर्य रहाई ॥ तीन भेद भांखों अर्थाई ॥ एक लक्ष जोजन बिस्तारा ॥ सूर्य मंडलका कहूं विचारा ॥ एक लक्ष जोजन बिस्तारा ॥ चंद्र मंडलका कहूं बिचारा ॥ एक लक्ष जोजन बिस्तारा ॥ मंगल मंडल का कहूं बिचारा ॥ मंगल मंडलते बुध रहाई ॥ एक लक्ष जोजन

ऊँचा है भाई ॥ बुध मंडलते वृहस्पति ऊँचा आना ॥ एक लक्ष जोजन प्रवाना॥बृहस्पति मंडलते शुक्र है भाई ॥ एक लक्ष जोजन ऊँच रहाई ॥ शूक्र मंडलते शनि मंडल रहाई॥एक लक्ष जोजन ऊँचा भाई॥शनिश्चरते नक्षत्र है भाई ॥ एक लक्ष जोजन ऊँचा रहाई॥ नक्षत्रते ब्रह्मपुरी है नीका॥ एकलक्ष जोजन ऊँचा टीका ॥ ब्रह्म पुरी ऊपर शिवपुरी रहाई॥एकलक्ष जोजन ऊंचा बताई॥ता ऊपर शीव पुरी स्थाना ॥ एक लक्ष जोजन ऊंचा निदाना ॥ विष्णु पुरीमे धर्म बिचारा ॥ पाप काटके बाहेर डारा॥ विष्णुपुरीसे सप्तऋषी बखाना॥लक्ष जोजन ऊँचा निदाना ॥ लक्ष जोजन ऊँचा

है भाई ॥ सप्तऋषेश्वरपर नलपंची रहा
ई ॥लछ जोजन ऊँचा है भाई॥नलपंछी
ऊपर अनतपंछीरहाई॥एकलक्ष जोजन
ऊँचा है भाई॥अनलपंछीपर जठर पंछी
रहाई ॥ एक लक्ष जोजन ऊँचाहै भाई॥
जठरपंछीऊपर गरुड पंछी रहाई॥ एक
लक्ष लक्ष जोजन ऊँचा भाई॥गरुडपंछी
पर सुन्नकाल है भाई ॥ सुन्नकाल ऊँपर
पद्मासन निवासा ॥लछ योजन ऊँचा प्र
कासा ॥ पद्मासन ऊपर रुद्रआसन है भा
ई ॥ लच्छ योजन ऊँचा रहाई ॥ रुद्रा
सन ऊपर ब्रह्मासन निर्माई ॥ एकलक्ष
योजन ऊँचा समाई ॥ब्रह्मासन ऊपर
सिंघासन मंडा॥ एक लक्ष योजन ऊंचा
है खंडा ॥ सिंहासन ऊपर एक है अं

डा ॥ एक लक्ष योजन ऊंचा मंडा ॥ अं
ड ऊपर दंड विस्तारी॥ लच्छ योजन ऊं
च सवांरी ॥ दंड विस्तारि ध्वजा अनु
सारी ॥ लछ योजन ऊपर विस्तारी ॥
ध्वजा पर सुन्न निरंजन कला ॥ लछ
योजन ऊंचा भला ॥ ध्वजा पास नाराय
ण भोला ॥ वाकी सुमरन पलमें खो
ला ॥ ता ऊपर अलख पुरुष प्रवाना ॥
विष्णु स्वरुपा पौन निदाना ॥ यहि
देव पुरुष अगम अपारा ॥ ताको को
इ न करे विचारा ॥ देवता शब्द मन्त्र त
हां करे ॥ आँखन देख कछु नाही परे ॥
सर्व न्याय है पुरुष पुराना ॥ ऐसा पु
रुष अखंडित जाना ॥

साखी।

कहेकबीर धर्मदाससे, तुमसे कहूँ पु

कार ॥ अब वंशावली भाषूँ, हिरदे करो विचार ॥

चौपाई।

प्रथमहीं आदि एक पुरुष १ ॥ आद पुरुषके महाविष्णु २॥ महाविष्णुके रानी सुभ अंजनी ३ ॥सुभ अंजनीके पुत्र अँधकार४ ॥ अँधकारकी रानी स्वाती गयाती ५ ॥ स्वातीगयातीके पुत्र हुये तीनबंधु ६ ॥ प्रथम बंधुके पुत्र जलसमुद्र ७ ॥ जलसमुद्रके पुत्र अनिल ८ ॥ अनिलकी रानी सावित्री ९ ॥ सावित्रीके पुत्र सदा सुंदर१० ॥ सदा सुंदरकी रानी सोरह शक्ति११॥सोरह शक्तिके पुत्रईश्वर१२॥ईश्वरकी रानी त्रिपुरा शक्ति१३ ॥ त्रिपुरा शक्तिके पुत्र केशव १४॥केशवकी रानी गौतमा देवी१५॥

गौतमा देवीके पुत्र वाम ऋषि १६॥ वाम ऋषिकी देवी हीरारानी १७॥ हीरा रानीकेसुत भौम ऋषि १८॥ भौम ऋषि की रानी मध्यमा १९॥ मध्यमाके सुत ब्रह्मापुत्र २०॥ ब्रह्मापुत्रकी रानी ब्रिंदादधि २१॥ ब्रिंदादधि के पुत्र कश्यप २२॥ कश्यपकी रानी चौदह २३। २४॥ तासे उत्पन्न सकल संसारी॥ कश्यप गोत्र अहे अति भारी॥

प्रथम रानी अदिती॥ ताके पुत्र तेतीस कोटि देवता॥ दूसरी रानी दिती २॥ दितीके पुत्र दैत्य दानव ३॥ तीसरी रानी कुदिती॥ ताके पुत्र नौ कुली नाग॥ चौथी रानी खेईता ४ ताके पुत्र तीन अरुन, गरुड, ऐरावती॥ पांचवी रानी सु

वर्नी ५ सुबरनाके पुत्र नौ लक्ष नक्षत्र॥
छठी रानी समावती ६ ॥ समावतीके
पुत्र चंद्रमा ॥ सातवी रानी सुलताना
देवी ७ ताके पुत्र सूर्य नारायन ॥ आठ
मी रानी कुसशिला ८ ताके सुत अष्ट
कुली पर्वत ॥ नौमी रानी मेघनंदी ९ ॥
ताके पुत्र छानवे कोटि मेघमाला ॥
दशमी रानी पद्मावती १०॥ ताके पुत्र
अठ्याशी सहस्र ऋषि ॥ ग्यारवी रानी
रूपवती ११ ताके पुत्र आठारह भार
वनस्पति ॥ बारहवी रानी तेजता १२
ताकी पुत्री चौसठ योगिनी ॥ तेरहवी
रानी रूपमाला १३ ताके पुत्र चार
खानि ॥ इति वंशावली ॥

अब चारों जुगका सुनो बखाना ॥स

त १ त्रेता २ द्वापर ३ कलिजाना ४ ॥ सत्रहलक्ष अठाविस सहस्र जाना ॥ यह तो भया सत जुग प्रवाना ॥

चौपाई।

सत जुगमें आवतार है चारा॥मच्छ, कच्छ,नरसिंह,बाराह ४॥ सूर्य पर्व भये सहस्र छतीसा ॥ चंद्रपर्व भये सहस्र चालीसा ॥ मनुष ताड एकवीस प्रवा ना ॥ आयुर्वल एकलक्ष प्रधाना॥ सत्त ही सत्तहै परवाना ॥ सत बचन पर चले निदाना ॥

साखी॥

सत्त माता सत पिता, सत्त बिना नहि ठान ॥ कहे कबीर धर्मदाससो, एकहि सुरति समान ॥

चौपाई।

स्त्री पुरुष सत्य सब भाखै ॥ तीर्थ नैमिषारण्य चित्त राखै ॥ साक्षीदेवी ब्रह्मानी नाम ॥ पुन्य बीस पाप नाहि ठाम ॥ एक बार बोवे जो कोई ॥ सात बार लूने पुनि सोई ॥ सत युग राजा दस भये भाई ॥ राजाके नाम भाखूं चित लाई ॥ प्रथम मानधाता प्रमानी १ ॥ राजा दुंदुमल के चलत निसानी २॥ राजा भीम कहो बखाना ३ ॥ राजा ईख अहै प्रवाना ४॥ राजा बली राज बड कीना ५॥ राजा हरीचंद्र दोने चीना ६ ॥ राजा मीष्ट राज सभा जीती ७॥ राजा प्रसत कह्यो नीती ८॥ राजा कपिल कहावे सोई ९॥ राजा कपालभद्रतव होई १० ॥ सत

जुग राजे येते प्रवाना ॥ येता तुम सो कहा बखाना ॥ त्रेता जुगका अव कहूं बखाना ॥ बारा ॥ लक्ष नव सहस्र प्रमाना॥ त्रेता मे अवतार भये तीनी ॥ तिनकर नाम भाखूं धर्मनी॥ वामन अवतार प्रशुराम और राम भये ॥ सोरा सहस्र सूर्य पर्वत भये, चंद्रपर्व सहस्र तीस दिढाई ॥ मानुख ताड चौदा प्रवाना ॥ अरवल दश सहस्र दिडाना ॥ स्त्री पुरुष ते सातवार ॥ तीरथ पोहोकर ॥ देवी सरस्वती ॥ पुण्य विसवा सोलह ॥ बीसवा चार पाप निर्माइ ॥ बाचा बोल फीर जो दीना ॥ जुग एक ही बातमें चीना ॥ एक वार बोवे जो कोई ॥ तीन बार लूने पुनि सोइ ॥ त्रेता

जुगमें राजा चौविस॥प्रथम राजारघु भ
ये अतीराउ १॥ राजा उंडकाल करठाउ
२ ॥राजा अंध कूप कहूं बखानी ३॥
राजा की रषित तहां सहिदामी४॥रा
जा त्रिकाल कहूं प्रचंडा ॥ ५ राजा रो
हितके बखानूं अंगा ६ ॥ राजा रुपमु
कुट कहो पुकारी ७॥जाके दान पुण्य
अतिभारी ॥ राजाधर्मांगद प्रवाना८॥
राजा बल चकवे थाना ९ ॥ राजा सह
स्त्र बाहुँ बखाना१०॥ राजा सत्त सोहे प्र
भाउ११॥राजादिलीप साहेव बड राउ
१२॥राजा आलेप आहे तेहि ठाउ१३॥
राजाकथ नाम है जगमाहीं१४॥राजा
जनक कहूं बखानी१५॥राजाके राज म
हा सुखदानी॥राजा भुक ऋपि बडे प्र

चंडा१६॥राजा जै देहो होवे तेहि खंडा १७॥राजा इंद्र आहि आनुसारा१८॥राजा बीस्तीर तेही अपारा१९॥ राजा अजपाल चकवे राउ २०॥ राजा दशरथ हे तेहि ठाउ२१॥राजा रामचंद्र निर्मायेउ२२॥राजा अष्टबलतहाँ भयउ २३॥ राजा शक्ती कुमार ताहा भयउ २४ ॥ त्रेता जूग येता प्रवाना॥ आब द्वापरके सुनो बखाना॥ आठ लाख चौसठ हजार द्वापर परवाना॥ द्वापरमें दो अवतार भये भाई॥ताका नाम कहूं समझाई॥कृष्ण और बुध आवतारा॥तिन कामे तुमसु कहूं बिचारा॥वारा सहस्र सूर्य पर्व भयऊ॥वीससहस्र चंद्र पर्व निर्मयऊ॥मानुखसात ताड प्रवाना॥ आरवल एक सह

स्त्र द्रिढाना॥ स्त्री पुरुष ते बार तीन॥पुत्र जो बीसवा आठ बखानी ॥ बारवा विसवा पाप जो कही ॥ येही चाल द्वापूरमें सही ॥ एकबार बोवे जो कोई ॥ बार दोय लूने पुन सोई ॥ तीरथ कुरुक्षेत्र दे च मुंडा॥राजा भये पचीस पचीस खरारी॥ प्रथम राजा शाम होय बल वीरा१ ॥राजा नील कहूं अति नीका २ ॥ राजा उग्र पुरुष३राज का फीका ॥ राजा नखोसहुआ अतिनीका ४ ॥ राजा बीर भये ते ठाउ ५॥ राजा मान चंद्र प्रवाना ६ ॥ राजा सती बात निधाना ७ ॥ राजा चित्र बंधु अति ज्ञानी ८ राजा विचित्र कहूं बखानी ९ ॥राजा बित्र सतनके राउ १० ॥ राजा पुंडरीक धर्म के ठाउ

११ ॥ राजा धनुर्धारी आर्जुन जानी १२॥जाके दान पुण्य अधिक बखानी ॥ राजा जन्मेजय कहूं विस्तारी १३॥ राजा परिक्षित राज अधिकारी १४॥ राजा महारीदुपतनामा १५॥ तीन के धीरतेहि ठामा ॥ राजा धूंदुरमल कहाई १६॥ राजा सहस्रबाहु तहां र हाई १७॥ राजा हारीमें कहूं बखानी १८॥ राजा चंद कहूं अनमानी १९॥ राजा वेन चकवे कहाई २०॥ राजा बछराज ताहां राहाई २१॥ राजा क रणदान अधिकारा २२॥ राजा धर्मदे व युधिष्ठिर सारा २३॥ राजा दुर्योधन बंधू बीरोधक है २४॥ येतेराजा द्वापर में कहे ॥ अब कलिजुगका कहूं विचा

रा ॥ धर्मदास सुनो निजसारा ॥ चार लक्ष बत्रीस हजार कलजूगके भाई ॥ सूर्य पर्व सहस्र एक द्रिडाई ॥ चंद्र पर्व सहस्र दोय कहावे ॥ मानुख ताड एक दिडावे ॥ साडेतीन हात आपने हाता ॥ तुमसे भेद कहूं विख्याता ॥ आखल वर्ष सवासौ प्रवाना ॥ विरला कोइ कोइ जाय निधाना ॥ स्त्री पुरुष एक है बारा॥तीरथ गंगादेवी शारदा॥धर्म जोग कहे बिसवाचारा ॥सोलह बिसवा पाप अधिकारा॥एकवार बोवे जो कोई॥ करम धरम लुनेपुन सोई॥गुरूधूत सिष्य कुँजानी ॥ सिष्य धूते गुरुकू पहिचानी॥

साखी।

कहे कबीर दोनो गहे, ऐसा सहे संताप॥

धूताधूती चले सब, न्यारा रहे सोआप॥

चौपाई।

शिष्य धूते गुरु निंदाकरही॥ छांडी राह कूमारग परही॥ यहे कलजुगका कहूं बखाना॥ कलजुगराजाके मैंभाषूं नामा॥ राजा भये छबीस नीधाना॥ प्रथम राजा शालीवाहान कहूं राई १॥ राजा सरनी कहावे ते ठाई २॥ राजा इन्द्रेखा बडा राउ ३॥ राजा परशोतम तेही ठाउ ४॥ राजा हारीहरन कहूं अनमानी ५॥ राजा प्रभु भये उत पानी ६ ॥ राजा सींघ राज वडेज्ञानी ७॥ राजा अच्छ भयउमानी ८॥ राजा हर्षने हर्ष बढावा ९ ॥ राजा वीक्रमाजीत दृढावा १० ॥ राजाकी

कमल जीत की उतपानी ११ ॥ राजा बीगत प्रगटे आनी १२ ॥ राजा मही पाल महा ध्यानी १३ ॥ राजा पानी खपान अति ग्यानी १४॥ राजा सुरपान बडे राउ १५ ॥ राजा पुँझ तेहि विस्तारा १६ ॥ राजा भोज बुद्धि अधिकारा १७ ॥ राजा मगर पान निर्माउ १८॥ राजा त्रीपान करे गाउ १९॥ राजा शोभीक ज्ञान बिहूना २० ॥ राजाकेसरी साहेब बडा पुना २१ ॥ राजा उंग बीरोध अधीकारा २२॥ राजा नल बडा दील वीस्तारा २३ ॥ राजापृथ पृथ्वी रच पाला २४ ॥ राजा उदय चन्द्र तीन बड ख्याला २५ ॥ यते राजा कलजूग प्रवाना ॥ और राजाकी गिनती नहि आ

ना॥ बंदी राज त्रीकमारानी ॥ और न दया करी निधानी ॥ राजा भोज कुम तिका हिना ॥ निज घर जोया बतीसो लिना ॥ एते कल जूग करे अभेउ॥पीता पुत्रसे करे भेउ ॥ आगे भेद बताउँ सो ई ॥ चेला गुरु अपराधी होई ॥ गुरुको चीन अंतर पहिचानी॥ले आधारगुरु कूँ नहि मानी॥ सो जोगन रहे आधेर उर॥ चेला परे नरक भरपुर ॥ विप्र जो वेद विवर्जीत होई ॥ विप्र कल जूगके स्वा र्थी होई ॥ स्त्रीकाल वडी पुर न जानी ॥ स्त्री उर मुख होय वखानी ॥ घटमें दुवि धा वहूतक भावे ॥ सतगुरु शब्द गुरु दहावे ॥

साखी ॥

सतगुरु शब्द खाली परे, आप होय

सोहान ॥ कहे कबीर सो मन मुखी, कलजूगके वर्तमान ॥

चौपाई।

का भया जो सुने पुराना ॥ कहा की सीका नही माना ॥ गाफील गर्भ आप दील धरहीं॥ऐसी रीत सबनकी परहीं॥ सतगुरु शब्द बिना मुक्ति न होई ॥ कोटिक ज्ञान कथे जो कोई ॥ बहुतक गर्व कायाका करही ॥ गुरुसे फिरी नरकमे परही ॥ ग्यानी होई गरब नही छोरे ॥ कैसे शब्दसे करे निहोरे ॥ ब्राह्मण बेद की निंदाकरई ॥ छत्री होय संग्राम न सहई ॥ कलजूगमें ऐसी होय भाई ॥ अपनी आपनी सब करे बडाई ॥ बालक पुरुष को बुध बताई ॥ बीलखे मन कूँ भीक मंगाई ॥कल जूग ऐसी बात प्या

री ॥ बापको पुत्र देवै गारी ॥ निंद्रा कल
जुगमें बोहोत कराई॥शब्द ग्यानको को
इ नहीं चाही ॥ कलजुगमे ऐसी होय
वाता ॥ बापको मार जरेगा पूता ॥ कल
जुग कन्या बेचे बापा ॥ ऐसा कलजुग
चलेगा पापा ॥ करि करनी अभिमान
जो धरही ॥ यह बीध प्रानी नरकमें पर
ही॥गंगा गीता गोमती करे सही ॥ सुने
शब्द श्रवन तेनही ॥ शब्द चीन्ह जो ग्र
हन करे॥ सो प्रानी भव सागर तरे॥कोई
सहस्र मध्ये होवे सूरा ॥ सहस्र मध्ये
पंडित पूरा॥कोटिन मध्ये एक जोगीश्वर
राहाई ॥ कोटिन मध्ये ग्यानी भाई ॥

साखी।

कहे कबीर धर्म दाससे, बचन एक
खाली नही॥सतगुरुका उपदेश ॥ इति०

श्री.

अथ श्रीग्रंथदशमात्रा ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,-

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

आदस्तोत्रं महामंत्रं ॥ उग्रज्ञानं ॥ मूलसिद्धांतं ॥ सुमिरन ध्यानं ॥

श्लोक।

मुनिंद्र वाक्य ॥ प्रजंतप्रग्यासुर्तसुत्रता ॥ चंचलातस्य तथैवच ॥ मूलसिध्यं स्यग्रामेखं ॥ छंदप्रछंदाउक्तितं ॥ १ ॥ दशमात्रंयथाजुक्तं ॥ तस्यप्रोक्तंक्रोतीन

रा ॥ मुलसिध्यभेदंगती ॥ २ ॥ पृथ्वी भोग्यतेसत्यंसुर: ॥

टीका-मूल एकसो कहत है ॥ सिद्ध दो सों कहत है ॥ ग्राम चारसों कहत है ॥ छंद आठसों कहत है ॥ प्रछंद सोरासों कहत है ॥ उक्त बत्तीससो कहत है ॥ मूल एक समर्थसो कहते है ॥ सिद्ध दोय सुर्त शब्दसो कहत है ॥ ग्राम चार गुरुसों कहते है ॥ छंद आठ सिद्ध सों कहते है ॥ प्रछंद सोरा अन्ससों कहत है ॥ उक्त बत्तीस अक्षरसों कहते है ॥

श्लोक।

अविगतो अस्थिरो सखितो ॥ निरालभं निरविकारनं ॥ सुर्त रूपां भ्रिंग शब्दं ॥ द्रिगतस्यं चत्रोगुरु ॥ ३ ॥

टीका-अविगत समर्थ तीनसे दोय स्वरूप भये एक सरूप रूप सुर्त॥एक सरूप भ्रिंग शब्द॥दुसरी सिढी चार गुरु ॥ प्रथमे तत्तगुरु ॥ दुसरे सिस्टगुरु ॥ त्रितीये ग्यानगुरु ॥ चतुर्थे सुक्रितगुरु ॥ पंचमे सुर्त शब्द है सिढी तीसरी प्रकाशनी ॥

श्लोक।

प्रथमे गुरुतत्वं प्रकाशं ॥ पंचस्वरूप विस्तारकं॥जलपृथ्वी अग्नी मारुतं ॥ आकाशमय गुणकारणं ॥ ४ ॥ द्वितीये गुरु सिस्टवाछं॥सत्यसिद्धप्रवर्तते सत्य नाम सतगुरुसत्यं ॥ गुंगपुरुषलघुक्रांतियं ॥ ५ ॥ तृतीये गुरु ज्ञान मुक्तियं ॥द्रिग चत्रोबिंव अक्षरं ॥ अब शास्त्र ग्रंथ बिदुं ॥ अक्षर बिंदु निखेयं ॥ ६ ॥ चतुर्थे गुरु मुक्त कारणं॥ सर्व जीव सुख दायकं॥आज्ञ शब्द निरा लंभं ॥आस्थीर रूप सो संखीतं ॥ ७॥ इति सत् गुरो सत्य स्वरूपंचै।सत्य सिध्यंप्रवर्तते॥गुंग पुरुष लघुक्रांतियं॥तस्य श्रेष्ट न विद्यते ॥८॥अस्टांग त्रो में बिंव पुत्रो ॥ नऊसिद्ध षोंडससुतं॥बानी अंकूर यदा जुगती॥

जुगती सत्य दिष्ट कारि कर अउतं ॥ ९॥
प्रथम पुरुष अक्षरजुगतं ॥ तत्वमय गुण
धारणं ॥ अस्टांग त्रौमे शक्ती ॥ तस्य इ
च्छा तस्य कारणं॥१०॥क्रमतस्य जोगे
नां॥वीधीउक्तोइस्ट चतुर्थक॥११॥साध
सिध्यं ब्रह्मसर्वग्यं ॥ छरअच्छरसाधा
रण॥कोट जोनी जीव तस्य उक्तो॥महि
तत्व प्रवर्तते॥१२॥जुक्ती सर्व सिस्टतस्यं
गुरुमंत्र विसेषितः ॥१२॥ ब्रह्मा विष्णु
माहादेवं॥ अच्छर ब्रह्मा जुगतीं ॥१३॥
वेदसास्त्र विद्या व्याकरणं ॥ अस्टादशो
पुराणीयं ॥ नौत्मं ग्यानं विचार अस्यं॥
अच्छरवाक्यं सोयंसिद्धी ॥१४॥ भोन
चतुरदशंतस्य॥ आग्यांतो कचर्तूविस्ता
रकं ॥ निर्मोहो जीवंतस्य ॥ काला रूप

क्रीडाहंत्व तस्यं ॥ १५ ॥ इति श्रीस्टी धारणं ॥ तस्य दशमात्रा विध्यते ॥ येते सधारणं तस्य॥दीर्घमात्रा विद्यते॥१६॥ जुगती तस्यं रूपंचै ॥ पृथ्वीतस्य भुवने सुरं ॥ सतगुरु सत्य वाक्यंचै ॥ सत्यवा क्यं सुक्रितं ॥ १७॥

सुक्रितोवाक्य ॥ प्रजंतप्रग्या सुरती सुमिताः ॥ चंचला पंचभेदयं ॥ दशमा त्रा प्रकाशतस्यं ॥ पंचतत्व प्राकाशियं ॥ १८ ॥ जुग्तनाभेदं शास्त्रग्यानं ॥तस्य उक्तोप्राणामियं ॥ जिवलोकं आहंभेदं॥ तस्यसिध्य सुनिद्रयं ॥ १८ ॥

सूनिद्रोवाक्य ॥ सत्यग्यानं महाप्रो क्तं ॥ सूक्रितं जीव सो अस्थिरं ॥ सत्य शब्दं जपेत नित्यं॥आवागवनना भ्रमते ॥ १९ ॥ संमलांतू जग्यं माहाभेदं ॥ स

त्यंहंस स्वरूपकं ॥ माहापुरुष प्रकाश तत्वं ॥ समलां तु भोग्य षोडससुतं ॥ २० ॥ चतुचौका माहाभेदं ॥ चत्रु गुरु प्रकाश्यं॥चत्रुग्यानं रूप निरूपणं तस्यं तदात जीव इच्छा आहं ॥ २१ ॥ ब्रह्म ग्यानं त्वचाशुद्रं ॥ अनभवग्यानं तथैव चः ॥ सुर नरमुनि प्रोक्तं ॥ आवा गवन सो भ्रमते ॥ २२ ॥ दशमात्रा विहून स्यं ॥ गर्भवास पुनःपुनाः ॥ मूलसिध्यं प्रजंतउक्तं॥आवागवन सो मुच्चते॥२३॥ लोकअस्थान स्वेतप्रकासं ॥ महा पुरुष परि पूर्णं ॥ सूर्त शब्द माहाकायं सत्य सुकृत सा रूपयं शिवशक्ति भिन्न रुपियं ॥ २४॥ जीवलोकं महाभेदं ॥ अविगतो रतासो समर्थं ॥ सत्य सिध्य शब्द लोकं ॥ श्रोता तस्यं सूक्रितं ॥ २४ ॥

सूक्रितो वाक्यं ॥ मिथ्या जिव लोकं बिश्रेतू ॥ कायायां तू परिपूर्णं ॥ गम्य अगम्य महा भेदं ॥ मूल सिध्यं सो निं रूपणं ॥ २६ ॥ पंचजुक्तं कायानास्तीं॥ दिव्य द्रिष्टी बिसेषतः ॥ किंद्रिस्टां चै मार्गोंसिध्यं॥ सत्यवाक्यं श्रोताहं॥ २७॥

मुनिंद्रोवाक्य ॥ सुक्रित कथा अपूर्वं ॥ द्रिष्टांतसत्य शब्दयो सिध्योहं ॥ काया अंतू प्रजत जुक्ति ॥ सूक्रितं किं संसियं ॥ २८ ॥ सपनं अत्रयदा जिवं ॥ सर्वद्रिस्टी परीपूर्णं ॥ जाग्रतं मनो रथं सूरतीं॥ अतु द्रिष्टीनसंसयं ॥ २९॥ कायानास्ती छररूपं ॥ आत्र शब्द कायाहं॥मुक्तिगुरुद्रिष्टीतस्यं॥सूर्तशब्द दिव्यरूपं ॥ ३० ॥ कायाबीरं माहाग्या

नी ॥ सर्व सिद्धी सुखदायकं॥तस्य प्रोक्तं नरानित्यं॥सत्यसिद्धसो नामं ॥ ३१ ॥

सुक्रितोबाक्यं ॥ काया क्रांती माहा रूपं ॥ सत्यसिध्य श्रोताहं ॥ इच्छातस्यं प्रकासत्यं ॥ बिग्यानं बाक्यं सुनिद्रियं ॥ ३२ ॥ काया अंतु जिव भेदंचे ॥ सो मनोरथकी अस्थीरं॥ मूलमात्रांतत्वं जुक्तं ॥ जीव भेदंचे धारणं ॥ ३३ ॥

सत्य सिध् मुनिंद्रोवाक्य ॥ काया भेदं तस्ये जुक्तं ॥ जीव तस्ये प्रकासियं ॥ मात्रा भेदं माहा ग्यानं लोक दीप तथैवच ॥ ३४॥ प्रथम मूल सिध तस्यं ॥ अविगतो रतासो समर्थं॥ अकार उक्त तो माहाबीजं ॥ उग्रशब्द परिपूर्णं ॥ ३५ ॥ द्वितीय मात्रा सुतेश

ब्दं ॥ मूल ग्यानं चेउबारणं ॥ दिव्य द्रिष्टी माहारूपं ॥ तस्यमै सत धारणं ॥ ॥ ३६ ॥ तृतीय मात्रा सतगुरु नामं ॥ सत्यसिध्य लघु क्रांतियं ॥ कोट ग्यानं महा वानी॥गुरुसैनं प्रवर्तते॥३७॥मात्रा चतुर्थं माहाभेदं ॥ निरपवनटक सारियं॥ कला भेदं ज्योति तस्यं॥ सहस्र स्वरूपं सोहं सिद्धि ॥३८॥ पंच मात्रा अतित जूक्तं ॥ बाक्य सत्यं सोहं सिद्धी ॥ ब्रह्म ग्यानं नउक्रीडा ॥ तत्वमै गुण धारण ॥ ३९ ॥ षस्ट मं मात्रा ब्रह्म जीवं॥ अच्छर इच्छाकारणं ॥ मोहग्रामं चतुर्थ भेदं ॥ तस्यग्यान अनुभवं ॥ ४० ॥ सत्य मात्रा निर्मोहं ॥ सीस्टसकल प्रवेशियं ॥ त्वचा ग्यान रताजुक्तं ॥ अशो

ख शोखं सो ग्यानं ॥ ४१॥ आस्टये मा त्रा त्रिधाभेदं॥ त्रीगुनमे इच्छा कारणं॥ सर्वशाखा शुद्र ग्यानं ॥सुर नर मुनि वि ख्याटनयं ॥ ४२ ॥ नौतन मात्रा तत्व नाउ ॥ श्रिष्टी सकल परिपूर्ण ॥ सर्व बु धी यदा प्राणी ॥ सर्व इच्छा कारणं ॥ ४३ ॥ दशमात्रा तत्त सो ध्यानं ॥ काया प्रोक्तं सो सिद्धये॥ बीज तत्व मा हा ज्ञानं॥काया मुक्त सो मार्गये॥ ४४॥ दशमात्रा प्रकास सत्यं ॥ सोहं हंसा रूपयं ॥ लोक भेदं माहा शव्दं ॥ सुक्रि तो निहसंशयं ॥ ४५ ॥

सुक्रितोवाक्य ॥ काया भेदं माहा तत्वं ॥ सत्यसिद्ध सो नामियं ॥ शव्द सारं द्रष्टतत्वं ॥ सत सिधसो दया क

व्दं ॥ मूल ग्यानं चेउबारणं ॥ दिव्य द्रिष्टी माहारूपं ॥ तस्यमै सत धारणं ॥ ॥ ३६ ॥ तृतीय मात्रा सतगुरु नामं ॥ सत्यसिध्य लघु क्रांतियं ॥ कोट ग्यानं महा वानी॥गुरुसैनं प्रवर्तते॥३७॥मात्रा चतुर्थ माहाभेदं ॥ निरपवनटक सारियं॥ कला भेदं ज्योति तस्यं॥ सहस्र स्वरूपं सोहं सिद्धि ॥३८॥ पंच मात्रा अतित जूक्तं ॥ वाक्य सत्यं सोहं सिद्धी ॥ ब्रह्म ग्यानं नउक्रीडा ॥ तत्वमै गुण धारण ॥ ३९ ॥ षस्टमं मात्रा ब्रह्म जीवं॥ अच्छर इच्छाकारणं ॥ मोहग्रामं चतुर्थ भेदं ॥ तस्यग्यान अनुभवं ॥ ४० ॥ सत्य मात्रा निर्मोहं ॥ सीस्टसकल प्रवेशियं ॥ त्वचा ग्यान रताजुक्तं ॥ अशो

ख शोखं सो ग्यानं ॥ ४१॥ आस्टये मा त्रा त्रिधाभेदं॥ त्रीगुनमे इच्छा कारणं॥ सर्वशाखा शुद्र ग्यानं ॥सुर नर मुनि वि ख्याटनयं ॥ ४२ ॥ नौतन मात्रा तत्व नाउ ॥ श्रिष्टी सकल परिपूर्णं ॥ सर्व बु धी यदा प्राणी ॥ सर्व इच्छा कारणं ॥ ४३ ॥ दशमात्रा तत्त सो ध्यानं ॥ काया प्रोक्तं सो सिद्धये॥ बीज तत्व मा हा ज्ञानं॥काया मुक्त सो मार्गये॥ ४४॥ दशमात्रा प्रकास सत्यं ॥ सोहं हंसा रूपयं ॥ लोक भेदं माहा शब्दं ॥ सुक्रि तो निहसंशयं ॥ ४५ ॥

सुक्रितोबाक्य ॥ काया भेदं माहा तत्वं ॥ सत्यासिद्ध सो नामियं ॥ शब्द सारं द्रष्टतत्वं ॥ सत्त सिधसो दया क

रम ॥ ४६ ॥ किं प्रोक्तं माहाध्यानं ॥ सत् सिद्धं मुनिंद्रियं ॥ दया सिंधु सर्व जामि ॥ प्रणाम्यं सर्ध कीम करो तियं ॥ ४७ ॥

श्री मुनिंद्रो वाक्यं॥ अविगतो भेदं महा वाक्यं ॥ सत्य सत्य सोई सुकृतो ॥ कायाहंसंपरमं त्यागी ॥ सत्य चरण सो द्रिस्यं ॥ ४८ ॥ अष्ट गात्रे ज्ञान मूर्ती ॥ जोग सहस्र तस्य भेदं ॥ उग्र ग्यान बिउ न तस्य॥ सत्य चरनन नाद्रस्यते॥४९॥ शिवशक्ति भिन्यरूपं ॥ प्रेमभक्ति सो दुर्लभं ॥ कोट मध्ये यदा प्राणी ॥ सत भक्ति सौः विश्रेतं॥५०॥ तन बुद्धि निरालंभो ॥ मन कारण निह संषयं ॥ धन क्रोति दया धर्मं ॥ द्रश्यते च सार शब्दयो॥

॥५१ ॥ काया कर्म यदा प्राणी ॥ नित्य नित्य सो करमीयो ॥ सिद्धांत जग्यं मा हाधर्मं ॥ तस्य कर्म निःसंषयं ॥ ५२ ॥ मनकर्म निरा नित्वं ॥ शुभा शुभं तथैव च ॥ सतगुरु शेवा क्रोति नित्यं ॥ तस्य कर्म निःसंषयं ॥ ५३ ॥ जीवकर्म सुमिर ण नित्यं॥ सत्त जुक्त सो शब्दयो॥ दया शीलं क्षमा सत्यं ॥ तस्य कर्म निसं षयं ॥ ५४ ॥

श्रीसुक्रितोवाक्यं ॥ संसारसागरं मा हाजालं॥ किं मुच्चते सो सिद्धयो ॥ तप स्या शुरगं नरारुषी ॥ लछ लछ सो भ्रम ते ॥ ५५ ॥ आरती प्रकाशं माहा भेदं॥ महा तत्व सो इष्टये ॥ कीं धारणं क्रो ते प्राणी ॥ सत शब्द उपदेशियो॥५६॥

वेद शास्त्र व्याकर्णच ॥ चाष्टं दषा पुरा
णयो ॥ अष्टांग योगं चतुर्ग्यानं ॥ कीं
क्रोतिचं पृथी नरः ॥ ५७ ॥ भेदा आ
भेदां क्रोते तस्यं ॥ दुःख सुखं तथैवच॥
ज्ञान बुद्धी सर्वं लोका एवं अस्थाने त्र
स्थानकं ॥ ॥ ५८ ॥

सतसिंधोवाक्य ॥ बिना बुद्धी सर्वं
नास्ती ॥ अष्टांग योग चतुर्ज्ञानं जुरा
मरण माहादुखं लछ लछ सो भ्रमते ॥
॥ ५९ ॥ प्रजंत कीया आकार भेदं ॥
मूल शब्द सो धारनं ॥ अविगतो वाक्यं
उग्रज्ञानी॥कोटिमध्ये सो लभते॥६०॥
पश्चा बुद्धी प्रेमतत्वं मूल ज्ञानं पर्वतंते॥
सुर्त शब्द यथा भेदं ॥ तस्य हन्सा प्र
मोदतं ॥ ६१ ॥ सुर्ती बुद्धीच त्रजुक्तं॥

कोट ज्ञानंच लक्षणं ॥ तत्व नामं प्र
काशेनं ॥ अंक तस्य जीव अस्थि
रो ॥ ६२ ॥

सुमृथा बुद्दी माहावाक्यं ॥ अस्टा
सिद्दो विस्तारकं॥लघुं सिद्दं गंग पुरुषं॥
तस्य ज्ञाना टकसारयो ॥ ६३ ॥ चंच
ला बुद्दी पुरुष तस्य ॥ काल अन्स प्रव
र्तकं ॥ ब्रह्म ज्ञानं माहा भेद ॥ तस्य
हँसा प्रमोदय ॥६३॥ सुतभेधंगुंग पुरुषं॥
बुधकला आतिव्यं ॥ तस्य ज्ञानं ब्रह्म
भेदं ॥ पुरुस वाक्य सो अस्थिरं ॥६५॥
युक्तबुद्दी ऋछर ब्रह्म ॥ ऋनुभव ज्ञान
तथैवच ॥ ऋक्षर प्रकाशं सतनित्यं ॥ त
त्व शब्दसो सिद्दयो ॥ ६६ ॥ छररूपं
त्वचा ज्ञानं ॥ चत्रो बुध प्रजायते ॥ च

त्रु अन्स महाधीरं॥ जोग शक्ती बिस्तारकं॥ ६७॥ केवल स्वरूपं यथायुक्ती॥ आदली अन्स स्वरूपयं॥ मकारे तत गुनापांचं॥ शुद्ध्यान बुद्धिनास्ती॥ ६८॥ सिष्ट सर्वे यथा जीवं॥ काया कर्म प्रकाशियं॥ बीजग्यान सर्व बुद्धी॥ सत्यभेद समासंचरेतु॥ ६९॥

सूक्तिवाक्यं॥ आप्रम ग्यान महाभेदं॥ कोविख्यानं सत प्रभू॥ जुक्त प्रसनं माहाकार्थं॥ बीना भेद निखीदीयं॥ ७०॥ काया प्रोक्तं यथा जुक्ती॥ तस्य वाक्य निर्धारणं॥ काया आंतं तस्य द्रिष्टी॥ श्रोताहं मिच्छासदा रतु॥ ७१॥ भवभूतो माहा जीवो॥ तस्य परमारथ सिद्धियो॥ चरनासिव गतो प्राणी॥तुवचरणं च मुनिंद्रो॥७२॥

श्री मुनिंद्रो वांक्य ॥ कायाभेदं म हातत्वं ॥ गुजमंत्र सो प्रोक्तं॥ दिव्य ग्यान सर्व द्रिष्टी ॥ काया जुक्त सो मु क्तियो ॥ ७३ ॥ दशमात्रा लोक जुक्तं॥ एकादश शरीरयं ॥ प्रजंतबुद्धी समा ख्यातं ॥ सव्द श्रुति विशेषता ॥ ७४ ॥ शव्द श्रुति मार्ग भिन्नं ॥ शव्द सूर्त विख्यातियं ॥युक्तं वीरजपं मात्रा मेवं॥ मुक्तिमेव नेहे संसियं ॥ ७५ ॥

अर्थभेद ॥ त्रेता मध्ये सर्व मुनि समु ज्याय ॥तबके मुनींद्र कहाय ॥ खंड का या न खेदियं ॥ काया अंत सुनो सुक्ि त ॥ १ ॥ प्रथम काया अबिगत॥तेहिते सब जमाहे॥तेहि अविगत ते रूप सुर्त॥ और स्वरूप भृंगी शव्द भयो ॥ २ ॥

दुसरी मात्राका भेद सुनो॥ सुर्त और श ब्दते पांच गुरुभये ॥ तिनमें जेष्ट सत् गुरुहै॥सतगुरु सिंधुसरत॥ ३॥अजावन शब्दते सात सिध कीना ॥ तेहि सातों थाकाभै राखे ॥ तेई पिछे आजोर सूर्त॥ और सत् शब्द गुंग पुरुष निर्माइये ॥ ४॥ तीनो गुंग पुरुषते॥सेहज सुर्त और आग्र शब्दभये॥तेहि ते सोरा आतित भये ॥ तिनमें जेठे अचिंत है ॥ ५ ॥ तिने अचिंते प्रेमसुर्त ॥ और सोहंग शब्द भये॥तेहि शब्दते बत्तीस अक्षर भये ॥ तेहिमें जीव अक्षर जेठेहै ॥ ६ ॥ तेहि अक्षरते शक्तिसुर्ती ॥ और तत शब्द भये ॥ तेहिते चार माहा स्वरूप भये॥ तेहिमें प्रथम प्रेम सूर्त है॥ ७॥तीनके त्रि

गुन सुर्ती और मोहो शब्दभये ॥तेही में जेठे ब्रह्महै ॥तेही ब्रह्माते ब्रह्मवाक्य कीना ॥ तेहि ते सर्वश्रृष्ट भई ॥ तेहीका विख्यान सुनो ॥ ८ ॥ ब्रह्माकी श्रृष्टी जम चौदा भये ॥ सप्तऋषी भये और अठ्याशी कोट ऋषी भये ॥ विष्णुकी श्रृष्टी चौराशी धूत भये ॥ और तेतीस कोटी देवता भये ॥ अनंत कोट विष्णु भये ।। शिवके श्रृष्टी नौलख प्रेतभये ॥ और ग्रहभये ।। १० ।।नवनाथ चौराशी सिद्धभये तेहि पिछे सर्वश्रृष्ट भई ॥ और अविगतके दसप्रकार ॥ काया स्वरूप भये ॥ ११ ॥ और कायासें अग्यारा मात्राहै॥प्रथम मुख्यमात्रा है॥सो शब्द मात्रा है ॥ दूसरे स्वासा सोहंग मात्रा

॥ १२ ॥ तृतीये नेत्रनूर सत् गुरुमात्रा है।।चौथे श्रवण पुरुष मात्राहै।।पांच में त्वचाआतित मात्राहै ॥ षष्ठमें नाभी अ क्षरमात्राहै ॥ सप्तमेंहात कालमात्रा है अष्टम चरण गुरु मात्राहै ॥ नवमे हाड विंद सो देव मात्रा है॥ दशवे गुदासो धू त मात्राहै ॥ १४ ॥ अग्यारवी अग्रसो वस्त है तेही ते दशमात्रा भई ॥ सोई ब स्त अमोलहै ॥ तेहीकी जुक्त जो पावे॥ तो अविगतकाया देखे ॥ १५ ॥ जो जाग्रत गुरु होय तो॥ जीव अकारथ ना जाई ॥ इति मात्रा भेद ॥

श्लोक।

श्रीसुक्रितोवाक्यं॥ इति मात्रा ज्ञान विवेकं॥तस्य जुक्तो क्रोति नरः॥हंसराज स्वरूपंच॥कथं मुक्तः सिद्धयो ॥७६॥

श्रीसत् सिधोवाक्यं ॥ सत् शब्दं सु
मरन नित्यं ॥ सत्गुरु चरण नित्ये वंदि
ते ॥ सिध साध भेदगुहिजं ॥ प्रेम गति
नहे संसयं ॥ ७७ ॥ अविगत नाम पढं
ते नित्यं॥ अंग शब्द सो धारणं ॥ सत्य
रूप दर्शते नित्यं ॥ तस्य हंसासरोजकं
॥ ७८ ॥ लोक बेद परित्यागी ॥ लोभ
मोहो बिसारदकं॥ काम क्रोध विवर्जि
तं ॥ तस्य हँसा सरोजकं॥ ७९ ॥ धीर
ज ग्यान दयासत्यं॥ प्रेम प्रीत तस्य प्रि
यं ॥ निरख विचार विवेक क्षिमा ॥ त
स्य हँसा सरोजकं ॥ ८० ॥ अत्रनामं
सतगुरु तस्यं ॥ सत्य लोक विस्तारकं॥
द्रिस्यते दृढ भक्तिप्रणं ॥ तस्य हंसा स
रोजकं ॥ ८१ ॥ सुर्त विहँगम शब्द त

स्यं ॥ विहँगम सो नाम धारणं ॥ विहंग धाम विहंग बिरा ॥ विहंग हंसा सरोज कं ॥ ८२ ॥ सर्बभेद मथन तस्य॥ सर्ब ग्रन्थ और शास्त्रकं ॥ कारन बेद सहस्र जुक्ति ॥ तस्य हंसा सरोजकं ॥ ८३ ॥ मार्गों विख्यान जीवलोकं ॥ हँस गवन सो अस्थीरं ॥ समह्रांत पूजा समानि त्यं ॥ तस्य हंसा सरोजकं ॥ ८४ ॥

सुक्रितोवाक्य ॥ सत्यवाक्यं यथा प्रोक्तं ॥ सत्य शब्द सम्पूर्ण ॥ मार्गोंन विख्यान कृत्वा ॥ जीव भेद सो त्रितीयं ॥ ८५ ॥ जीव भेद परमारथ जुक्ति ॥ किं कर्म करोति नरः ॥ मुक्त वा सब्द स रूपंच ॥ सत सिध मुनिंद्रयो ॥ ८६ ॥

श्री मुनिंद्रोवाक्य ॥ ज्ञानभेदं अंस

ध्यानं॥सुनो सुकत सुरंजनं॥ मारग पंच विभेदानं ॥ सत्यजीव उग्र ते तस्यं ॥ ८७ ॥ पिपीलीका भुजंगो चैवं ॥ कपी मीन ततःपरं ॥ मारग विहंगम बिज्ञा नयो ॥ सत्यजीव उग्रते तस्यं ॥ ८८ ॥ मारग बीहंग मनुजं ॥ त्रिये लोके सुदुर्ल भम् ॥ अभ्यासं गुरुगात्वां ॥ सत्यजी वी उग्रते तस्थं ॥ ८९ ॥ प्रथम मारग वामचंद्रं ॥ जीव पूजा सो जुक्तियो ॥ सिमल्लांत जग्य महाध्यानं ॥ सत्यजी व उग्रते तस्यं ॥ ९० ॥ सर्वतीर्थ अस्ना नं कृत्वा ॥ कोती जोग तप पूर्ण ॥ चर ण तीर्थ प्रक्षालयं ॥ सत्यजीव उधृते तस्यं ॥ ९१ ॥ सर्वभेद प्रछायां च ॥ इं द्र जुक्तं समाभोग्यं ॥ सत्गुरो सत्

प्रसादांच ॥ सत्यजीव उग्रते तस्य ॥
॥९२॥ सर्वदान यथाजुक्तं ॥सर्वे धर्मप
रि पूर्ण ॥ पारस आगं माहादानं ॥ स
त्य जीव उग्रते तस्यं ॥ ९३ ॥ सर्वज्ञा
नं कोतिभिन्य ॥ सर्वतत्व निर्धारणं ॥
मूलशब्द यथाद्रिष्टी ॥ सत्यजीव उधृ
ते तस्य ॥ ९४ ॥ कोटी ज्ञानं पठंते नि
त्यं ॥ सर्व अर्थ सो कारणं ॥ उग्रबीजं
प्रोक्तं नित्यं ॥ सत्यजीव उग्रते तस्यं
॥ ९५ ॥ सर्व ग्रंथ असंख्यानं ॥ सर्व
वाक्य श्रोताहं ॥ सर्व मूल प्रेमजुक्ती ॥
सत्यजीव उग्रते तस्यं ॥ ९६ ॥ सर्वसा
धू प्रणामिहं ॥ सर्व गुरुतत्व दर्शयो ॥
मूलसिध साधजस्य ॥ सत्यजीव उग्र
तेतस्य॥९७॥ प्रोक्तं तदरूप तस्यं॥सव

दसुर्ती सिध सरबंग॥आवागवन भवेना स्ती ॥ सत्यवाक्य मुनिंद्रयो ॥ ९८ ॥ सबदसुर्ती माहाभेदं ॥ मुक्तमूल सो सि धयो ॥ मात्राभेदं प्रज्ञायंच ॥ सत्यवा क्य मुनिंद्रयो ॥ ९९ ॥ आभक्ष भक्षते नित्यं॥आबोल बोलतेनृत्यते॥अचलच लते नित्यं॥सत्यवाक्ये मुनिंद्रयो।१००। आदेख वस्त द्रिष्टीते नित्यं॥अपीवपीव ते सुरजनं ॥ निराशुन्यं शुन्यंशब्दं ॥ स त्यवाक्य मुनिंद्रयो ॥ १०१ ॥ रजविर जं सभाजुक्ती ॥ दिव्यद्रिष्टी सोद्रष्टं ॥ स र्वभाक्ति यदा प्राणी ॥ सत्यवाक्य मुनिंद्र यो ॥ १०२ ॥ दशमात्रा यथा भेदं नौत्म ग्यान विख्यानियं ॥ समह्रांतजग्य म हापूजा ॥ सत्यवाक्य मुनिंद्रयो॥१०३॥

सुकृतो वाक्यं ॥ सत्य शब्दं सत्य भेदं सत्य नाम विश्वासकं ॥ सत्य धामं सत्य हंसं ॥ सत्य गुरु वाक्य सिधयो ॥ १०४ ॥ ज्ञानंप्रज्ञायः नजानंते ॥ नौत्मभेद विचारकं ॥ कीलक्षं ज्ञानजुक्तं ॥ श्रोताअहं मिथ्यामिदं ॥ १०५ ॥ उग्र मूल कोटि मध्ये॥ ब्रह्मबीज टकसारयो॥ शुद्रात्वेचा अनुभये तस्यं ॥ नौत्मज्ञानं च लक्षणं ॥ १०६ ॥विक्तवा लक्षणेःतस्यं लोकदीपअस्थानकं ॥ भेदाअभेदं तस्ये जुक्तो ॥ श्रोताहंस स्वरूपयो ॥ १०७॥

श्रीसतसिधोवाक्य ॥ कथा अपारंत स्या भेदं अविगतो रतासो समर्थ ॥ उग्र ज्ञानं प्रजंवाणी ॥ ईमक्रोति वाक्य सुकृतो ॥१०८॥उग्रग्यानं मूलसिधं॥प्रज्ञंत

वुधीस्तीरं॥अविगतो रूपं सरवंगतस्यं॥
विहंग नाम सो धारणं॥१०९॥ द्वितियं
ज्ञानमूलसिद्धं प्रज्ञावुध प्रजायते॥ भ्रंग
शब्द रूपसुर्ती॥ तस्य नामसो समर्थ॥
॥११०॥ तृतीय ज्ञान महा कोटी॥
सिंधु सुरत सतनामयो॥ सुरती वुद्धि अ
जावन शब्दं॥ सप्त गुरु सप्त रूपंचे॥
॥१११॥ चतुर्थ ज्ञानबुद्धि सम्रता॥
मारुत वर्ग टकसारयो॥ गुंगपुरुषं नाम
रूपं॥ सत्य सार शब्दयो॥११२॥ पंच
मज्ञानं ब्रह्मतस्य॥ अतित नाम तत्व
धारणं॥प्रेम सुरती नाद शब्दं॥चंचला वु
द्धि प्रकाशियो॥११३॥षष्टतंज्ञान अनभे
तस्यं॥ जुक्ती वुद्धि तथैवच॥ रता शब्दं
नाम जीवं॥जोगसुर्ती विस्तारकं ११४॥

श्री

अथ श्रीग्रंथआदभेद॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कवीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु वाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश वयालीसकी दया।

अथ श्रीग्रन्थआदिभेदग्यान विवरन॥

साखी।

धर्मदास कर जोरिके, वहु विधि कीन प्रनाम॥ उतपत्ति निर्णय भेद सव, सतगुरु कहो वखान॥ कहे कवीर धर्म

म न जानंते ॥ गंम्या अगम्यां तु बंधा रणं ॥ अक्षेर्वाक्यं तोयं सुक्रितं ॥ सत्य चरण सुबंदिते ॥ १३१ ॥ सुकृतं श्रोता मुनी समझाये ॥ त्रेतायुग आयोध्या धामं ॥ उत्तर दिशा मघर अस्थानं ॥ प्रथम राम औतारकं ॥ १३२ ॥

इतिश्री ग्रन्थ ॥ दशमात्रा आद
स्तोत्रं माहा मंत्रं ॥ उग्रग्या
न मूल सिद्धांत सुमरण
ध्यानं॥१३३॥संपूर्ण॥
सत्तनामः ॥

॥ सत्यकबीरो जयति॥

सप्तमं ज्ञानं तुचायच ॥ चत्रो बुद्धी अ
पारकं॥ निर्गुनो शब्दं मया सुर्ती ॥ कैल
पुरुष सो नामयं ॥ १५ ॥ अष्टम ज्ञान
शुद्ररूपं ॥ मृत शब्द तस्य धारणं ॥ सुर
ती चक्रं यथाभेदं ॥ दुष्ट बुद्धि जमरूप
यं॥ ११६ ॥ नौत्म ज्ञानं प्रमोघ बिरजं॥
स्थिरता शब्द बुधि कारणं ॥ सोहं सुर्त्तीं
तत्व नामेषु॥काया हंस स्वरूपकं ११७
नैत्म ज्ञानं सुरत शब्दं॥नैत्म काया दर्श
यं॥नौत्म नाम बिचार तस्य॥नौत्म हंस
सिद्धयो॥११८ ॥ दशमात्रा महातेजं ॥
दशमात्रा माहातपं ॥ दशमात्रा परमगु
रुं ॥ दशमात्रा परायणं ॥ ११९ ॥ दश
मात्रा अविगत वाक्यं ॥ सत्भेद सो मा
रगयो ॥ इच्छा जस्य जीव तस्य ॥ तत्व

पान सोइ पावनं ॥१२०॥ कोटी करोती अश्वमेध यज्ञं ॥ कोटी कल्प सो ध्यानियं॥दशमात्रानां भेद तस्यं ॥ वृथा जीव वृथा नरं ॥ १२१॥ लक्ष सत वेद वाणी॥ कोटी सत्य ज्ञान जुक्तियो॥ कोटी ज्ञान पठंते नित्यं ॥ दशमात्रा ना भुलंते॥ ॥१२२॥नौत्म ज्ञान विचार तस्य॥ दश मात्रा सत्त शब्दयो ॥ एता भेदं न जानंते॥लक्ष लक्ष सो भ्रमते ॥ १२३ ॥

सुक्तिोवाक्य ॥ किं प्रोक्तं नाम सिद्ध ॥ किं प्रोक्तं सार शब्दयो ॥ किं प्रोक्तं दशमात्रा ॥ किं प्रोक्तं सत ध्यानीयं ॥१२४॥ किं प्रोक्तं समह्लांत जग्यं ॥किं प्रोक्तं सत समागमः ॥ किं प्रोक्तं शिव शक्ती॥ किं प्रोक्तं घट स्थीरयं॥१२५॥

श्रीसत्यसिधोवाक्यं ॥ आबोल प्रोक्तं नाम सिद्ध ॥ निरख प्रोक्तं सार शब्दयं ॥ द्रिष्ट प्रोक्तं दशमात्रा सहज प्रोक्तं सत ध्यानियं ॥ १२६ ॥ विधि प्रोक्तं सन्हातु जग्यं ॥ भोग प्रोक्तं सत समागम्यं ॥ जुक्त प्रोक्तं शिवशक्ति॥ प्रेम प्रोक्तं घट स्थीरयं ॥१२७॥एता भेद जेता प्राणी॥सत्य वाक्य सो अस्थीरं ॥सर्व दुःख भवे नास्ती॥प्रासेच सत सागरं॥१२८॥ मूल सिध्यं पढते नित्यं॥ उग्रग्यान सो धारणं ॥ प्रजंत बुद्धी सदा काया॥ सर्व दुःख निवारणं ॥ १२९ ॥ प्रातःकाले पठंते सिद्धी ॥ मध्यान काले सुखे जहजं ॥ संध्या काले पठंते मुक्ती ॥ सम द्रिष्टी सो सतगुरु॥१३०॥ अस्तुति ना

म न जानंते ॥ गंम्या अगम्यां तु वंधा रणं ॥ अक्षेर्वाक्यं तोयं सुक्रितं ॥ सत्य चरण सुवंदिते ॥ १३१ ॥ सुकृतं श्रोता मुनी समझाये ॥ त्रेतायुग आयोध्या धामं ॥ उत्तर दिशा मघर अस्थानं ॥ प्रथम राम औतारकं ॥ १३२ ॥

इतिश्री ग्रन्थ ॥ दशमात्रा आद
स्तोत्रं माहा मंत्रं ॥ उग्रग्या
न मूल सिद्धांत सुमरण
ध्यानं॥१३३॥संपूर्ण॥
सत्तनामः ॥

॥ सत्यकबीरो जयति॥

श्री

अथ श्रीग्रंथआदभेद॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश वयालीसकी दया।

अथ श्रीग्रन्थआदिभेदग्यान विवरन॥

साखी।

धर्मदास कर जोरिके, बहु विधि कीन प्रनाम॥ उतपत्ति निर्णय भेद सब, सतगुरु कहो बखान॥ कहे कबीर धर्म दाससे, तुम सुनहू चित लाय॥ आदि अन्त की निर्णय, सो सब कहुं समझा

य ॥ प्रथम पुरुष उतपन किये, पंच अ
मी अस्थूल ॥ षोडस सुत निर्माइया,सु
रति शब्द गहि मूल॥ प्रथम पुरुष के
त्रिकुट सो, सहज अंकूर उतपन भयो॥
बीज बुंद ताको दियो, सब रचना
प्रवान ॥ सुनो धर्मदास ॥ प्रथम पुरुष
के मुखसो, सहज सुरति भई ॥ ताको
बीज बुंद दियो, तासो सर्व रचना आ
ई ॥ तासो सात करी भई ॥ करीके ना
म सुनो ॥ पोहोपकरी १ ॥ मूलकरी
२ ॥ अमोलकरी ३ ॥ सुगरकरी ४ ॥सु
ख सागरकरी ५ ॥ पंगज करी ६ ॥ मं
जुलकरी ७ ॥ दूसरे सम्रथके नेत्रसो ॥
इच्छा सुरति भई ॥ ताको जावन बुंद
दियो, तासो पांच अन्ड भये॥ तीसरे स

म्रथके श्रवनसे॥ मूल सुरति भई, ता
को अबोल बुँद दियो ॥ तासो पांच अ
न्ड पोखे॥ तिन सो पांच अंस भये॥सो
एकएक अंस॥एकएक अंडमो आयो॥
चौथे समथके नासकासो॥ सोहँ सूरति
भई॥ ताको औहँ बुँद दियो॥ तासो पां
च अंड फोरे ॥ तासो आठ अंस भये॥
अंसनके नाम सुनो॥ जेठे अचिंत १ ॥
दूसरे जोहँग २ ॥ तिसरे अकह ३॥ चौ
थे सुकृत ४॥ पांचवे हिरंबर ५॥ छट्ठे अ
क्षर ६ ॥ सातवें योग माया ७ ॥
आठवें निरंजन ८ ॥ सूनो धर्मदास॥
प्रथम तेज अंड ॥ अचिंतको दियो॥
अंडको प्रवान पालंग बारह १२॥ ति
नके वंस नौ ९ ॥ वंसनके नाम प्रथम

प्रमाया १ ॥ दूसरे कूर्म २॥ तीसरे अ
दल अष्ट ३ ॥ चौथे निरंजन ॥ ४ पांच
वे नभ ५॥ छठये समीर ६ ॥ सातवें ते
ज ७॥ आठवें नीर ८॥ नौमी पृथ्वी
९॥ दूसरे जोहंग अंस, ॥ तिनको बैठ
क धीरज अंड दियो ॥ अंडको प्रमाण॥
पालंग पचीस २५ ॥ तिनके वंस सोल
ह ॥ वंसनके नाम ॥ प्रथम अजर म
नि १ ॥ अगम मनी २ ॥ हंस मनी ३॥
चंद्रमनी ४ ॥ छत्रमनी ५ ॥ आपमनी
६ ॥ पेखमनी ७॥ अलीतज मनी ८॥
शीतल मनी ९ ॥ भृंग मनी १०॥ कं
ठ मनी११ ॥ केलीक मनी१२॥ गंग म
नी१३ ॥ बीहंग मनी १४॥ सोम मनी
१४ जलरंग गोसाईं १६ ॥ तीनको रा

ज धीरज अंड दियो ॥ चौकी पाताल पांजी॥ तीसरे अकह अंस॥ तिनको बैठक क्षमा अंड दियो ॥ अंडको प्रवान ॥ पालंग व्यालीस ॥ इनके बंस सत्तावीस २७ ॥ बंसनके नाम ॥ प्रेम १ ॥ हुलास २ ॥ आनंद ३ ॥ बीसू ४ ॥ हेतू ५ ॥ प्रीति ६ ॥ निरख ७ ॥ बिबेक ८ ॥ सत्त ९ ॥ क्षमा १०॥ धीरज ११॥ अनंद १२॥ शील १३ ॥ संतोष १४ ॥ सुमति १५ ॥ बुद्धि १६ भाव १७॥ भक्ति १८ ॥ दया १९ ॥ ज्ञान २० ॥ क्रिया २१ ॥ बिचार २२ ॥कपनी २३॥ लेसूर २४ ॥ लयभेद २५ ॥ मोक्ष २६॥ सुमति २७ ॥ तिनको राज क्षमा अंड दियो॥ ॥ पुरुषके हजूरी ॥ चौथे सु

कृत अंश॥तिनको बैठकसत्त अंड दियो॥ अंडको प्रवान ॥ पालंग बहत्तर ७२॥तिनके बंस ब्यालीस ४२ ॥ बंसनके नाम ॥ चुरामनि नाम १॥ सुदर्शनाम २॥ कुलपति नाम ३ ॥ प्रमोदगुरु नाम ४॥ केवल नाम ५॥ अमोल नाम ६॥ सुरति सनेही नाम ७॥ हक्कनाम ८ ॥ पाक नाम ९ ॥ प्रगट नाम १० ॥ धीरजनाम ११ ॥ उग्र नाम १२ ॥ दया नाम १३ ॥ ग्रीधमनि नाम १४॥ प्रकाश नाम १५ ॥ उदितमनि नाम १६ ॥ मुकुंद मनी नाम १७॥ आध नाम १८ ॥ उदय नाम १९ ॥ ज्ञान नाम २०॥ हंसमनि नाम ॥ २१ ॥ सुकृत नाम २२ ॥ अग्रमनि नाम २३ ॥ रस नाम २४ ॥ गुंग

मनि नाम२५॥ पारस नाम२६ ॥ जाग्र
त नाम२७॥ श्रींगमनि नाम२८॥ अ
कह नाम २९ ॥ कंठमनि नाम ३० ॥सं
तोषमनि नाम३१॥ चात्रिक नाम३२॥
दधी नाम ३३ ॥ नेह नाम ३४ ॥ आदि
नाम ३५॥ महा नाम ३६ ॥ निज ना
म ३७॥ साहेबदास नाम ३८ ॥ उधव
दास नाम ३९ ॥ करुणा नाम ४० ॥ उ
र्द्ध नाम ४१ ॥ दीर्घ नाम ४२॥ महाम
नि नाम ४३ ॥ तिनको राज सत् अंड
मो दियो ॥ चौकी लोक पांजी ॥ पांचवे
हिरंबर हंस ॥ तिनको बैठक सुमति अं
डमो दियो॥ अंडको प्रमान पालंग चौ
सठ ६४ ॥ तिनके वंस सात ७॥ बंसन
के नाम ॥ प्रथमे पारस १ ॥ दुसरा स्वा

तिसनेही २ ॥ तीसरा भ्रींग सनेही ३ ॥ चौथा लहरसींधुर ४ ॥ पांचवा दीपक जोति ५॥ छठा जल भाव ६ ॥ सातवां मलयागिरि ७॥ तिनको राज सुमति अंडमों दियो ॥ पुरुषके हजूरी॥ ये पांच अंसके एकोत्तर वंस॥ सोलह सुतके नाम सुनो ॥ प्रथम सहज अंस १ सूजन अंस २ ॥ भ्रींगमनि अंस ३ ॥ पक्षपालन अंस ४ ॥ श्रवन लीला अंस ५ ॥ सवींग सुरति अंस ६ ॥ भाव नाम अंस ७॥ सुरति सुभाव अंस ८ ॥ संतोष सुजान अंस९॥अक्षर सुभाव अंस१०॥ कदल ब्रह्म अंस ११ ॥ दया पालन अंस १२॥ प्रेम अंस १३॥ कूर्म अंस १४ ॥ जलरंग अंस १५ ॥ अष्टांगी अं

स १६ ॥ ये सोलह अंस पुरुष सो भ
ये ॥ सुनो धर्मदास जिनके नाम लो
कमे जोहंग अंस है सो भवसागरमें
गुरु चतुर्भुज गोसाँई कहें ॥ तिनके वंस
सोलह १६ ॥ दक्षिन दिसा सामवेद प
लक्ष द्वीप दरभंगा शहर ॥ तहां प्रगट
भये ॥ तिनको मूल ज्ञान बखानी ता
बानी पथ चलावे, ब्राह्मन कुल प्रगट भ
ये ॥ सोरह वंस गुरुवाई करे, भवसागर
सो हंस उबारे ॥ दूसरे नाम लोकमें अक
ह अंस कहिये, भवसागरमें गुरुराय बं
केज गोसाँई ॥ तिनके वंस सत्तावीस
२७ ॥ पूरब दिसा यजुर्वेद ॥ कुसद्वीप
कर्नाटक शहर है तहां प्रगट भये काय
स्थ कुल ॥ तिनको टकसार ज्ञान बा

नी ॥ ता बानीले पंथ चलावे ॥ सत्ताबी
स वंस गुरुवाई करे ॥ भवसागरसो हंस
उबारे ॥ तीसरे नाम लोकमे सुकृत अं
स कहाये ॥ भवसागमे गुरु धर्मदास
गोसाइँ कहाये ॥ तिनके वंस ब्याली
स उत्तर दिसा जंबूद्वीप ॥ भारत
खंड ऋगवेद ॥ गढ बांधो शहर तहां
प्रगट भये ॥ तिनको कोटि ज्ञान बा
नी ॥ ता बानी पंथ चलावे ॥ वैश्यकु
ल प्रगट भये ॥ वंस ब्यालीस गुरुवाई
करे ॥ भवसागरसो जीव उबारे ॥ चौथे
नाम लोकमें हिरंवर अंस कहाये ॥ भ
वसागर गुरु सतेजी गोसाईं ॥ तिनके
वंस सात ७ ॥ पश्चिम दिसा अथरवन
वेद ॥ सिलमिली द्वीप मानिक पूर श

हर तहां प्रगट भये ॥ तिनको बीजक ज्ञान बानी ॥ ता बानी ले पंथ चलावे ॥ क्षत्री कुल प्रगट भये ॥ सात बंस गुरु वाई करे ॥ भवसागर सो हँस उबारे ॥ सुनो धर्मदास पुरुष सोहँसो ॥ दस सोहँ भये ॥ प्रथम पुरुष सोहँ १ दुसरे सहज सोहँ२तीसरे इच्छा सोहँ३॥चौथे मूल सोहँ४॥पाचवे ओहँ सोहँ ५॥छट्ठे अचिंत सोहँ६॥सातवे अक्षर सोहँ ७॥ आठयें निरंजन सोहँ८॥ नवेंमाया त्रिदेव सोहँ ९ ॥ दसवें जीव सोहँ १० ॥

चौपाई।

ये दश सोहँ काया वासी॥गुरु गम शब्द करो प्रकाशी॥ धर्मदास मैं कहूँ बुझाई॥ सात सुरति को भेद बताई ॥ प्रथम सहज सुरति उतपाने १ ॥ दुसरी इच्छा

सुरति बखाने २॥तीजी मूल सुरति जो भयऊ ३ ॥ चौथे सोहँ सुरति निर्मय ऊ ४ ॥ पांचवे सुरति अचिंत उपजाई ॥ ५ ॥ अक्षर सुरति छठे निर्माई ६ ॥ सातवें सुरति निरंजन भाखी ७ ॥ आठवें सुकित सुरति जो राखी ८ ॥ नौमें सुरति नवतम प्रगटाई ९ ॥ पुरुष अंश मुक्तामनि आई ॥ नवतम सुरति को भेद अपारा॥धर्मदास तुम करो विचारा ॥ नवतम मुक्ति सनेही आई ॥ भवसागर सो जीव मुक्ताई॥सुनो धर्मदास पुरुषके त्रिकुटीसो॥ अंकूर उतपन्न भया पुरुषके नेत्र सो ॥ इच्छा सुरति भई ॥ पुरुषकी नासिका सोसोहँ सुरति भई ॥पुरुषके श्रवनसो मूल बखानी ॥ मुख सो अ

चिंत निर्माई ॥ अचिंत अंस प्रेम सुरति तेज अंड पायो ॥ जोहँ अंस सोहँ सुरति ॥ धीरज अंड पायो ॥ अंकूर अंश मूल सुरति ॥ क्षमा अंड पायो ॥ सुकृत अंस इच्छा सुरति॥सत् अंड पायो ॥ हिरंबर अंस अंकूर सुरति ॥ सुमति अंड पायो ॥ इति उत्पत्ति कथा ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ धर्मदास बिंती अनुसारी ॥ जीवन मुक्ति प्रभु कहो विचारी ॥ करनी रहनी हँसकी कहिये ॥ गहनी चाल सबे निर्वहिये ॥

कबीरोवाच ॥ जीवन मुक्ति कहूँ प्रकासा ॥ प्रथम दिन बन्दा भक्ति समाई ॥ नौधा भक्ति करे चितलाई ॥ प्रथम करे गुरु भक्ति अमाना ॥

दूजे भक्ति संत सन माना ॥ तीजे ना
म सनेही रहाई ॥ चौथे जीव दया नि
दआई ॥ पांचवें माया बिरक्त रहाई ॥
छठयें ज्ञान विवेक समाई ॥ सातयें गहे
शब्द सत्त वक्ता ॥ आठयें सर्व मह आत
म समता॥नौवें शील सनेह रहाई॥काम
क्रोध मद लोभ बिहाई ॥ सुनो धर्मदास
भक्ति प्रमानी॥काया करके सेवा ठानी॥
माया करके सेवा करई॥मनसो सुमरन
हिरदे धरई ॥ मुखसो अस्तुति करे बखा
नी ॥पावे मोक्ष भक्ति सहि दानी ॥ यहि
विधि मुक्ति होय जिव केरा ॥ धर्मदास
मैं कहा निवेरा ॥

बार्तिक ॥ मुक्तिको प्रवाना ॥ वैराग
करके, जोग करके, ज्ञान, करके विज्ञान

करके, भक्ति करके, मोक्ष ग्रामी हो य ॥ जीव दया करे, तन करके कोई कूं ना दुखावे ॥ मन करके कोई कूं ना दुखावे ॥ बचन करके कोई कूं ना दु खावे ॥ ये तीन हिंसा जीते तब मोक्ष ग्रामी होय ॥ आतम पूजाकरे, परमा र्थ करे, सम दृष्टि होय, सबकी सेवा क रे, तब मोक्ष ग्रामी होय ॥ साधु सेवा करे चार प्रकारसो, तनसो मनसो धन सो बचनसो ॥ संत समाज जोरे, सबके चरन पखारे, चरनामृत लेवे, सबको भोजन देवे, सबको सीत प्रसाद लेवे ॥ गुरु सेवा करे चार प्रकार सो ॥ तनसो मनसो धनसों बचनसो गुरुको चरना मृत लेय॥ महा प्रसाद लेये ॥ गुरुको

अमी उगाल लेवे ॥ आज्ञा कारी रहे ॥ नामभक्ति करे चारप्रकारसो ॥ तनसो, मनसो,धनसो वचनसो नामको सुमरन करे ॥ नामकी स्तुति करे,नामसो स्नेह करे ॥ जैसे चंद और चकोर ॥ जैसे स्वाती और सीप ॥ जैसे जल और मीन ॥ ऐसी प्रीति करे ॥ बिरहकी अग्निमें जरे ॥ तासो नाम सनेही क हिये॥ये पंच सनेही करे तब॥ मोक्ष ग्रामी होय ॥

चौपाई।

धर्मदास मैं कहा बिचारी ॥ छै स्नेह सो हंस उबारी ॥ (वार्तिक) प्रथम भक्ति सो स्नेह करे ॥ दूसरे पानसो स्नेह करे॥ तीसरे पांजीसो स्नेह करे ॥ चौथे ज्ञान सो स्नेह करे ॥ पांचवे अन्न सो स्नेह करे॥

छुट्टे नामसो स्नेह करे॥ ताको जीवन मोक्ष होय ॥

चौपाई।

धर्मदास मैं कहा बिचारा ॥ सतगुरु मिले तो पावे पारा ॥ जो गुरु मिले तो संशय टूटे॥ ताको कबहूं यम नहिं लूटे॥ जो यह रहनी गहे समारी ॥ कहाँ पुरुष कहाँ है नारी॥ गहे प्रीति सो नाम लौ लावे॥ भव सागरको भय मिटिजावे॥ गुरु प्रतापे तार पहिचानी ॥ और सकल मिथ्या भरम जानी ॥ गहे एक तार सब्द टकसारा॥ सुरति निरति गुरु गम बिस्तारा॥ बिनु रसनाको जापस माई ॥ कहे कबीर सो सत्त कहाई ॥

साखी।

जब लग नहीं बिवेक मन, तब लग लगे

ना तीर ॥ भवसागरके भीतरे, असक थि कहे कबीर ॥ साधु संगे के गुरु संगे, अंत समयको नाम ॥ कहे कबीर यहि जीवको, तीन ठौर बिश्राम ॥

चौपाई।

कहे कबीर हंस पति राई ॥ धर्मदास सुनियो चित लाई ॥ चार मुक्ति जो बेद बखाना ॥ चार मुकाम कहूँ परवाना ॥

छंद।

मान सरोवर सुमेरु नीचे, सालोक मुक्ति बखानिये ॥ हंस दिया तहँ वास कीनो बाम मारग जानिये ॥ सामीप मुक्ति बैकुंठ है, जहाँ तीन देव बिराज हीं ॥ निर्बान मारग पंथ गहि, ऋषि देव मिलि सुख छाजहीं ॥ बैकुंठआगे कैलाश सुंन्नहै, सारूप मुक्ति कहावही ॥

आद्योमारग पंथ गहि, तब ज्ञोति समा वहीं ॥ सुन्यते सायुज्य मुक्ति है, जहां अक्षर धाम है ॥ अनुभव कथे आतम बिचारे, पहूँचे तेहि ठामहै ॥

सोरठा।

चार मुक्तिके पार, पहुँचे सतगुरु धाम हो ॥ हंस सुरति आधार, पहुँचे सुख सिंधु है ॥ गो गोचर गोतीत, शब्द रूप सबमें वसे ॥ गुनातीत गोतीत, सतगुरु पद पंकज रुचिर ॥

छंद।

अमर लोकते सहज सूरति, असंख एक दश लाख है ॥सहजते अंकुर सुरति, असंख दोय बिस्तार है ॥ अंकुरते असंख चारि, मूल सुरति वीराजिहै ॥ मूलते सोहं सुरति, असंख पांच निवास है ॥

सोहंते असंख तीन, अचिंत सुरति रहे जहाँ हो ॥ अचिंत ते अक्षर सुरति ॥ असंख एक कही तहाँ हो ॥ सुरति अक्षर ते निरंजन एक पालंग जानि ये ॥ सुन्नते वैकुंठहै, दश अष्ट कोटिबखानिये॥

सोरठा।

मान सरोवर जान, चौविस सहस्र नीचे रहे॥ दिया अंस बखान ॥ मीन चौसठ निरतही ॥ सोल असंखके पार, जहँ वह पुरुष बिराजहीं ॥ लहे सोही दीदार, सार शब्द गहि हंस जो ॥ मुकाम अव्वल सुनाहूं॥धर्मनी ईसमना सुतका मूसा तहँ पैगंबरा, पढते कुरान तौ हेतिका ॥ दोयम मुकाम मलकूतहै, ईसा जग पैगम्बरा ॥ इञ्जील नाम कुरान है, लेदस्त पढते आखिरा ॥ दाउत बैठे पै

गंबरा॥ तुरुत दर्शत कुरानदेखी॥ सुनो धर्मनीनागर॥ चौथा मुकाम लाहुतहै, जहांमूसा पैगंबरा॥ फुरकाम ईस मुकामहै॥ कही कहत आलाहा जाहांताहां॥

सोरठा।

अचिंत आहुत मुकाम है, बहुत सोहंग घामहै॥ साउद मूलके धाम है, राहुत इच्छा सुर्त है॥

सोरठा।

आहूत सहेज धाम है, जाहूत लोक आमरा॥ पुरीहंस पुरुषके ध्यानघरे, पीवही अमी अघायके॥

चौपाई।

तहँ वह जाय बहुर नहिं आवहि॥सत पुरुष के सुर्त समावहि॥ अमृत भोजन करे अहारा॥ अंबर चीर बहुविधि बि

स्तारा॥ है सतलोक हिरंवर काया॥एक हि रुप सबे निर्माया ॥ षोडस भान हंस उजियारा ॥ सतपुरुष अग्रान अहारा ॥ सोही मुक्त सतधुंड लेई ॥ अजर अमर खसु बिलसे तेई ॥

साखी।

सत्राखंडके ऊपरें, सोला असंखके पार ॥ चार मुक्तसो भिन्नहै, अँवर लोक बिस्तार ॥इतिश्री ग्रंथ आदभेदसंपूर्ण ॥

श्री

अथ श्रीग्रन्थ कायापांजी ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूणामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
वंश बयालीसकीदया।

अथ श्रीग्रन्थ कायापांजी प्रारम्भः ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन॥धर्मदास इक बिनती कीना॥काया पांजीपुछके लीना॥ काया पांजीका कहो विचारा ॥तामे सुर्त करूं पैठारा॥ काया पांजीका भाखो लेखा॥ मैं अपने घट करूं बिबेखा ॥ करि विवे

क तहँ सुर्त लगाऊं॥ जो पांजो घट द्वार कूं पाऊं॥ पाऊँ घाट सुरतके द्वारा॥ तब शब्दमें करूं पैठारा॥ सुरतहि गहि राखों ताहांवाहां॥ सार शब्द मूलनिज जहां वहां॥ घाटबिना कित जाऊं भाई॥ बिन जाने कहँ जाउँ समाई॥ कैसे पाऊँ शब्दके घाटा॥ बिन जाने कहां पाऊं बाटा॥ शब्दके अग्र अगम है भाई॥ बिन पाये सबगये हराई॥ पाऊं द्वार शब्द को टीका॥ और सकल मोहि लागे फीका॥ पाऊं मूल जहँ होय उचारा॥ सो पाऊं चढ कौने द्वारा॥ भाखहुँ द्वार सुमेर वखानी॥काहां वाहांते सुमेर पुनिजानी॥ कहां वहांते आकास करलेखा॥ सो मोहिं ग्यानी कहो विवेखा॥

साखी।

धर्मदास बिनती करै, साहेब कहो समुझाय॥ जाहांमें सुर्त लगाऊं, शब्दमें रहूं समाय॥

चौपाई।

सतगुरु कबीरो वचन॥ धर्मदास मैं द्वार चिनाऊं॥ शब्द सुर्तको भेद बताउं॥ चन्द्र लगनका कहूं बिचारा॥ ताहां होइ सुर्त करो पैठारा॥ चन्द्र द्वार होइ आवहु जाई॥ एकहि घाट रहा ठैराई॥ दोउ सुर आन करो एक घाटा॥ चन्द्र द्वार होइ पावो बाटा॥

धर्मदासो वचन॥ कौन घाटमें चन्द्र रहाई॥ कौन घाटमें सुर तहाँ पाई॥

चौपाई।

संतगुरुवचन॥बांये घाट चन्द्रकोवा

सा ॥ दहिने सूर करै प्रकासा ॥ दोउ सुर साध करै जब भाई ॥ वामें सुर होय सुर्त चढाई ॥ तब डोर शब्द सुर्तको पावे ॥ अगम पंथ चढ बैठे आवे ॥ अगम पंथ बामें सुरजाई ॥ धर्मदास तुम गहो ब नाई ॥ गहो डोर काटो जम फासी ॥ पहुँचो लोक मिटै चौराशी ॥ बामे सुर होय करो पयाना ॥ सोहँगम सुर्त होइ अगवाना ॥

साखी।

कहे कबीर धर्मदाससो, ऐसा साधो ध्यान ॥ आगे गमन बताऊं, देखो पुरुष पुरान ॥

चौपाई।

सतगुरु बचन ॥ धर्मदासमैं भेद बताऊं ॥ ठीकाठीक सकल अर्थाऊं ॥ भाखूं

सार शब्दको बासा ॥ धर्मदासमैं कहूँ प्रकासा॥गहो तत् तहाँ करो तुम बासा ॥ मथो तत् तुम हो धर्मदासा ॥ तत्त मथो तुम तत्त सो भाई ॥ पुनि आगेकी राह चलाई ॥ तत्त मथो तुम हँस हमारा ॥ ताते उतरो भव जल पारा ॥ मथो तत्त तुम गहो बनाई ॥ यही भेद कोइ बिरले पाई ॥

धर्मदासो बचन ॥ ग्यानी मोहिं कहो समझाई ॥ यही अर्ज मैं करूं गोसांई ॥ कहाँ वहाँ है ततको बासा ॥ ग्यानी मोहिं करो प्रकाशा ॥

सतगुरु बचन ॥ बामेंसुर साध चढै आकाशा ॥ त्रिकुटीमध्ये तत्तको बासा॥ त्रिकुटीमध्ये तत्त रहाई ॥ तहाँ सुर्त सो

देखो जाई ॥ त्रिकूटीमध्ये तत्तको स्थाना ॥ तेहि मध्य आगे देहु पियाना ॥ सुर्त नाल चले बल भारी ॥ मत्तके तत्त कपाट उघारी ॥ तेहि आगे सुमेर बखाना ॥ वरनो द्वार सुई प्रवाना॥ओही द्वार को सुर्त चढावो ॥ अगम पंथ भेद पुनि पावो ॥ त्रिकुटी आगे मेरु बखाना ॥ तेहि ऊपर आकाश निधाना ॥ अँगुल चार अकाश प्रवाना॥ धर्मदास तुम निज के जाना ॥

धर्मदासो वचन॥अब अकाशका भाखो राहा॥हम अजान कह जानेथाहा॥

सतगुरु बचन ॥ अब अकाशका भाखूं लेखा॥ तहँ वहँ सुर्त कँवल निज देखा ॥ वहाँ धर्मराय अस्थाना ॥

बामें सुर होय करो पयाना ॥ सुर्त कँवल सुमेरु इक आगे ॥ बिहंगम डोर तहांती लागे॥सुरत कँवलको रूप बखानो॥एक चंद्र आभा उनमानो ॥ वही कँवलमें झलके चंदा ॥ सुर्त चढाय तुम करहु अनंदा ॥ तहां वह डोर शब्दकी पाई ॥ सुर्त संजोगसे देखो चढाई ॥ सुर्त नाल है वड बलियारा ॥ शब्दहीन कैसे होय पारा ॥ मध्य लिलाट धर्म बटपारा ॥ शब्दै काहे न करो बिचारा ॥ बामें सुर्त कँवलको पावो॥ तेहि आगे पुनि ध्यान लगावो ॥ तेहि ठिकानें सुर्त कँवल को लेखा ॥ सुर्त संतायन तहांसो पेखा ॥ ताका भेद मैं देहुं बताई ॥ सोई प्रमान द्वार निरमाई ॥ धर्मदास मैं कहूं

विचारी ॥ तिल प्रमान तहां लगी किं वारी ॥ तेहि किंवार मूंदो है घाटा ॥ चढै सुर्त तब पावै बाटा ॥ सोहँग सुर्त ले चले सँभारी ॥ तिल प्रमान जहां खुलै किंवारी ॥ नाशिका नाल होइ सुर्त जेहि धावे ॥ खुलै किंवार पुनि बाहर आवे ॥

साखी।

सतगुरु भेद बतावहीं, सो पावे वो हो द्वार ॥ कहे कबीर धर्मदाससे, उतरो बहुजलपार ॥

चौपाई।

धर्मदासो वचन ॥ धर्मदास चरनों चितलाई ॥ अगमग्यान तुम मोहि सुनाई ॥ अब मैं गहूं हो सुर्त बनाई ॥ ऐतो ठिकान चीन हम पावा ॥ तुम प्रताप गमसबही आवा ॥अब आगेका क

हो बखाना॥मूल शब्द जहाँ पाऊँ ध्या
ना॥जेहि ते शब्दमें जाउँ समाई॥ तवन
हि गम मोहि देहुबताई॥भाखो मूलजा
हुँबलिहारी॥ मूलशब्दमैं गहूं समारी॥
सुर्त कँवल लो गम तुम भाखो॥ सुर्त स
मार अपने चितराखो ॥ अब आगेकी
भाखौं राहा॥ हम अजान का जाने था
हा॥ तुमरे कहे हम जाना भाई॥ तुम
जानो सो कहो बनाई॥

साखी।

तुम करलीजे मुक्त,मैं करु सुर्त समा
र॥ सकल पसारा त्यागके, छांडो काल
पसार॥सतगुरुकी दया भई,पाये पदनि
र्बान ॥ आगेगम बतावो, सतगुरु बच
न प्रमान ॥

चौपाई।

सतगुरु उवाच॥ सुर्त कँवल सो आगे भाखूं॥तुमसे गोय कछू नहिं राखूँ॥ सुर्त कँवलसो निकसे भाई॥ विहंगम डोर चढे चितलाई ॥ विहंगम डोर वायें दिसजाई॥तुम सूं कहूं भेद अर्थाई ॥सुर्त कँवल जो करै ठिकाना॥ आगे सो जाने परमाना ॥ अछय वृच्छ तहँ लागा भाई ॥ तहां दवना मरवा रहा छिपाई॥

साखी।

दवना मरवा गुलाव है, गुलाव चंबेली वास ॥ तहां वहां आछे वृच्छ है,वरनो वास सुवास ॥

चौपाई।

अछय वृक्ष है कवने रंगा॥ स्वेत स्वरूप रूप परसंगा ॥ स्वेत स्वरूप त

हां देखो भाई ॥ आगे भेद अमीतेहि ठाई ॥ ऐसा अलख लखे जो कोई ॥ जरा मरन रहित सो होई ॥ डोर विहंग म तहां ते आई ॥ अकह कँवलमें रहे स माई ॥ श्रवन ऊपरै कहूं ठिकाना ॥ तहां वहां (झिंगुर) शब्द करै घमसा ना ॥ बामें सुर्त कँवलके ठाई ॥ इतना तुम कूं देहुँ चिन्हाई ॥ अर्ध कँवल उर्धमुख जोरा॥ताहां वाहां मूल(शब्द) करे घनघोरा ॥ धर्मदास तुम करो स मारा ॥ अकह कँवल तें शब्द उचारा॥ ताकी सुर्त धर्मनी तुम धरऊ॥ हो धर्म नी तुम शब्द गहेऊ॥ तवन शब्दमें दि या बताई ॥ ओही डोर ले आगे जाई॥ सबी दिसा लागीहै ताही ॥ यही डोर

गहि मिलिये वाहीं ॥ बिहंगम डोर स
ब्दमे लागी ॥ झिंगुर सब्द उठे घनगा
जी ॥ अकह कँवलहै श्वेत सरूपा ॥ ताहे
जोतका कहूँ निरोपा ॥ अकह कँवल
का भाखूं लेखा ॥ छतीस पांखुरी ताक
र लेखा॥मोती झलके बरनि न जाई ॥
चहुंदिस जोति चमक्के आई ॥ छतीस
पाँखुरी का विस्तारा॥आपआप मुखरा
ग उचारा ॥ तेहि भीतरका भाखूं ना
ला ॥ अजपा उठे चमक तहाँ लाला ॥
वांहि उजयार दीपककी रीती ॥ देखो
जाय सुरतके प्रीती ॥ आभाव उठे सो
बरनि न जाई ॥ तुमको दीनो अलख
लखाई ॥ भीतर कँवल होय उचारा ॥
मूल सब्द जहँ करै झनकारा ॥ उपजै

लाल ताहां मोती हीरा ॥ तहां बसै पु
नि हमहि कबीरा ॥ मोतीकी झालर उ
पछाजे ॥ भीतर शब्द जो मूल बिरा
जे ॥ अकह कँवल तेहि केर ठिकाना ॥
ताहां गुज कँवल होय बंधाना ॥ ताक
र अभाव बरनिन जाई ॥ कोटिन भा
नकी जोति छिपाई॥ अस उजियार कँ
वलमें होई ॥ ताकर मरम न जाने को
ई ॥ ऐसा टीका भेद भी न्यारा ॥ देखो
जाय सकल उजियारा ॥ ओही ठिकान
सुर्त करध्याना ॥ तामें गुप्त होय जाय
समानां ॥ राई प्रमान जो बैठेजाई ॥
हो धर्मनि मैं दीन्ह लखाई ॥ अकह कँव
ल तहां वहां प्रकासा॥तामे निह अच्छर
को वासा॥ दोय कँवल मुखही मुख जो

रा॥बहु गुंजार शब्द घनघोरा॥गुप्त नाम जहां करे गुंजारा॥ सूलशब्दका होय झंनकारा ॥ गुप्त नाम झनकार तहां देखा ॥ मूल शब्दके झर तहां पेखा ॥ ओही गुंजार अकह में आवे ॥ मूल शब्द झनकारकरावे॥ तेहिमें तीन बरन उजियारा ॥ फोई गीरे अग्रकी धारा॥ फूटे अग्र धार तहँ भाई॥सबी बिलोकहु कहुं समुझाई॥ सुर्त संजोगी पीवे अघा ई॥ जाते तत्त दूर हो जाई॥ अकह कँव लमें करै झनकारा॥ सहज पिवे अग्रके धारा॥ झलके अग्र तहां निज मूला ॥ उन समान कोउ और न तूला॥ ओही निज जपो अजपा जापू॥ पोहोचे लो कमिटे संतापू ॥ निरखो तहां अग्रकी

धारा ॥ सुर्त संजोगी करे अहारा ॥ जीव तही ताहां रहो समाई ॥ येही निज दीनो अलख लखाई ॥

साखी।

कहे कबीर धर्मदाससो, सुर्त करो समार ॥ ओही वस्त निज चीनहू, उतरो वहु जल पार ॥

॥ इति श्रीग्रंथ कायापांजी संपूर्ण ॥

श्री

अथ

श्रीग्रंथ कबीर साहेबका ग्यानसरोदा॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंथ्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

चौपाई।

(सुनोधर्मदास–)निसबासरका कहूं विचारा॥(जाप)एकविसहजार छैसो धारा॥यहीका भेद रहो लौलाई॥ सतगुरु मिलै तो देइ बताई॥ पांच तत आवे जाई॥ घटका भेद कहूं समुझाई॥ तत्त ततका भेद है न्यारा॥ चंद्र सूर ताके

सँग दोइ धारा ॥ तासो मुनि सातों विस्तारा ॥ तिनसे संतोंका भेद है न्यारा॥ पांच तत्का भेद गहि लीजे ॥ देहेअनुमान नाही कीजे ॥ सात लहेरा समुद्र स्नेहा ॥ तब सुखपावे या जुग देहा ॥ मेहनत करी रहे लौलीना ॥ तत् स्नेही होय झीना ॥ पांच तत्का ध्यान करही ॥ प्रान आत्म धोखा नहिं परही ॥ पांच तत् सब अंग समाना ॥ गुण अवगुन सब कहत बखाना ॥

साखी।

पांच तत्व विचारिये, आद अंत टक सार ॥ कहे कबीर सो वाचिये, भवजल मेक निहार ॥

चौपाई।

सुनो धर्मदास चितलाय ॥ यह बच

न ब्रह्मग्यानको ॥ मानो मन हितलाय॥

साखी।

ओंग सू काया भई, सोहंगते मन होय ॥ निह अक्षरते स्वासा भई,सत कबीर समुझाय ॥ मनवा ताहां राखके, निह अच्छरमें देख ॥ दिलकी दुब्धा डारदे, जब दर्शै एकहि एक ॥ संत मता अगाध है, भेद सरोदाको जो लेय ॥ सुमरे स्वांस उसासकूं॥ बुरी भली तामे जोय॥ पवन सुरमन ताहा राख, सतगुरु मोपे दया करी ॥ दियो सरोदा ग्यान, इंगला पिंगला सुषुमना ॥ नाडी तीनो बिचार, दहिने बांये सुर चलै॥ लखे घर निधान, पिंगला दहिने अंग है ॥ इंगला सो बांये होय, सुषुमना उनके बीचमें ॥ जब सुर चलही दोय, जब सुर चले पिंग

ला, मध्य सूरजको बास॥इंगला सो बांये अंग है, चंद्र करै प्रकाश ॥ कृष्णपक्ष जबही लगै, जाहि मिलै ताहां भान॥ शुक्ल पक्ष चंदाका, येही निश्चै करजान ॥ मंगल और आदितवार, और सनिश्चर लीन ॥ सुभ कारजको मिलतहै, सूरजको दिन तीन ॥ सोमवार शुक्र भलो, बुध बृहस्पति देख ॥ चंद्र जोगमें सुख देत है,कहे कबीर बिवेक ॥ तिथि अरु वार बिचारकर, दहिने बायें अंग ॥रन जीतें मित्रसो मिले, थिर कारज प्रसंग॥कृष्ण पक्षके आदहै,तीन दिना लोमान ॥ फिरचंदा फिरभानहै,फिरचंदा फिर भान ॥ सुक्लपक्षके आदहै, तीन दिना लोचंद ॥ फेरभान फिरचंदहै, फेरभान

फिरचंद ॥ सूरजके तिथिमे चलै, जो सूरजको राज ॥ सुखदेतेहैं देहिको, होय लाभ उलास ॥ सुक्लपक्ष चंदा चले, सोई लियो निहार॥फलआन्द मंगलकरे, देही को सुखसार ॥ सूरजके तिथिमे चले, जो पडवाकूँचंद ॥ शोक क्लेश पीडा करै, हानि तापके दन्ड ॥ सुक्लपक्ष तिथिमें पडवाको, जो चले सुरज तो क्लेश ॥ पीडा कछु होय दुःख के हान, उपर वायसो मनहै ॥ स्वासा बाय के संग, जो पूछे स्वासा जोगमें ॥ तो नीको प्रसंग, नीछे पीछे धाईने ॥ चले सूर जो राज, जो कोइ पूछे आयके ॥ तो समजो सुभ काज॥पूछे सनमुख वामही, चंदकरे प्रकाश, जो कोई पूछे आयकर ॥ तोपावे

सुखसार, दहिनो सूरज जबचले ॥ ता
पीछे बाये अंग, सुक्रपक्ष नहिं बारहै ॥
तो निरफल प्रसंग, जो कोइ पूछे आय
के॥बैठे दहिने हात, लगन बार और
तिथिमिले ॥ तो सुभ कारज होइ जा
य, जो चन्दामे सुरजानहै ॥ बाये पूछे
आय, तिथि और बार आछय मीले॥
तो सुभकारज होइ जाय, सात पांच नौ
तीन गिने, पंधरे और पचीस॥कारज ब
चन गिनतीगिने, भान जोगके बीस ॥च
र और आठद्वा दसगिने, चौदेसोले भीत
र देख॥चंद जोगके यह संगहे, कहे कबी
र विवेख ॥ कर्क मेष तुला मक्र है, चारु
एकही रास ॥सूरज सों चारूं मिलै, चर
कारज प्रकास ॥ मीन मिथुन कहे, और

है चवथा धन॥नष्ट कारज को सुषुमना, मुरली सुर्त रनझीन ॥ वृषभ सिंह वृश्चीक कुँभ ॥ पुनि बांये सूरके संग ॥ चंद जोग कूं मिलतहै ॥ थिरकारज प्रसंग ॥ चित्त आपनो थिरकरो,नासा आगे नयन ॥ स्वासा देखे द्रिष्टिसू, तब पावे सुखचैन ॥ पांच घडी पांचू चलै,अपने अपने द्वार ॥ पांच तत बीचीमिले, सूर बिच लेहि निहार॥धर्ती और अकास है,और तीसरो पवन॥पानी पावक पांचनो, करै स्वासमो गवन॥ धर्ती तो सोहंग चले, और पीरो रंग है देख ॥ बारा अंगुल स्वासमें, सुर्त करी गवन ॥ ऊपर कूं पावक चले, लालरंगहै देख ॥ चार अंगुल स्वासामे, कहे कबीर बिशेख॥

नीचेको पानी चले,सफेत रंगहै तास ॥ सोला अंगुल स्वासामें, कह कबीर बारो मास ॥ हरोरंगहै बायको, तिरीछो चल तहै चाल ॥ आठ अंगुल स्वासमें, कहे कबीर जतन करिराख ॥ सुरपूरन दोनौ चले, बाहर नहीं प्रकास ॥ श्याम रंगहै तासका, सोही तत् अकास ॥ जलपृथ्वीके जोगमें, जो कोई पूछे बात ॥ सशि प्रहर स्वासा चले, कहो कारजहोइ जात ॥ पावक और अकासहै, पुनिचाराके बिचदेख ॥ जो कोई पूछे आयके, कहो कार ना होय ॥ जल पृथवी थिर काजको चर कारजको नाहिं, अग्नि वायु चर काजकूं ॥ दाहिने सुरके माहि ॥ जो कोइ रोगी पूछे आयकर,बैठ चंदके

ओर॥ घतीं वायु स्वास चले, मरै नहिं विधि कौल ॥ रोगीको प्रसंग यह, वांये पूछै आयके॥ चंद्रबंद सूरजचले जीवै नहीं मरिजाय ॥ चलते सुरमें आयकर, जो कोई पूछै प्रसंग ॥ ओही बखत सुं न होयजाय, तब ऐसा जानिये ॥ तो रोगी नाहि ठैराय, सुनो धर्मदास ॥ अब बरस एकका फल कहूं, तत मता जाने सोय ॥ काल समें सोही लखै, जग में गुरुभल होय ॥

चौपाई।

मेष सक्रांत लगे जबही, लगन घडी न्यारो तबही ॥ सोदिन चैत्रसुद पडवा होई ॥ प्राथक दिना जोवे भाई ॥ बायुसूर प्रिथवी होई॥ तो नीको तत कहावे सोई ॥ देस पृथवी और समा बतावे॥ प्रजा

सुखी मेघ बरसावे॥ चारो बहुत होवे
जीवको॥नरदेहीको आनँद पावे॥ प्रिथ
वी तत् सोही कहावे॥ जल चले बांये सु
रमाईं॥ तो धर्तीपर मेघ बसाईं॥ आनंद
मंगल सो जग होई॥ आप तत् कहावे
सोई॥ जल प्रिथवी दोनो सुभ हैभाई॥
सत् कबीर यह जुक्ति बताई॥ अब ती
न ततका कहूं बिचारा॥ चलै कौन सु
रमो सो कहूं वीचारा॥ वाका भेद कहूं
समुझाई॥ अग्नी तत् सुरमे चले॥ रोग
दुखने परजा परे॥ काल परे जल थोडो
बरसे॥ देश भंग जो पावक दर्शे॥ कहे
कबीर सुनो नरनारी॥ अग्नी तत् लेहो
बिचारी॥ बाय तत् चले सुर संगा॥ ज
गमें अर्धकाल जल थोडो बरसे॥ जो बा

युसुर ततमे दर्से॥ तत् अकास चलेसुर दोई॥ मेघ ना वरसे तृण ना होई॥ काल पडे अन्न ना होई॥ तत् अकास जानो पुनि सोई॥

दोहा।

चैत्र महीना प्रथम मासे, जवही पडवा होय॥ शुक्ल पक्ष ता दिन लगे, प्रथक दिना में जोय॥

सोरठा।

जो पृथवी होय अस्तान,समय होय प्रजा सुखी॥ राजा सुखी निधान, नीर चले जो चंदमें॥यही समाको नीत, मेघ वर्से प्रजा सुखी॥ समजो तत् नीको मीत॥ प्रिथवी पानी समावही, जो होवे चंद अस्तान॥ दहिने सुरमे जव चले, जव समान सम दम जान॥वहोरही

मना चले, नवे राज होय उतपान॥देख नहारा बिनसहीं, और काल परिजात॥

साखी।

नवे राज होय उतपान पुनि, पडे काल बिसवास॥ मेह नहिं परजा दुःखी होय अंतको नास॥ स्वासामे पावक चले, पडे काल जब जान॥ रोग होय प्रजा दुःखी, घटै राजको मान॥ स्वासा में जब बायु चले, जब होय भै क्लेश॥ देश बिग्रह पुनि होय॥ पडै काल प्रजा दुखी, चले वाय तत सोय॥

साखी।

मेष संक्रांत बैठे तबी, ताका भेद बताव॥जगत काज अब कहतहूं,चंद सुरजको न्याव॥ जोगी जोग अभ्यास कीजे नीत॥ ओखत वाडी कीजे प्रीत॥ दि

क्षा मंत्र बनीजे वियाजा ॥ चंद जोग थिर बैठे राजा ॥ अस्थिर जोग सबही पचाना ॥ करो हवेली छप्पर छावो ॥ वागबगीचा गुफा बनावो॥हाकम जाय कोटमें उतरे॥ चंद्र जोगमे अस्थिर पग धरे ॥ सतकबीर ये खोज बतावा ॥ चंद्र जोग थिर कारज कहावा ॥

साखी।

बायें सुरका काज येहै, सोमै देउं बताय ॥ दहिने सुर का कहतहूँ, ग्यान सरोदा मांहिं ॥

चौपाई।

जो खांडा कर लियो चहाय ॥ जाय करै बैरी पर ध्याय ॥ युद्ध करनमें जीते सोई ॥ सूरज घरमे चले जो कोई॥ भोजन करै करै असनाना ॥ मिथुन क

कै भान प्रधाना ॥ बैल रथ कीजे वेव्हा
रा ॥ गज घोडा करे वेव्हारा ॥ बनिज
विद्या पढन जो सीखे ॥ मंत्र शिद्ध ध्या
न अराधे॥बैरी भवन गवन तत कीजे॥
और कहूँ तोय जात न गाजे ॥ और
कहूँ जो तुम मांगो ॥ बीख भूत उतर
ने लागो ॥ सत्कबीर कहे बिचारी ॥
ये चार करमभानकी न्यारी ॥

साखी।

चर कारजको भानहै, थिर कार
ज को चंद ॥ सुषुमना चलत न चा
लिये, तहाँ हान होय कछु दंड ॥ गाम
परगना खेतपुनि, इदर उधर घर हो
य ॥ सुषमना चलत न चालिये ॥ ब
रज रहो जीत ना होय ॥ छिनबायें
छिन दाहिनें॥ सोई सुषमना जान ॥ के

वैरी वाकूं मिलैं करे कारजकी हान॥ हो
य क्लेश पीडा कछू॥ जो कोई देखे जाय॥
सुषमन चलत न चालिये॥ दोनो दिया
बताय॥ जोगकरै सुषमना चले॥ के आ
त्माको ध्यान॥और काज कछु ना करो॥
तो कछु ना आवे हान ॥ पूरव उत्तर म
तचलो॥ बायें सुरप्रकास ॥ हानहोय
वहुरे नहीं ॥ आवनकी नहिं श्रास ॥
दहिने चलत न चालिये॥ पश्चिम दक्षन
देश ॥ जीव जावे वहुर नहिं आवे ॥
यही भेद कहा समुजाई ॥ दहिने सु
रमें जो जाय ॥ पूरव उत्तर देश ॥ सु
खपती आनंदकरे ॥ समान होय सब
काज ॥ बाये सुरमें जो जाय॥ दक्षन
पश्चम देश॥ सुखपती श्रानंदकरे ॥जो

जाय परदेस ॥ दहिनेसेती आयकर ॥ बामे पूछै आय॥बांये सुरबंद होय॥ तो सुफल काज न होय ॥बांयेसेती आयक र ॥ दहिने पूछे आय ॥ भान बंद चंद्र चले ॥ तबही कारज नसाय ॥ जो दहि नासुर बहतहै ॥ कारज पूछे कोय॥तेज बचन वाकूं कहो ॥ मनसा सुफल होय॥ जब सूरज बाहर को चले ॥ जब कोइ पूछे आय ॥ वाको ऐसा भाखिये ॥ न हिं कारज शिघ होय ॥ चंद चलावे दिवसकूं ॥ रात चलावे सूर ॥ नितसाध न ऐसे करे ॥ तो उंमर होय भरपूर ॥ पांचघडी पांचूंचले ॥ ता पीछे दहिनो होय ॥ दस स्वासा सुषमनाचले॥ ताही बिचारी लेय ॥आठप्रहर दहिनो चले॥

बदले नाही सुर ॥ तीन बरस काया र
हे ॥फिर जीवका गवन॥ सोला प्रहर च
ले स्वासा॥जो पिंगलामाही ॥ जुगल ब
रस काया रहै ॥ पीछे रहा न जाय॥पां
च रात और पांच दिना ॥ चले दाहि
ना सूर॥ छेमछर काया रहे ॥ पीछे र
हा न जाय ॥ रातदिना चले स्वासा ॥
भानुस्वासकी ठोर ॥ आइसु जान षट
मासके॥ फेर जाय तन छांड॥ बीस दि
ना औौर रयन दिन॥ रवि चलै एक सा
र॥ तीन बरस काया रहै ॥ फीर लिये
जम मार ॥ एक मास जो रैन दिन ॥
भानु दाहिनो होय ॥ सत्त कवीर ऐसे
कहै॥ नर जीवे दिन दोय ॥ नाड़ी जो
सुषमन चलै॥पांच घडी ठैराय॥ पांच

घडी सुषमना चलेतो॥तवही नरमरिजा
य ॥नहिं चंदा नहिं सूर है॥नहिं सुषमना
चाल॥मुखसे स्वासा चलत है॥तो घड़ी
चारमें काल॥चार दिनाको आठ दिन ॥
बारा दिनके बीस ॥ ऐसा जो चंदा च
लै आयुष जान बड हीत ॥ प्रती राती
दिना औरतीन दिना॥ चले तत् आका
श॥एक बरस काया रहे॥फेर काल प्रवा
स॥दिनको तो चंदा चले॥ चले रात्रिको
सूर॥यहै निश्चय कर जानिये॥ प्रान गव
न वड दूर॥रातको चलेजो चंद्रमा॥दिन
को सूरज बहाय॥ एक महीना ऐसे च
ले॥ तो छठे महीने काल॥जब साधू ऐसे
लखे॥ छठे महीने काल॥आगे ते साधन
करे ॥ बैठ गुफा तत्काल ॥ जो राखा

चाहे आपकूं॥तो प्रान अपान मिलाय॥
उत्तम करे समाधी॥ताको काल न खा
य॥पवन पिवे ज्वाला पचे॥नावतले
कर रहाय ॥ मेरुदंड कूं फोडकर॥बसे
अमरपुर जाय॥जहां काल पहुँचै नहीं॥
वहां नहीं जमराय॥गगन मंडल जाय
के॥कर उनमुनिमे बास॥जहां काल
नहिं जानहीं॥छूटे सकल संताप॥होय
उनमनी लीन मन॥तहां विराजे आ
प॥तीन बंद लगायके॥पांचो वाय कूं
साद॥सुषमन मारग होयकर॥चल देख
अलखको गाम ॥ सुर्त जाय सब्दसो
मिली॥जहां होय मन लीन॥ खेचरी
बंद लगायके॥जहां पुरुष आप परवी
न॥आसन पद्म लगायके॥मूल कँवल कूं
बंद॥मेरुडंडसुधारके॥सुर्त गगनकूँ बांध

चंद सुरज दोनो समकरे॥त्रिकुटी पेडल गाय ॥ षटचक्र कूं छेदके॥सुंन सिखर कूं जाय॥इंगला पिंगला साधकर ॥करे सुष मना बास ॥परम जोति जाहां झिल मिले ॥ पूजो मन बिस्वास ॥ जिन साधन आगे करी॥तासूं सब कुछ होय ॥जबलग चाहे तब लग जीवे॥काल बचावे सोय ॥ रतन अवस्था जोगीकी ॥ बैठरहे मन जीत ॥साध बचावे कालसो॥अंत मरै न हिंजीत॥ सदाआनंदमें लीनरहै॥करिक रि जोग अभ्यास॥आवत देखाकालकूं॥ गगन मंडलमें करे वास ॥ सुंन अभ्यास सदा करें॥ अखै प्रान चढाय॥ पूरा जो गीसो जानिये ॥ ताको काल न खाय ॥ पहिले साधन ना कियो ॥ गगन मंडल

को जान ॥ आवत देखा काल कूँ ॥ जब
क्या करै अग्यान ॥ जोग साधन नहिं
कियो ॥ जवान अवस्ता मीत ॥ आते
देखा कालकूँ ॥ जब कैसे सके वे जीत ॥
कालजीत हँसा मिले ॥ सुंन मंडल अ
स्थान ॥ आगे जिन साधन करी ॥ रतन
अवस्था जान ॥ काल अवधि बीते तबै॥
भिन्न भिन्न समुजाय ॥ जोगी प्रान उ
तारिये ॥ लीजे समाधि जगाय ॥ काल
जीते जगमें रहे ॥ मृत्यु न आवे ताय ॥
दिसा दुपार कूं फेरी करे॥ जब चाहे त
व जाय ॥ सूरज मंडल चीर करे॥ जोगी
त्यागे प्रान ॥ सत् शब्द सोई लिये ॥ पा
वे पद निर्वान॥कृष्ण पक्षके आदियह॥द
क्षिन होय जो भान ॥ जोगी काया न

छांडिये ॥ इजा होय पुनि हान ॥ रा
ज पाय सत्नाम भजे ॥ पूरबले पैछा
न ॥ जोग जुक्तिसो पाइये ॥ दुसरी मु
क्ति निधान ॥ उत्तरायन सोई लखो ॥
सुक्कपक्षके माहिं ॥ जोगी काया त्यागि
ये ॥ यामें संसै नाय॥ मुक्ति होय बहुर
नहिं आवे ॥ जीव खोज मिट जाय ॥
बुंद समानी समुद्रमे ॥ दुतिया नहिं ठै
राय ॥ दक्षिन मे सूरजरहे॥रहे पट मास
जान ॥ फेर उत्तरायन पखकरे ॥ रहे षट
मास जान॥दोनो सुर कूं साधकर ॥ स्वा
सामे मनराख॥भेद सरोदाको पाय करै॥
तब काहूको कहा भाख ॥जो रण ऊपर
जाइये॥दहिने सुर प्रकास॥जीतहोयहा
रै नहिं॥करै शत्रुको नाश॥दुर्जनको सुर

दहिनो ॥ तेरो दहिनो होय ॥ जो कोई पहिले चलै॥छत्र जीते सोय॥ जल वायु पृथ्वी चले ॥ जाय वैठे कोई भूप॥ आ प वैठे दल पेखिये ॥ वात कहतहूं गुप्त ॥ जल पृथ्वी सुरमे चलै ॥ सुनो कानदे सीस ॥ सुफल कारज दोनों करै ॥ के धर्तीके नीर॥पावक और अकासहै॥तत वायु जो होय ॥ कछु कारज ना कीजि ये॥इनमें वर्जूं तोय ॥ दहिनो सुर जबही चले॥तादिन कहूं जो तोय ॥ तीन पांव आगे धरै॥ सूरजके दिन होय ॥ वामां सुरमे चलतही ॥ पहिले बायां पगधरै॥ होय चंदके चार ॥ गर्भवतीके गर्भकी॥ जो कोइ पूछे वात ॥ वालक होय जी वै की मरिजाय ॥ दहिना सुर चलत

ही॥ जो कोई पूछे आय ॥ वाको बामो
सुर चले बालक होय मरिजाय ॥ दहि
नो सुर जब चलतहै जो कोइ पूछे आ
य ॥ वाहीको दहिनो चले॥ तो बालक
होय सुखपाय॥बामो सुर जबही चले॥
जो कोइ पूछे आय ॥ बाहीको दहिनो
चले॥ बेटी होय मरिजाय ॥ बामासुर
जबही चलै॥जो कोइ पूछै आय ॥ वाही
कों बामो चलै॥ तो बेटी होय सुखपा
य॥तत् अकास जबही चलै ॥जो कोइ
पूछै आय॥ छाया होय बेटी नहीं॥पेटमा
हि समाय॥जो कोइ पूछे आयके॥वाका
गर्भको नाव॥ दहिनो वाको सुर चलै॥
सुद्ध स्वासके ठांव॥ बंद और जो आय
कर ॥ग्रहीपुछे जो आयके॥बंधनते नि

भेय होय ॥वहीते सूर ना होय॥ इंगला
पिंगला सुषमना ॥नाडी कहेतीन॥चंद्र
सुरज विचारकर॥रहे स्वास लौलीन॥स
व कुछ समेटकर॥आपमे आप समाय॥
जैसे ग्यान स्वासामे ॥ रहे सुर्त लौलीन॥
सव कुछ समेटक ॥ आपमे आप समा
य ॥ जैसे ग्यान स्वासामे रहे सुर्त लौला
य ॥ स्वासा वानी करारकी ॥ येही जाने
नर लोय ॥ वीति जाय स्वासा सवै ॥
तवही मृत्यु होय ॥ एकवीस हजार छै
सो चलै ॥ रात दिन ले स्वास ॥ वीसा
सो जीवे वरस ॥होय प्रानको नास ॥ अ
काल मृत्युको मारे जो करें भूमी भूप॥
वीति जाय॥स्वासा सब तव आवे जम
दूत ॥ चौदा जम सायके॥ स्वासा जुक्ति

चलाय ॥अकाल मृत्युआवे नहीं॥जीवे पूरी उमर भरपाय ॥ सुक्षम भोजन करे रहे नाम लौलाय ॥ जलथोडा पीजे॥बहुत बोल मत खोय ॥ मोक्ष मुक्ती जो चहाइये॥तो तजो कामना काम ॥ मनकी इच्छा मेटि के॥ भजो सत् निज नाम॥देहअभ्यास सबमेटके॥ पांचो के तज करम ॥ आपमें आप समावही तब छुटे देहिको भरम ॥ जो होती सो धर्मदास सब हम तुमसे कही ॥ पार ब्रह्म परमात्मा ॥ सतकबीर भल जोइ ॥ देह मरै तू अमर है पारब्रह्म है सोय ॥ अग्यानी भटकत फिरै लखे सो ग्यानी होय ॥ देह नहिं यह ब्रह्म है ॥ अबिनासी है सोय॥ नित्य न्यारा

देहसे देह मरम करजान॥ डोलना बो
लना सोवना॥ भोजन करम अहंकार॥
सुख दुःख मध्ये रोग सब॥ गरमी सीत
निहार॥जनम मरन देहको॥सुर्त मूर्त है
नाम॥ उपजे विन देह सो॥ पांच तत्
का गाम॥ पावक पानी वायुहै॥ धर्ती
और अकास॥पांच पचीस देहमें॥गुन
तीन प्रकास॥ घटउपाधि जानिये॥कर
त रहत उपाय॥कामक्रोध हंकार॥
मोह लोभ ललचाय॥सुनो धर्मदास
जिभ्या इंद्री जलकी॥ अकाश इंद्रिय
कानकी॥ नासा इंद्री धरनकी॥कर वि
चार पैछान॥ त्वचा इंद्रिबायकी॥पावक
इंद्री नयनकी॥ इनका सोध साधसो
पाइये॥ पावे पद जब सुख चयन॥

निद्रासमानी आळसमें ॥ भूक प्यास जिव होय ॥ सतकबीर पांचों कहे ॥ अग्नी तत्वकी सोय ॥ रक्तपित्त कफ सो तीसरो ॥ बूंद परे सो जान॥पानी पैदा भये ॥ कर बिचार पैछान ॥ चाम हाड नव नाडिका ॥ रोमावलि और मास ॥ पृथ्वीके पांचूकहे ॥ अंत सर्बकूं नास ॥ बलकरन और धावन ॥ पसरन सँको च न चलन ॥ देह पडे सो जानिये ॥ बाय ततके पांच ॥झूंठ साँच मोहो लोभ हंकार ॥ देहिमें रहे अनुराग ॥ तत आकासकी प्रकृती येह ॥ नित्य न्यारा इन सूं तूं जाग ॥ पांच पचीस और तीन है ॥ इनमें सब जग भुलान ॥ निराकार पारि ब्रह्म है ॥ आप आपमें समान ॥ निरालं

भ निर्लेप तू ॥ देह जान आकार॥ अपु
ने देही मनमथे ॥येही ग्यान ततसार॥
शस्त्र छेद सके नहीं॥ पावक सके नहिं
जार ॥ मरै मिटे सो तूं नहीं ॥ गुरुमुख
तत्त विचार॥ जल काढेका वाय है ॥
वहनिमिटे फिर होय ॥ जिव अविना
सी नित्य है ॥ जाने विरला कोय ॥
आंखी जिभ्या नाशिका॥त्वचा औरहै
कान ॥पांच इंद्रिय है ग्यानकी ॥ जा
ने जान सुजान ॥ गुदा लिंग मुख ती
सरो॥हात पांव लखलेहु॥पांच इंद्रिय है
करमकी॥तो सूं कहि मैं दीन॥ पृथ्वि ना
भि अस्तान है, गुदा जानिये द्वार ॥
पीरा रंग तहां पैचान ॥ पीना खाना अ
हार॥ लाल रंगहै आग्निको॥ मोहो लोभ

अहंकार॥ जल का बासा अस्थूलहै॥ लिंग जानिये द्वार॥ मिथुन कर्म अहार है॥ सुभक नासका द्वार॥ हारो रंगहै बाय को॥ गंध सुगंध (जान) आहार॥ अकास सीस में बास है॥ तेहि सम को पैचान॥सब्द को शब्द अहार है॥ द्वार श्रवनको जान॥कारन सुक्षम लिंग है॥और अस्थूलहि प्रान॥ चित्त बुधीमन हंकार है॥ चारो अंत:करनको जान॥कारन ग्यान बिचार है॥ सो बिग्यान से जानिये॥ करके नित न्यारा रहै॥ (शब्द) स्पर्श रूप रस गंधये॥ देहे कर मात्रा कहे॥ तूं होता नेहरूप॥ निराकार है आद तूं॥ अचल निरबासी तू जीव॥ निरालंब निरबैर सुंन॥ अज्ञ अबि॥शी जीव॥ बामा कोठा अगि

नको ॥ दक्षन जल प्रकाश ॥ मन हि
रदे अस्तान है ॥ पवन नाभिमें वास ॥
मूल कँवल दल चारको ॥ लाल पांखरी
रंग ॥ गौरीसुत तहँ वास किये ॥ छे सो
जाप वा संग ॥ कँमल षटदल पीरो ॥
नाभीतले संभार ॥ षट सहस्र जाप ता
हां जपे ॥ ब्रह्मा सावित्री नाल॥ अष्ट पां
खरीको कमल है ॥ नील बरन सो निहा
र ॥ विष्णु लक्ष्मी बास कीना ॥ तहां
जाप षट सहस्र जान ॥ अनहद मे द्वा
दश बसे ॥ सफेद रंग तासको जान ॥
षट सहस्र जाप तहां जपे ॥ शिव शक्ति
तहां निहार ॥ खोडस दल कँमलहै ॥ कँ
ठ वासना रूप ॥ जाप सहस्र तहां ज
पे ॥ भेद कहूँ अति गुप्त ॥ अनहद चक्र

दो दल कँवलहै ॥त्रिकुटी धाम अनूप ॥ जाप सहस्र तहां जपे ॥ भेद कहूँ अति गुप्त ॥ बैठे जोति स्वरूप जहां ॥ सहस्र पांखुरी का कँवलहै॥ गगन मंडलको बास ॥ जाप सहस्र तहां जपे ॥ तेज होय प्रकास ॥ जोग जुक्ति कर खोजले ॥ सुर्त निर्त कर निधान ॥ दसमें द्वार अनहद बजे ॥ होय जहां किलोल ॥ तीन बंद नौ नाडिका ॥ दसो बायकूं जान॥ प्रान अपान समानही ॥ और कहत है उदान ॥ बयान और करकरा ॥ कुंभक बायु रनजीत ॥ दसो द्वार कूं बंद कर ॥ उतमनाडी तीनआदोत ॥ इंगला पिंगला सुषमना ॥किरडा करे परबीन ॥ करत परायन नाम का॥कोई एक तरंग

ये पतीत ॥ अनेक नर नारी तहां॥आन न्द धुनीके बीच॥देखा ख्याल अपार त हँ॥पुरक करे कुंभक भरे॥रेचक पवन उ तार॥ ऐसेपरायन नामका॥ करे सूक्ष म अहार॥ धर्ती बंध लगाय कर॥ दसो द्वारकूँ संभाल॥मस्तक पवन चढायके॥ करो अम्बर पुरसो भोग॥जो नर रातकूं जाग जाने॥पांचो मुद्रा साधकर॥ पावे घटका भेद॥ नाडिसक्त चढायके॥ षट चक्रकूं छेद॥जोग जुक्ति सो कीजिये॥क र अजपाध्यान॥ आप आपको विचार को॥मरमतत्व ध्यान॥शूद्र वैस शरीरहै॥ व्राह्मन और रजपूत॥ बूढा बालक आ त्मा नहिं॥धर्मदास लखो सोउपूत॥ का या माया जानिये॥जीव ब्रह्म है नीत॥

काया छूटे सो चितमिले ॥ तूपरमात्मा
नीत ॥पापपुन्य आसा तजो॥तजो मन
अस्तान ॥ काया मोहो बे करार तजो॥
जपो सो अजपाजाप ॥ आप भुलाने
आपमें ॥ बांधे आपहि आप ॥ जाकू तु
म ढूंढत फिरतहो ॥ सोतो आपे आप ॥
इच्छा देखो बिचार कर ॥ काया को न
बास ॥ तू तो जीवन मुक्त है ॥ तजो मु
क्तिकी आस॥पावक भया वाहि सूं॥अ
ग्नि पावक सो होय ॥ पावक सो पानी
भया॥पानी धर्ती सोय॥धर्ती मीठा स्वा
दहै ॥खारो स्वादहै नीर ॥ अग्निचरपरो
स्वादहै॥खाटोस्वादहै पवन ॥ खाटो मी
ठो चरपरो ॥ खारो परनेहहै ॥ जवही त
त विचारये॥स्वाद नहीं अरु रंग ॥ऋौर

बताई चाल॥ पांच तत्की साखा॥ सा
धपावे तत्काल॥ त्रीकोना पावक च
ले॥ धर्ती तो चौकोन॥ सुंन सुभाव
अकाश है॥ पानी लंबा गोल॥ आ
गन तत गुन तामसी॥ कहूं रजोगुन
वाहि॥ पृथ्वी नीरसंतोष गुन॥ नामहै
स्तीर॥ नीर चले जब स्वासमें॥रनऊपर
चढे मीत॥ बैरीको सिरकाटके॥ घर
आवे रनजीत॥ पृथ्वीके प्रकासमें॥ जु
द्ध करे जो कोय॥दो दल हारे बरोबर॥
हारवायुमें होय॥ पृथ्वीततमें जन्मे
बालका॥ होवे भूपसो नीर॥धनवंतसो
जानिये॥ सुंदर होय शरीर॥ आसन
पद्मासाधकर॥ द्रिष्टी स्वासाके माय॥त
तभेद जो पावहीं॥ बीसाद कछुनाय॥

आसन पद्मलगायके ॥ एक बरनी सा
द ॥बैठे डोले सोवही॥स्वासां हिरदे सा
द ॥ नाभी नाशिका माहे ॥ सत सोहं
ग जाप ॥ सोही अजपा जाप है ॥ छु
टे सकल संताप ॥ भेद सरोदाको कह
तहूं ॥ सुक्षम कहि ना जान ॥ ताहि स
माधीको॥ अपने मनचित आन ॥ ध
र्ती टरे गिरिवरटरे ॥ सिंधु टरे सुनमीत ॥
वचन सरोदाको नाटरे ॥ सो निश्चयकरि
चीत ॥ सतकबीर दयाकरी ॥ दिये सरो
देग्यान ॥ धर्मदास अस्तितभये ॥ आ
वा गवन मिटिजान ॥ इति श्री कबीर
साहेव का ग्यान सरोदा संपूर्ण ॥

श्री

अथ श्रीग्रंथ भवतारन ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
वंश बयालीसकी दया।

अथ श्रीग्रंथ भवतारन प्रारम्भः ॥

धर्म दासो वचन ॥ धर्म दास विनवे कर जोरी ॥ सतगुरु सुनियो विनती मोरी ॥ भव सागर कौने विधि छूटे ॥ जम बंधन कौने विधि टूटे ॥ भव दर्याव वार नहिं पारा ॥तामें अटके सकल संसारा॥

सो दर्याव कौन विधि थाऊं॥ परम पुरुष कौने विधि पाऊं॥करूं भक्तिकै जोग कमाऊं॥ देऊं दानके तीरथ न्हाऊं ॥करूं जोगके इंद्रिय साधूं ॥ ब्रत करूंके हरि आराधूं॥ करूं अचारके साधना साधूं॥ वोही फिरके मनकूं बाधूं॥जो तुम कहो सोई मैंकरऊं॥ बचन तुमार हृदयमें धरऊं॥भो सागर दुःख मेटो मोरा॥छूटे जनम मरनको दोरा॥संसे रहित मोहि करहुं स्वामी॥तुम सब घटके अंतरयामी॥

सतगुरुबचन॥ धर्मदास मैं सत्य बताऊं॥ भवसागरको भरम मिटाऊं॥ संसे रहित सदा तुम होऊ॥ तुमरी राह न पकरै कोऊ॥ करो भक्ति भव बंधन काटो॥जनम मरनकी संसे फाटो॥ भा

व भक्ति करियो चितलाई॥ सेवो साध त जि मान वडाई॥सुनो धर्मदास साधु पद ऊँचा ॥ इनसीढी कोई नहिं पहुंचा ॥ जोगी जोग साधना करही॥ भवसागरते ऊ नहिं तरही॥दान देवे सोई फलपावे॥ भवसागर भुक्तन कूं आवे॥तीरथ न्हाये जो कछु होई ॥ सो मैं भाखि सुनाऊं तो ही ॥ जन्म ले उज्वल तन पावे ॥ धन्य होय पुनि जगमें आवे॥ऊँचे घर सो लेइ अवतारा ॥ ब्राह्मन क्षत्रीके भेवारा ॥ इं द्रिय साधनहै तपनीका ॥ विना भक्ति जानो सवफीका इन्द्रिय साधनहै तप भारी॥ तामस तेज क्रोध हंकारी ॥ क्रोध किये गति मुक्ति न होई ॥ भक्ति महात म हात न आई॥व्रत एकभक्तिका पूरा॥

और बर्त सब कीजे दूरा ॥ और बर्त स
ब जमकी फांसी ॥ भक्ति बर्त मिले अ
बिनाशी ॥ हर अराधन कथा सुनाऊं ॥
कहूं भेद सुन तुम चित देऊं ॥हर हर नाम
सदाशिव केरा॥तासों मिटे ना भव का
फेरा ॥ बहुत प्रीतसो शिवकू ध्यावे ॥ रि
द्धि सिद्धि द्रव्य बहुपावे॥मन चित नेह
चे के करहीं ॥ गिरि कैलासमें बासा कर
हीं ॥ फिरके काल झपेटे वाही ॥ फिरडा
र देहि भवसागर माहीं ॥ ताते संसै छूटे
नाहीं भवसागर जिव भरमें जाई ॥ शि
वसाधनकी येही गती॥निर्भय पद पावे
नहिंरती ॥ जाकू सुमरे जोगी जती ॥
चौरासी भरमे उतपती ॥ हर हर की ये
कथा सुनाई॥ आगे और सुनाऊं भाई॥

साखी।

शिव साधनकी यह गती, शिव है भव के रूप ॥ बिन समुझे जगत सब, परे भरमके कूप ॥ नरक वासमे मुनि पडे, ऐसी शिवकी मौज॥कहे कबीर बिचारके, मिटै न जमकी फौज ॥

चौपाई।

हरि हरि नांव बिष्णुका होई॥ बिष्णु बिष्णु भाखे सब कोई॥बिष्णु कूं करता बतलावे ॥ कहो जीव कैसे फल पावे, सब घट मांही बिष्णु बिराजे ॥ खान पानमे बिष्णुहि गाजे॥ सकल भोग बिष्णु ही लेही॥भोगकरे जगको भरमाई॥हरि हरि नाम बिष्णुका भाखा॥ सुभ असुभ करम दोउ राखा ॥इनमें करे किलोल सदाही ॥ करै भोग जीवन भरमाई ॥

बहुत प्रीतसों बिष्णु कूं धावे ॥ सो जिव विष्णु पुरीमें जावे॥बिष्णु पुरीमें निर्भय नांहीं ॥ फिरके डार देहि भव माहीं ॥ हरि हरि नाम विष्णु का भाखा॥अब हरि का और सुनाऊं साखा॥

साखी।

हरी नाम विष्णुका, जिसने जीव किया सब जेर ॥ चौराशी भरमें सदा, मिटे न भवको फेर ॥

चौपाई।

सुनो धर्म दास तुम साधू ॥ इनको कबहूं मत आराधू ॥ हरि हर बिधि ब्रह्माकेनाऊं ॥ रजो गुण व्यापक रहे सब ठाऊं॥जगत कहे ब्रह्माहै कर्ता॥ब्रह्मा माही सब भये मरता ॥ ब्रह्माको पूजे संसारा॥सो जिव होय न भवते न्यारा॥पढ

पढ विद्या जग भरमावे ॥ भक्ति पदा रथ कैसे पावे ॥ पोथी पाठ पढे दिन राती ॥ ये सब भरमकी उतपाती ॥ आप भरम ते निरभय नाहीं॥ बहाजात भरमके माहीं॥औरन को सिखावन देई ॥ तासो मिले ना पर्म सनेही ॥पाप पुन्य को लेखा करही ॥ भक्ति बिना चौराशी परही ॥ ये है ब्रह्माकी करतूती॥ब्राह्मन पूजे होय न मुक्ती ॥

साखी ।

त्रिगुन भक्ति है जक्तकी, निरगुन लखे न कोय॥सरगुन निरगुन दोऊ मिटे, तब भक्तरहित घर होय॥ यह त्रिगुनके भक्तिमे, जिन भूलो धर्मदास ॥ इनके ऊपर निरगुन है ॥ तहँ जोगीका वास॥

चौपाई।

धर्मदास तुम संत सुजाना ॥ निरगुनसो अब कहूं बखाना॥ निरगुन नाम निरंजनभाई ॥ तिन सब यह उतपन्न बनाई ॥ निरगुनसों भयाओंकारा ॥ तासो तीनगुन बिस्तारा ॥ निरगुनसो मनभया प्रचंडा॥ ताको बास सकल ब्रह्मंडा ॥ अहंकार मन आप निरंजन ॥ नाना बिधिके कीये बिंजन ॥ भांतभांतके घाटसँवारा ॥ कहां लग गिनों वार नहिं पारा ॥ ताको अँस सकल अवतारा ॥ राम कृष्ण तामें सिरदारा ॥ पूरण आप निरंजन होई ॥ इनमें फेरफार नहिं कोई ॥ सरगुन निरगुनकी करसेवा ॥ भक्ति करे अरु पूजे देवा ॥ करेअचार बिचार न जाने ॥ सो मेरे मन कबहु न माने ॥

मन बोधे मनमाहिं समावे ॥ निज प
दको कोई नाहिं पावे ॥ मन को बोधकरे
जो कोई ॥ मन पौंचावे पहुंचे सोई ॥
जाय निरंजन माहिं समाई ॥ आगे
गमनका करै उपाई ॥ ऐसे तीन लोक
सब अटके ॥ खरे शहाने ते सब भट
के ॥ ऋषि मुनि गंधर्व देवा ॥ सब मिल
करै निरंजन सेवा ॥ सिध साधिक साध
जो भयऊ ॥ इनके आगे कोइ ना ग
यऊ ॥ बहुत प्रीतसों भक्ति विचारी ॥
निरंजनकी सेवा चितधारी॥ जाय निरं
जन सो होय भेटा ॥ कालरूपधर करै
समेटा ॥ यही है निरंजन केर पसारा ॥
तामें अटके सब संसारा ॥ जहां तहां
राखे बिलमाई ॥ रचना अनंत अपार

बनाई ॥ धर्मदास तुम भक्त सनेही ॥ इनमें जिन अटका वो देही ॥ जन्म धरे छूटै नहिं भाई ॥ ताते आय कहूं गोहरा ई ॥ भक्ति गुप्त जाने नहिं कोई ॥ सुर्त सनेही पावे सोई ॥

साखी।

इनते भक्ती गुप्त है, सुनो धर्मदास सुजान ॥ भक्ति करै भरमैं नहीं ॥ सोई भक्ति परमान ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ हेस्वामी मैं कछु नहिं जानी ॥ गुप्त भक्ति मोहि कहो ब खानी॥तुम ये भक्ति कहांते आनी ॥ सो मोहि बात कहोबखानी ॥ तुमरी भक्ति कौन बिधि पावे ॥ कौन बातकी भक्ति कहावे ॥ भक्ति कही जे कौन प्रकारा॥

ताको स्वामी कहो विचारा॥ भक्त भक्त सब जगत बखाने ॥ भक्त भेद किसी विधजाने ॥ सो निश्चय मोहि कहो बखानी ॥ केहिविध छूटे भवकीखानी ॥

साखी।

भव बानी भ्रम दुख बडो, सुखकर सतगुरुदेव॥भक्ति करूं निह कपटहोय, सदा तुमारी सेवा ॥

चौपाई।

सतगुरुबचन ॥ कहे कबीर सुनो म म बानी ॥ भक्ति सारमे कहूँ बखानी ॥ आगे भक्तभये बहु भाई॥ करी भक्ति ये जुगति न पाई ॥ आदि भक्ति शिव जोगी केरी ॥ राखेगुप्तनजगतमें फेरी ॥ जोग करे अरु भक्ति कमावे ॥ अक्षर एकनाम धुनि लावे॥ सो अक्षर है ररंका

रा ॥ तासूं उपजा सकलसंसारा ॥ अधर रहे ब्रह्मांडके माही ॥ शिव जानत कोइ जानत नाहीं ॥ तासो मेरीभक्ति है न्यारी ॥ जाको क्या जाने संसारी ॥ ताको जोगेश्वरनहिं पावे॥और जिवनकीकोन चलावे ॥ शिवसनकादी कोइन जाने ॥ ऐसी बात छान बिन छाने॥ सोउ शिव आगेको नहिं आवे ॥ तीन लोक प्रभुता उठजावे ॥ ठौर हमारा कैसे कर पावे ॥ वहांके गये बहुर नहिं आवे ॥ सुनो धर्मदास सब बरन अबरना ॥ ब्रह्म पुत्र सेवे तेही चरना ॥ सनक सनन्दन सनत् कुमारा ॥ सनकादिक चारो अवतारा॥ पांच बरस काया नित रहई॥ब्रह्मलीन कोउ पार न लेई॥केतक ब्रह्मा होय होय

गयऊ ॥ सनकादिकसो निछेल रहेऊ ॥ ध्यान करै निरंजन माहीं ॥ निरंजन सो न्यारा नाहीं॥ मेरा भेद निरंजन पारा॥ जाको हँस अंस अवतारा ॥ यहां तहां कोई विरला जाने॥ आगे कहो कौन बिधि माने ॥ इनकी भक्ति करै नर नारी ॥ हमरी भक्ति न जाने कोई ॥भक्त अनेक भये जग माहीं ॥ निर्भय घरकूं पावत नाहीं ॥ भक्ति करी तब भक्त कहावे ॥ भगसो रहित न कोई पावे ॥ भग भुक्ते फिर फिर भग आवे ॥ भगते बचे न कोऊ पावे ॥ चौदा लोक बसे भगमाहीं ॥ भगते न्यारा कोऊ नाहीं ॥ न्यारी जुक्ति मैं तुमैं दिखाई ॥ तहाँ सुर्ते रहे साध कहाई ॥ भग भुक्ते और भ

क कहाई॥ फिर फिर जोनी संकट
आवे॥मेरी भक्तिकी जुक्तिको न जाने॥
ताको आवागमन नसाने॥ भक्ती करे
मुक्ति तब होई॥ना तो बाना जाय बिगो
ई॥ भक्ति भेद कहतहूं भाई॥ निरमल
भक्तनका उपाई॥ तुम जो बूझो भक्ति
प्रकारा॥ ताका भेद सुनो अब न्यारा॥
भक्त होय नहिं नाचे गावे॥ भक्त होय
नहिं घंट बजावे॥ भक्त होय नहिं मूर
ति पूजा॥ पाहन सेवे कहा तोहे सूजा॥
बिमल बिमल गावे अरु रोवे॥ छिन य
क प्रेम जनमको खोवे॥ ऐसा साहेब मा
नत नाहीं॥ ए सब काल रूपके छाहीं॥
मनही गावे मनही रोवे॥ मनही जागे
मनही सोवे॥ जबलग भीतर लगन न

लागे ॥ तबलग सुर्त ना कबहू जागे ॥ स
त्त नामकी खबरि न पाई॥ काकर भक्ति
करो रे भाई ॥ ठौर ठिकाना जानत ना
ही ॥ झूठे मगन रहे मन माही ॥ कहन
सुननको भक्त कहावे ॥ भक्त भेद कित
हू नहि पावे॥ लगन प्रेम बिन भक्त न
होई ॥ सत् संगत पावे नहिं कोई ॥
अपने साहेबको नहिं जाना ॥ बिना दे
ख का करो बखाना ॥ ऐसे भूल परे सं
सारा ॥ कैसे उतरे भवजल पारा ॥ सत्
भक्तको जब लग नहि लागा ॥ऐसे है
सब जीव अभागा॥ धर्मदास तुम हो
बुधवंता ॥ करैं भक्त तब सत पावे संता॥
एक पुरुष है अगम अपारा ॥ सब घट
व्यापक सबसे न्यारा ॥ ताको नहिं जा

ने संसारा ॥ ताकी भक्त महा निजसारा ॥ भक्ति करे भव उतरे पारा ॥ सुर्त निर्तसे सेवे सारा ॥ यहि बिधि भक्त पदारथ पावे ॥ मुक्त होय भव बहुर न आवे॥ भव सागर सों उतरे पारा॥ फिरके जग न लेहि अवतारा ॥ ऐसी भक्ति मुक्तिके दाता ॥ जाकी गति नहिं लखे बिधाता भक्तहि भक्त भेद है भारी ॥ यहि भक्ति जक्तसो न्यारी ॥

साखी।

मुक्त पदारथ अगम फल, चार मुक्त सो न्यार ॥ पावे पूरन पुरषको, जग न लेहि अवतार ॥

चौपाई।

धर्मदासोवचन ॥ धर्मदास कह सुनो गुसांई ॥ पूरन पुरुष बसेकेहि ठांई ॥ कैसे

चरन कँवल चितदीजे कौन वात साधो सो भक्ती॥ सत मोहे सो वतावो जुक्ती॥

सतगुरुबचन ॥ पहिले प्रेम अंगमे आवे ॥ साधु देख सनमुख सो धावे ॥ चरन धोय चरनाम्रत लेवे ॥ प्रेम सहित साधु कुं सेवे॥ अंतर छांडकरै सेवकाई ॥ यही विध भवको दुःख मिटाई ॥ जो साधु परम गति जाने॥ सो साधूकी सेवाठाने॥ परम पुरुषकी भक्ति दृढावे॥सुर्त निर्त कर तहां पहुँचावे ॥तासो प्रीतकरै चितलाई ॥ छांडे दुरमत और चतुराई ॥ तवही परम पुरुषको पावे ॥ भवतरके जगमे वहुर न आवे॥ भवतारन संसै नाहिं तोही ॥ दोछन होय तो लागे मोही॥ कोई बातकी फिकर न करना ॥ यही भक्ति निहचेके तरना॥

धर्मदासबचन ॥ धर्मदास पूछे चितलाई॥सकल भेद मोहि देहु बताई॥निर्गुन रहित तुमारा नाऊं ॥ कैसी भक्ति करै तेहि ठाऊं ॥ अहो स्वामि यह अचरज बाता॥भक्त करनको दावन छाता॥ सरगुन भक्ति करै संसारा॥निर्गुन जोगेश्वर आधारा॥ इन दोनोंके पार बतावा॥ तुमकिस बिध तहां मनलावा ॥ सत्य बात मोहि कहो गुसांई॥केहि बिधि सुर्त लगाऊं ताही ॥ सरगुन निरगुन पार न कोई॥मेरे मन बड संसै होई ॥ सतगुरु संसै देहु निवारी ॥ मैं जाऊं तुम्हरी बलिहारी॥सरगुन निरगुनका भेद बताओ॥ तिनसेन्यारा मोहि लखाओ ॥ मेरे मन मति आवत नाही ॥ बहुत फिकर की

ना मन माही॥ हो सतगुरु तुम समरथ सांहीं॥ दृढ करके पकरो मोरि बाहीं॥ सबे जुगत बतलावो मोही॥अंतर कछु ना राखो गोई॥तुम सत्य सत्य तुमारी बाता॥मैं याचक तुम समरथ दाता॥देउ मोहि मैं मांगौं सोई॥ सो घर लखावो मिटे दिल होई॥

साखी।

सत्य सत्य समरथ धनी,तत सत करो प्रकाश॥ सत्त लोक पहुँचावहू॥ छूटै जम बहु त्रास॥

चौपाई।

सतगुरु वचन॥सुनो धर्मनि सब कहूँ सँदेसा॥तुमसों कहूँ भक्का लेसा॥॥ भवतारनहै समरथ न्यारा॥ताको नहिं जाने संसारा॥ जोगेश्वर यह गति न

हिं पाई ॥ सिद्ध साधकी कौन चलाई ॥ भक्ती दोय जगतमें भारी ॥ ध्रुव प्रल्हाद सदा अधिकारी॥भक्ति माहिं इन सम नहिं कोई॥रामकृष्ण प्रगट नाहिं गोई ॥ दोऊ जने दोउ वर्त अराधू ॥ एकहि एक इष्ट आराधू ॥ सतजुग भक्ति करी ध्रुव राजा॥पांच वरस समदेह समाजा॥ निकसे ग्रह बाहरको गयऊ॥नारदके उपदेसी भयऊ॥ छठे मास प्रगट हरि आयउ ॥ राज दिये वैकुंठ वतायउ ॥साठ हजार वरस दिये राजू॥ कुटुम्बसहित वैकुंठ विराजू॥ एकदिवस तो परले जाई ॥ तासो फिर दइ देह गिराई ॥ सानिप मुक्ति पठंतर दीना ॥ परम पुरुष गति तेहु नहिं चीना॥ काल पुरुष राखे

सब घेरी॥ सत् पुरुष गति जाय न हेरी॥ ऐसे भक्त भये जग माहीं॥ परम पुरुष गत पावत नाहीं॥ सरगुन भक्त करै यहि पावे॥ निर्गुन मांहीं नाहिं समावे॥जो सायुज्य होय गत पूरी॥ देव निरंजन जाय हजूरी॥ जाति सरूपी ताकर नाऊं॥ चारो मुक्त बसे तेहि ठाऊं॥सा लोक्य सानीप कहाई॥सारोपी सायुज्य लहाई॥चारों मुक्त जाके घर होई॥ताको पार न पावे कोई॥ताके परै मोर अस्ताना॥ऐसी भक्ति कहा कहुँ ज्ञाना॥

साखी।

ध्रुवकी तुमसे गति कही, सुनु धर्मदास सुजान, अपरम पार न पावहीं, पूरन पद निरवान॥

चौपाई।

सुनो धर्मनी यह कथा न्यारी ॥ बडी भक्ति प्रहलाद विचारी ॥ हिरनाकुसदानव बलकारा ॥ ताके घरलीना अवतारा ॥ तपस्या करन गये बनमाहीं ॥ कोऊ बातकी संसैनाहीं ॥ प्रथम कथा ऐसी भइ रही ॥ गर्भवती होती तेहि नारी ॥ इंद्र अवाज सुनी अधिकारी ॥ नभ वानीतें भई अवाजा ॥ इंद्रासनको लेही राजा ॥ हिरनाकुस घर जन्म धराई ॥ सो इंद्रासनको लेई भाई ॥ इंद्राहि संसे उपज्यो भाई ॥ गर्भवास सो देहूं डारी ॥ यह छल इंद्र कियो अधिकाई ॥ अपने देस लेगये नारी ॥ तेही समैं नारद आयो तहां॥ इंद्र कूं समजावे जहां ॥ इनका गर्भ मत चीरो भाई॥

भक्त होय सबको सुख दाई ॥ गर्भ माहि ग्यान तिन दीना ॥ नारद एक कामबडकीना ॥ दृढ कीना तेही गर्भ के माहीं ॥ बर्स हजार रहे ले ठाहीं॥ फिर नारी अपने पुरआई ॥ इंद्रजीत हिरना कुसलाई ॥ तहां जन्मलीनो प्रहलादा ॥ राम रटन रसना ले स्वादा॥ऐसी रटन लगाई ताई॥तासम भक्तकोऊ नहि भाई ॥ केते कष्ट सहे सरीर अपने ॥ तबहु न दुःख व्यापे सपने ॥हिरनाकुसके मनमें आई॥तेरोराम मोहि देहु बताई ॥ खंब फोरलीना अवतारा ॥ नरसिंह रूप तबही धारा ॥ हिरना कुस नख उद्र बिडारा॥ अपनो जन प्रहलाद उबारा ॥ फिरके इंद्रासन पहुँचाया ॥ सरगुन भ

चौपाई।

सुनो धर्मनी यह कथा न्यारी ॥ बडी भक्ति प्रहलाद बिचारी ॥ हिरनाकुसदानव बलकारा ॥ ताके घरलीना अवतारा ॥ तपस्या करन गये बनमाहीं ॥ कोऊ बातकी संसैनाहीं ॥ प्रथम कथा ऐसी भइ रही ॥ गर्भवती होती तेहि नारी ॥ इंद्र अवाज सुनी अधिकारी ॥ नभ वानीतें भई अवाजा ॥ इंद्रासनको लेही राजा ॥ हिरनाकुस घर जन्म धराई ॥ सो इंद्रासनको लेई भाई ॥ इंद्राहि संसै उपज्यो भाई ॥ गर्भवास सो देहूं डारी ॥ यह छल इंद्र कियो अधिकाई ॥ अपने देस लेगये नारी ॥ तेही समैं नारद आयो तहां॥ इंद्र कूं समजावे जहां ॥ इनका गर्भ मत चीरो भाई॥

भक्त होय सबको सुख दाई ॥ गर्भ
माहि ग्यान तिन दीना ॥ नारद एक
कामबडकीना ॥ दृढ कीना तेही गर्भ
के माहीं ॥ वर्स हजार रहे ते ठाहीं॥ फि
र नारी अपने पुरआई ॥ इंद्रजीत हिर
ना कुसलाई ॥ तहां जन्मलीनो प्रहला
दा ॥ राम रटन रसना ले स्वादा॥ऐसी र
टन लगाई ताई॥तासम भक्तकोऊ नहि
भाई ॥ केते कष्ट सहे सरीर अपने ॥ त
बहु न दुःख व्यापे सपने ॥हिरनाकुसके
मनमें आई॥तेरोराम मोहि देहु बताई ॥
खंब फोरलीना अवतारा ॥ नरसिंह रू
प तबही धारा ॥ हिरना कुस नख उद्र
विडारा॥ अपनो जन प्रहलाद उबारा ॥
फिरके इंद्रासन पहुँचाया ॥ सरगुन भ

क्त जानो सबमाया॥ऐसी दृढ राम भक्त गहैया॥ तेउ इंद्रासन सुखलहिया ॥ ऐसे भक्त होवे नहि भाई ॥ ताकी गम तुमको समजाई ॥ इंद्रासनको राज सुनाऊं॥ महा भोग बडो सुख पाऊं॥सत्तर दोय चौकरी भुक्ते ॥ बंधन भवकी होय नहिं मुक्ते॥ बडे भक्तकी कथा सुनाई॥ पूछो और सुनाऊं भाई ॥

साखी।

इंद्रराज सुख भोगके, फिर भवसागर माय ॥ यह सरगुन की भक्ति है, कबहू निरभय नाय ॥

चौपाई।

धर्मदासो वचन ॥ धर्मदास पूछै चितलाई ॥ सतगुरु संसै देहु मिटाई॥ सरगुन भक्त मुक्त ना होई॥ निरगुन है एक

का दोई॥यह संदेह मेटो अब मोरा॥तुम सतगुरु हो बंदी छोरा॥ को सरगुन को निरगुन कैहे॥ भिन्न भिन्न भेद सो कैहे॥ सकल सृष्ट कहांसे भयऊ॥ येहि निज जुक्ति न कबहू कहेऊ॥जो मो ऊपर दया तुमारी॥ सब बिध कैहे जुक्ति विचारी॥ यह संसार कहांसे आया॥ को है ब्रह्म कोन है माया॥ अंतर छांड निरंतर भाखो॥ मोसों अंतर कछू न राखो॥ भक्त भेद कहो मोहिस्वामी॥ तुम सब घटके अंतरजामी॥ जीवकाज आहे जगमांही॥अब मोको कछु संसै नाही॥ सतगुरु मैं आधीन तुमारा ॥ तुम भवसागर तारनहारा ॥

साखी।

निर संसै पद काहहै, सो मोहे कहो

समुझाय ॥ फिर भवमें भरमें नहीं, तहां रहूं लौ लाय ॥ कहे सुने सुख ऊपजे, जग में आवै नाय ॥ सो घर मोहि लखाइये, काल रहै सिरनाय ॥

चौपाई।

सतगुरु वचन ॥ कहे कबीर सुनो धर्मदासा ॥ अब निज भेद करों प्रकासा ॥ सुर्त लगाइ सुनो मम बानी ॥ छान लेहु जो जाने छानी ॥ सुक्षम गति अति भारी झीनी॥ सो गति काहू बिरलै चीनी ॥ आद न अंत न होती माया॥उतपति परलै हती नहि काया॥ सुंन शिखरपर तत न मूला ॥ कारन सुक्षम नहि अस्थूला ॥ आद ब्रम्ह नहीं ओंकारा ॥ नहीं निरंजन नहिं अवतारा ॥ नौ अवतार नहिं चौविस रूपा ॥ तब नहिं होता जोति सरू

पा ॥ पुन्य पाप काहू नहिं थापा ॥ सो वे ब्रम्ह नहिं सोहँग जापा ॥ नहिं तव सुंन सुमरन भारा ॥ कुरम शेष नहि धरे अव तारा ॥ अच्छर एक न ररंकारा ॥ त्रिगु न रूप नहीं बिस्तारा॥सक्त ना जुक्त ना आद भवानी ॥ एक ना दोय न ग्यान अग्यानी ॥ शब्द स्वाल कछू ना होई॥ यह बूझ करै बिरला कोई ॥ आद कथा बिप्रीत बखानी ॥ सुन धर्मदास कहै मुखग्यानी ॥ नहिं तहँ बीज नहीं अं कूरा ॥ आद अमी नहिं चन्दन सूरा ॥ धर्मदास समुझके रहिना ॥ कहा कहूँ मैं कछु नहीं कैना ॥

धर्मदासो बचन ॥ धर्मदास कह सु नो गुसाईं ॥ यह तो बात बनवेकी ना हीं ॥ कियेउ संसै किये यक डोरी॥ तुम

होते कि हुते कोई औरी ॥ सत्य सत्य सत मोहे काहिये ॥ संसै रहीत सो पद लहिये ॥ आतुर वँतको पूछो सांई ॥ साध संत तुम आप गुसाई ॥

सतगुरु वचन ॥ कहै कबीर सुनो धर्मदासा ॥ सकल भेदमें कीन्ह प्रकासा॥ जो प्रतीत होय जिवमें तोरा ॥ भौको मेट सरन रहो मोरा ॥ धर्मदास छांडो सब माया ॥ अस्थिर अम्बर अखण्डित काया॥भक्तिमुक्ति उपजीहै जासो॥प्रेम लगन लगाऊं तासो॥अब मैं तोहि लखाऊं जागा॥ छूटे जनम मरनको धागा ॥ जन्म मरण है अति दुःख भारी ॥तासो तुमको लेहु उबारी ॥ मैं आपाको थापत नाहीं॥ देख लेउ तुम भायर माही ॥

साखी।

अब मैं तोही भेद बताऊं, निरमल ठौर निनार ॥ सबके परे सबके ऊपर, तहां है एक आकार ॥

चौपाई।

पुरुष कहूं तो पुरुषहि नाहीं ॥ पुरुष भया आया भवमाहीं ॥शब्द कहूँ तो शब्दहि नाहीं॥शब्द होत मायाके छाहीं ॥ दो बिन अधर न होय अवाजा॥कहा कहुँ मैं काज अकाजा ॥अमृत सागर वार नहिं पारा ॥ ना जानो केतिक बिस्तारा॥ तामें अधर भवन एक जागा ॥ अछय नाम अक्षर एक लागा॥नाम कहूँ तो नाम न जाका॥नाम धरा काल है ताका ॥ है अनाम अक्षरके मांही ॥ निह अक्षर कोइ जानत नाहीं ॥ धर्मदास तहां वा

स हमारा ॥ काल अकाल नहिं पावे पा रा ॥ ताकी भक्ति करै जो कोई ॥ भव ते छुटै जनम ना होई ॥

साखी।

भौसागर भरमें नहीं, यहै प्रताप हमार ॥ नेहचे करिके मानिहो, तुरत उतारूं पार ॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ हे स्वामी यह अकथ कहानी ॥ आगे सुनी न काहू जानी ॥ जोगेश्वर नहिं पावे पारा ॥ मैं का जानूं जीव बिचारा ॥ अचरज गति तुम आय सुनाई ॥ ताकी गति नां काहू पाई ॥ ताकी भक्ति करै केहि भांती ॥ रूप अरूप न पूजा पाती ॥ कौन जुक्तिसे भक्ति करीजे ॥ अगम ठौर कैसे करलीजे॥

जो तुम जानो मोकुं ले चलो ॥ तनमन छोड देहु सुखपलो ॥ अब कछु मोसों होवत नाहीं ॥ सुर्त समाय गई तुम मांहीं ॥ यहां वहां तुम समरथ दाता ॥ मोकों जान परी ये वाता ॥ नाम कवीर धरे सो काहे ॥ केहे कारन तुम देहे धरि आये ॥ सत् कवीर नाम मैं जाना ॥ सो भवकूं क्यौं किया पयाना ॥ ऐसे संत जन्म क्यूं धारा ॥ केहे कारन लीनो अवतारा ॥ सत् कहो वंधनमें नाहीं ॥ निरवंधन कैसे जगमांही ॥ देह धरे सबहिन दुःख पाया ॥ तुमको काहे न व्यापी माया ॥ ढीठ होय पूंछत हूं गुरु वाता॥ रीस न करहू संम्रथ दाता ॥

साखी।

मैं पूंछत हित आपने, जीव मुक्तके

काज ॥ साध संत तुम खसमहो, अब नहिं मोको लाज ॥

चौपाई।

धर्मदास कही तुम सांची ॥ मिथ्या नाहिं सत्मुख कहो बांची ॥ तुम हो हंस अंसपति राजा ॥ तुमरो मोहे करनको काजा ॥ आद अनाद सनिप हो मोरा ॥ अब मैं काज करूंगा तोरा ॥ वहांसो तुमको दीन पठाई ॥ यहां आयके लागी काई ॥ कालपुरुष दीना भरमाई॥ जिन सब सृष्टि बनायके खाई ॥ जग जीवन सो तुमहो न्यारा ॥ तुमरे काज लीनो अवतारा॥ और काज मोकों कछु नाहीं॥ रहो निरंतर जगके माहीं॥ मोहि न व्यापे जगकी माया ॥ कहन सुननको है ये काया॥ देह नहीं अरु दर्से देही ॥ रहूं स

दा जहां पुरुष बिदेही॥ ये गत मेरी जन जाने कोई॥ धर्मदास तुम राखो गोई॥ आद पुरुष निह अक्षर जाना॥देही धर मैं प्रगट्यो आना॥ गुप्त रहे नाहीं लखपावे॥ सोमैं जगमें आन चिता वे॥ जुगन जुगन लीना अवतारा॥ र हूं निरंतर प्रगट पसारा॥ सतजुग सत सुकृतमेंटेरा॥त्रेता नाम मुनिंद्र है मेरा॥ द्वापरमें करु नाम कहाई॥ कलजुग ना म कबीर धराई॥ चारों जुगके चारा नाऊं॥ माया रहित रहे तेहि ठाऊं॥सो जागा पौंचे नहिं कोई॥ सुरनर नाग र हे मुखगोई॥सब सो कहूं पुकार पुका री॥ कोई न मानै नर अरु नारी॥ उ नका दोस कछू ना भाई॥ धर्मराय रा

खे अटकाई ॥ गुप्त पसारा है अति भारी ॥ ताहि न जाने नर अरु नारी ॥ शिव गोरख सो गमना पावे॥ और जीवन को कौन चलावे ॥ नौ नाथ चौराशी सिद्धा ॥ समझ बिना जगमें रहे अंद्धा ॥ ऋषि मुनि और असंख न भेखा ॥ सत्त ठौर सपने नहिं देखा ॥ जो मैं कहुं पति आवत नाहीं॥ बहुत कहूं समुजाय मन माहीं ॥ कोई जोग कोइ मदके माता ॥ कोई कहे हम लखे बिधाता ॥ कोई मौनदास होय मनलावे ॥ मौनी होयके मूल गमावे ॥ सत्त पुरुषकी जुक्ति न पाई ॥ हिरदे धरे नहिं मनद [illegible] ई ॥ को

पढे पुराना ॥ तत्व अतत्व सभी कछु जाना ॥ कोई कहै विद्या माहिं अधीना ॥ सकल बिचार काया पै चीन्हा ॥ कोई कहै तप वसकर राखा ॥ तप है मूल और सब साखा ॥ कोई कहै कर्म अधिकारा ॥ कर्महिं सो सब उतरे पारा ॥ कोई कहे भाग लिखा सो होई ॥ भाग्य लिखा मेटे नहिं कोई ॥ कहां लग कहूं ये सब कहाई ॥ भेद हमारा कोई न लहई ॥ सबसे हार मान हम बैठा ॥ ये सब जीवकाल घर पैठा ॥

साखी।

सोहीकाल सोही कर्ता, भक्त मुक्तहि हात॥ मेरा कहा न आदरे, परपंची वड सात॥मन पर पंची मनहि निरंजन, मन हि कहै ॐकार॥ फंदे तीनों लोक सब,

कोउ न भव ते न्यार ॥ निरंजन निर्बान पद, कही तुमैं हितवंत ॥ जोगी जती संन्यासगत, कोई न पावे अंत॥सात सुर तमें रमिरहा, सुर्त सात तेहि हाथ ॥ ऐसी अगम अपार गत, तीनलोकके नाथ॥

चौपाई।

सात सुरतका सकल पसारा ॥ सात सुर्तते कोइ न न्यारा ॥ सात सुरत का भेद बताऊं॥ तामें ज्ञान सकल समझाऊं ॥ उतपति परले वाके मांहीं ॥ यह गतसो कोइ न्यारा नांहीं॥परथम अमी सुरत निजठौरा ॥ तहां निरंजन कीना दौरा ॥ वहां जाय अमी ले आवै॥तासो अजर बीज उपजावै ॥ सोई बीज रक्त मे धरही ॥ येहि बिधसो सब उतपति करही ॥ बीजहि जलका रंग कहाया॥

तासो रची सकलकी काया ॥ दूजा मूल सुर्त तेहि संगा ॥ घट घट मांहि बनावे रंगा ॥ तीजी चमके सुर्त अवारा ॥ नौ नारीमे कीन पसारा ॥ कोठा तहां वह त्तर करही॥रोम रोम जुक्ती सब धरही॥ चौथी सुंन सुर्त है भाई ॥ धर्मदास मैं तुम्हे लखाई ॥ पांचमी सुर्त सबनके ठांई ॥ सुभ और असुभ सुनावे दोई ॥ छट्ठी सुर्त ठिकाना भाखे ॥ ठांव ठांव स्वाद तेहि चाखे ॥ सो तो रहे कंठके धारा ॥ बानी भाखा करे उचारा ॥ सा तई सुर्त रहे तनमाहीं ॥ हिरदे सो कहुं न्यारी नाहीं ॥ ब्रह्मरूप धर तहां वह वै ठा ॥ गुप्त पसार सकल घटपैठा ॥ कोई न जाने ताका मर्मा ॥ ग्यानी ध्यानी

सबही भर्मा ॥ सात सुरत का कहा बिचारा॥धर्मदास कछु वार न पारा॥सात कँवलका भेद बताऊं ॥ कँवल कँवलकी जुक्ति लखाऊं॥मूल कँवल है मूलहि द्वारा ॥ चार पांखुरी है बिस्तारा ॥ तहां बिना एक देव बिराजे ॥ मूलद्वार कँवल अति छाजे ॥ ता ऊपर कँवल है दूजा॥ षट दलमें ब्रह्मा की पूजा ॥ तीजे कँवल पांखुरी आठा ॥ नाभी मांहि नालसो साठा ॥ लक्ष्मी सहित बसे भगवाना॥ चौथा कँवल हिरदेमें रहई ॥ देव महेश बसेते ठांई॥ कँवल षोडस में आत्मा ज्ञाना ॥ सक्ति अविद्या कहा बखाना ॥ छठवें कँवल पांखुरी तीना ॥ सरस्वति करसे तहां पुनिकीना ... कँवल त्रि

कुटी तीरा॥दोय दल माहिं बसे दोय वीरा॥शशी सूर प्रकासिक घटका॥ यह सब ख्याल निरंजन नटका॥ आठवां कँवल ब्रह्मडक माहीं॥ तहां निरंजन दूसर नाहीं॥नौवे कँवलका कहूं ठिकाना॥ धर्मदास बड भाग सो जाना॥

साखी।

सात कँवल और सात सुन्न, सात सुरत अस्थान॥ एकबीस ब्रह्माण्ड है, आप निरंजन ग्यान॥ रंचीक विराजे निरंजन, ठांव ठांव भरपूर, रसातल ब्रह्मांड लग, कहूँ निकट कहुँ दूर॥

चौपाई।

सुन धर्मनि [illegible]व जुक्त वखानी॥ तुम अपने दि[illegible] जानी॥ आद अंत सब तु[illegible] उतपति परलै की

गति पाई ॥ उतपत परलै शिरजन हा रा॥ मेरा भेद निरंजन पारा ॥ तहां सो जगत कहा नहिं माना ॥ ताते तोहि क हूँ मैं ग्याना ॥ जो कोइ माने कहा हमा रा॥सोई हंस निज होय हमारा॥अमर करूं फिर जनम न होई ॥ ताका खूंट न पकरै कोई ॥ फिरके नहिं जन्मे जग मांही ॥ काल अकाल ताहि दुख नाहीं॥ सुख सागर सुख मूल बतावा ॥ बडे भा गसो हंसा पावा ॥ अंकूरी जीव होय ह मारा ॥ सो भवसागर से होवे न्यारा ॥ पूर न प्रतीत करै मन लाई ॥ ताको यह पद देव लखाई ॥ सुतवंत सांचा जिव हो ई ॥ सरण तुमारी गह्यो सो सोई ॥

साखी।

प्रथम दृढ प्रतीत है, होवे भक्त अंकूर ॥

भाव प्रीतसे सेवा करे, देहु ग्यान भरपूर॥

चौपाई।

धर्मदासो बचन ॥ हे स्वामी मैं तुम कूं चीना॥आद अंतका भेद सब लीना॥ तुमहि वार हो तुमही पारा॥ तुमही सों उपजा संसारा॥ तुमही हो निज पैलेपा रा॥ तुमही सकल जगतसो न्यारा॥ गुप्त प्रगटमें सब बिध जाना॥ तुमही हो ताहां पद निर्बाना॥ ऐसी अगम गंम ताहां नाहीं॥ मैं आपन बूझा मन मां हीं॥ पूरन दया करो तुम सांहीं॥ मेरे मन कछु संसे नांहीं॥ भवतारन तुम सं से निवारन॥धर अधर दोऊ पद धारन॥ समरथ सब गति पायो तोरी॥ अब सब संसै भागी मोरी॥ भयो सनाथ तुम द र्सन पाये॥ माया छूट परम पद पाये॥

छूटा काल निरंजन मोरा॥ जन्म मरनका काटो डोरा॥ अब भौमे मैं बहुर न आऊं॥ तुह्मरे चरन कँवल चित लाऊं॥ येती जुगत न काऊ पाई॥ सो साहेब तुम मोहि लखाई॥ जान परी मोहे तुमरी बाता॥ तुम सम और न कोई दाता॥ चौरासी सों कीन्ह उबारा॥ बहुर न जन्म होय हमारा॥ समझ बूझके करूं सेवकाई॥ छांडी कुलकी लाज बडाई॥ परदातोड दिया छिन माहीं॥ जगमे कोइ काहू को नाहीं॥ अपने अपने स्वारथ आहीं॥ परमारथ काहू नहि पाई॥ ये सब जगत निरंजन माहीं॥ पांच तीनसो सब उपजाई॥ पांच तत्व तीन गुण भारी॥ इनते जुगत दिखाई न्यारी॥ पानी पवन

और जमी अकासा॥ सवपर तेज कीन्ह प्रकासा॥रजतम सात्विक तीनों जाना॥ ब्रम्हाविष्णु महेसरजाना ॥

साखी ।

पांच तीनपर अहै निरंजन, यह माया को ठाट॥ तासो सव रचना करी, भाँति भाँतिके घाट ॥

चौपाई ।

सतगुरुवचन ॥ कहै कवीर सुनो धर्मदासा॥ सकल भेदमैं किया प्रकासा ॥ तुमसो अंतर कछू न राखा ॥ जो कछुह तासो सव कछु भाखा ॥ अव तुम भक्ति करो द्रिढाई ॥ छांड देहु कुल लाज वडाई ॥ पहिले कुल मर्यादा खोओ ॥ सौ सों रहित भक्त तव होवो॥कुलके भय सवही को भारी॥कहांके पुरुष कहांके ना

री॥जाते जगको बंधन कीना॥काज अ
काज न काहू चीना॥ ताते परदा दूर नि
वारो॥सेवा करो सन्त मन धारो ॥परदा
सात कालकी फांसी ॥ ये बंधन दुनियां
सब गासी॥राजा परजा बडे कुलीना॥
पडदे काल मरम नहिं चीना ॥ सेवा
करो छांड मनदूजा॥ गुरुही सेवा गुरु
ही पूजा ॥ गुरुसो कपट करै चतुराई॥
सो जिव जगमें भरमैं आई॥ ताते गुरु
सो पडदा नाहीं ॥ पडदा करे रहै भव
मांहीं ॥ गुरुही माता गुरुही पिता ॥
गुरु समऔर नहीं कोइ देवता॥ गुरु है
खसम और नहिं दूजा॥ जाने कोई अं
स गुरु पूजा ॥ गुरुसे परदा कबहु न क
रिये॥ सरबसले गुरु आगे धरिये॥

साखी।

गुरुकी महिमा को कहे, शिव विरंचि नहिं जान॥गुरू सत गुरु कूं चिनावे, ते पहुँचे निजधाम ॥

चौपाई।

धर्मदास सुन जुगत बताऊं ॥ चौक आर्ती तोहि लखाऊं ॥ अग्र चंदनका चौका दीजे ॥ जोत बराय आरती कीजे ॥ पांच तत्व पांचहै बाती ॥ बाहिर भीतर जोति समाती॥ माणिक दीपक का उजियारा ॥ एकहि बाति जुगत विस्तारा ॥ सेतपान लेहो सुख भारी ॥ अग्र चंदन औ लौंग सुपारी ॥ सेत मिठाई सेस सवारा ॥ यहि विधि चौके का विस्तारा ॥ मेवा कंद कपूर मंगावो ॥ कदली फल सोभा ले आवो ॥

पुहुप फल सुगंध सँवारो ॥ भांत भांत बिंजन अनुसारो ॥ तन मन धन सब अर्पन कीजे ॥ प्रेम सहित ऐसो सुखली जे ॥ पांच ततको भोजन दीजे ॥ ब्रह्म आपनो तिरपत कीजे ॥ काया मायाके सुख येही॥यह सुख करके मिले विदेही॥ मिले विदेही देहे धर नाही ॥ बूझ लेउ तु म मनके मांही॥अब कछु कहिनेकी ना रही॥जुगत हती सो सब हम कही॥भव छूटन को यही उपाई ॥ यहि बिध उतरे भवसागर भाई ॥ सत्य सत्य यह बात हमारी॥जो कोइ समझ करै नर नारी॥ भक्ती करे मुक्ति फल पावे ॥ हमरे स त्त लोक में आवे ॥ कहे कबीर सुनो धर्म दासा॥ छूटे करम भरम सब फांसा ॥

साखी।

धर्मदासो वचन॥करमभरम औ भारसब, दिये भारमें झोंक ॥सत्तगुरुके प्रतापसे, मिट गये सब धोक॥

साखी।

सत्तगुरु वचन॥ये भवतारन ग्रंथहै सतगुरुके उपदेश॥जो मन माने प्रतीत कर, सो पहुँचे हमारे देश॥

चौपाई।

गुप्त भेद सुनो धर्मदासा ॥ आपहि आप भये प्रकासा॥मूल वस्त बीज है भाई ॥उपजे ते पलैं अब जाई॥

साखी।

निह अक्षरते अक्षर भया, अक्षर आद अमी उपजाया॥ आद अमी किया सकल पसारा, फैल गया कछु नाहिं न न्यारा॥सोहँग कला अमीके माहीं॥

सेत बीज झलके तेहि ठाहीं ॥ सेत बीज मूल है माया ॥ तासूंरची सकल की काया ॥ सेतबीजका सकल पसारा ॥ तामें जीव लिया अवतारा ॥ अब अंकूर अमीते भयऊ॥पारस आस फैल सबगयऊ

साखी।

पारस पुरष अधार पर, अमीमाहि एक अंक ॥ आंक माहि नेहे आंक है, धर्मनिहोउ निसंख॥उतपत परलै बीज गंत, बीजाहि आवहि जाय ॥ गुप्त प्रगट जो कछु हता, सो सब दिया लखाय ॥ निह अक्षर ते अक्षर भय [illegible]क्षरकिया प्रकास ॥ अ[illegible] मन [illegible], सु

जीव तत्व, रज सत तम त्रिदेव ॥ इन सबहिनको छांडकर, कर निह अक्षर सेव ॥ जो चाहेसोही मीले, मानो मोर विचार ॥ यही भेद जाने विना ॥ कोई न उतरे पार ॥ भौ भारी भरमत फिरे, मिटै संसे सूल न होय ॥ हँस हिरंबर होय रहा, पला न पकरे कोय॥ कहै कबीर धर्मदाससो, छुटै तुझे संसार॥ यह मेरी परतीत कर, तारूं कुल परिवार॥ अंस वंस परवान गति, नादाबिंद गुरुसीख॥ जो चाहे निह अक्षर, मुक्त आंक सोइलीख ॥

इतिश्री ग्रन्थ भवतारन संपूर्ण॥

श्री।

अथ श्रीग्रंथ दयासागर॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
वंश बयालीसकी दया।

अथ श्रीग्रंथ दयासागर प्रारम्भः॥

गुरु दयासागर ग्यान आगर॥ शब्द रूपी सतगुरुं॥ तास चरन सरोज वंदो॥ सुखदायक सुखसागरं॥ जोग जीत अजीत अम्मर, भाक्ते सत् सुकृतं॥ दयापाल दयालस्वामी, ग्यानदाता अस्थिरं॥ क्ष

मासीलसंतोषसमिता॥ गुरु आनन्दरू
पी साधू हिर्दयं॥सेजभाव विवेक अस्थि
रं॥ निरमाया निरसंशितं॥निरमोहीनि
रवेर निरभे गुरु,अकथकथिता अविगतं॥
उपकार और उपदेशदाता॥ मुक्ति मार
ग सत् गुरुं॥दासभावकी प्रीत विनती॥
गुरुभक्ति करन करावनं॥ चौराशी बं
धन कर्म खंडन॥ बंदिछोर कहायतं॥
त्रिगुणरहिता सत्यवक्ता॥गुरुसत्यलोक
निवाशितं॥ सतपुरुष जहां सत् साहेब
ताहां आप विराजितं॥जुगन जुगन सत
पुरुष आज्ञा॥जीवन कारन पग धारनं॥
दीन लीन अचीन होयके॥ जगतमे डो
लत फीरो॥ करुनामय कवीर केवल॥
सुखदायकं सब लायकं॥जमभयंकर मा

रमरदन ॥ दुःखित जीव छुडायतं ॥ धर्म दासकर जोर बिनवे॥गरु दया करो मन बसकरुं ॥ करूंमे सेवा गरु भक्ति अवि चल ॥ निश दिन रहूं गुरु सुमिरनं ॥

सतगुरुवचन ॥ सतगुरुकी जो अधिक महिमा ॥ गुरुग्यान कुंड नहाईये ॥ भरमीत मन होय अस्थीर, बहुरिन भवजल आइये ॥ साधूसंतकी अधिक महिमा ॥ रहन कुंडन ना हाईये ॥ काम क्रोध विकार परिहर ॥ बहुरिन भवजल आइये॥दास जनकी आधिक महिमा,सेवा कुंड नहाइये ॥ प्रेम भक्ति प्रति वंत द्दढकरो ॥ वहुरिन भवजल आइये ॥ जोगी पुरुसकी अधिक महिमा ॥ जुगत कुंड नहाइये ॥ चंद्र सुरज मन गगन

स्थिर करो॥ वहु रिन भवजल आइये॥
श्रोता वक्ताकी अधिक महिमा॥विचार
कुंड नहाइये॥ सार शब्द निवेर लीजे
वहुरिन भवजल आइये॥ धर्मदास प्र
कास सत् गुरु अकह कुंड नहाइये॥स
कल कलिमलधोय निर्मल॥वहुरिन वहु
जल आइये॥ गुरू संत समाज म
ध्ये॥ भक्ति मुक्ति द्रढाइये॥सुर्त ले सत्
लोक पौंचा॥ वहुरिन भवजल आइये॥
साहेब कवीर प्रकाश सतगुरु॥ भली सु
मत द्रढाइये॥ सारमे तत सार कहिये॥
सोही अकह कहाइये॥ धर्मदास तत खो
ज देखो॥ततमे निहतत्त है॥ कहे कवीर
नहिं तत दरसे॥आवागमन निवारिये॥

इति श्रीदयासागर संपूर्ण॥

श्री

अथ सतनाम लिख्यते ग्यान स्तोत्र।
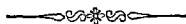
सत्य ताम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूणामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नान, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंथ्री उग्र नाम, दयानाम,—
साहब,
वंश बयालीसकी दया।

अथ श्रीथंग्र ग्यान स्तोत्र ॥

सत सत के नामसे सत सागर भरा॥सत सतके नामसे त्रिलोक साजा ॥ संतजन आरती करे प्रेम टाली वजे॥ढोल निशान मृदंग बाजे॥सबद सांचा किया॥नाम निहचेलिया॥सुंनके शिखरपर ब्रह्मांड गाजा॥सत कबीर सर्वंग साहेब

मिला॥बूझो सत नामको रंक और रा
जा॥हमही दीन दुनी दरवेश॥हम दुवा
सलाम अलेखा॥हम रोम रोम में पीरा॥
हम फाका फकन फकीरा॥हमरमें किन
की लार॥ हम चले किनकी चाल॥ ह
म सबंगी सेजेरमें॥ हमारा वारन पार॥
वारही हमही पारही हमही॥नाना दर्या
व की तीर॥ में सकल निरंतर हम रमें
हम गहिर गंभीर॥ खलखलक खलक
मुजमांही॥ येउ गुरु कवीर कहे सत
नामकी आरती॥निरमल भये सरीर॥
धर्मदास लोके गये॥ गुरु बया मीले क
वीर॥धर्मदास लोके गये छांड सकलसं
सार॥ हंस न पार उतारिये॥ गुरु ध
र्मदास परिवार॥ सत्त सुक्रित लौलीन

है ॥ ग्यानं ध्यान अस्थीर ॥ अजावन
में पुरुस है, सोहंग लागे तीर ॥ अजाव
नसे जावन भये ॥ जावनसे भये मूल॥
चौदह कोटी वासना॥रही कली में पूर॥
कबीर धर्मदासकूं मीले ॥ लिखपर
वाना दीन॥आद अंतकी वीनती ॥यही
लोकू चीन ॥ आंत लौलीन ॥ चीनत
शब्द स्वरूपी ॥ सुनी अकासवानी ॥
विनादेह साहेब निरालंब जाने ॥ जाने
जनावे कहावे नदेवा ॥ ऐसा तत पूजे
पुजावे लगावे न सेवा॥सदा ध्यान धारी
अखंडो निरासा॥सदासंत पीवे न जाय
प्यासा ॥ परम ध्यान धीरा उदासी य
केला ॥ लौलीन जोगी न गुरु ग्यान
मेला ॥ मिलंता चलंता रहेता अपारी ॥

ऐसा द्रष्टि देखो अनंता विचारी॥ सदा चितवंत चितवंत सूरा॥ऐसा ख्यालखेले खेलंता हजूरा॥ग्यानोन ध्यानो न मानो नहीं चंदे न तारा॥उगंते न भानु आगेन पीछेन मध्येन कोई॥ जौंका जलवंबहै तत सोई॥ डालोन मूलोन बृच्छोन छाया॥ जीवोन सीवोन कालोन काया॥ द्रष्टीन सृष्टीन देवीन देवा॥जापो न थापो न पूजा न सेवा॥नहीं पवन पाणी न चंदे न सूरा॥ अखंडित ब्रह्महै सोही सिद्ध पूरा॥हूं नाहीं तूं नाहीं बंदो न भाई॥निराधार आधार रंको न राई॥ गावे न ध्यावे न हेली न हेला॥ नारी न पुरुषो न खेली न खेला॥ नहीं पेट पुष्टी न पाँयो न माथा॥जीवो न सीवो न नाथो न अना

था ॥ शेषो महेशो गनेसो न गानन्न ॥
गोपी गुवालन न कंसे न कानं ॥ आ
सेन पासेन दासेन देवा ॥ आवे न जावे
लगावे न सेवा ॥ नहीं आरपारा नहीं
रे हजूरा॥जौंका तौं तत गहिरे गंभीरा॥
यंत्रे न मंत्रे न दर्दे न धोखा ॥ नर्गेन सर्गे
न संसे न सोखा॥सेते न पीते न सब्जे न
लालं॥गोरे न सँवरे न बुढ्ढे न बालं॥भेदा
अभेदा न खेदा न कोई॥सदासुर्त सोहंग
एके न दोई ॥ जाने जनावे कहावे सो
सूरा॥आरे न पारे न नहींरे हजूरा ॥ ना
देन बिंदेन जिंदेन देवा ॥ निरंतर ब्रह्म है
शक्ती न सेवा ॥ नहीं जोग न जोगी भो
गी न मुक्ता॥ सच्चित्तानंद साहेब बंदेन
भुक्ता॥खेले खिलावे खिलावे सो खेले॥

एकहै अनेकहै अनेकहै सो एकहै॥चित
वंत चितवला दासो अनंतर नहीं॥आद
अंत और मध्य सदा सुख परम गुसांई॥
अकह कहनमें नाहीं॥कहे न कहूं तो कै
सा॥नाही न ब्रह्म समान॥ आद ब्रह्म जै
से के तैसा ॥ कहे कवीर हम खेले सेहे
ज स्वभाव ॥अकह अडोल अवोल॥वो
ल निरंतर ब्रह्महै सत्ती सोहंग सोई ॥ खे
ल खेला हमही जहां तहां रसातल सब
ही॥ वा सबनमें एक समता॥तामे आ
न बसा एक रमता॥वारमताकू लखे जो
कोई॥ताको आवागमन न होई॥ओहंग
सोहंग सोहंग सोई ॥ ओहंग कीलक सो
हंग वाला॥सोहंग सोहंग बोले रसाला ॥
कीलक कमोदक कवत चारगुरु पीर ॥

धर्मदासकूं शब्द सुनाया सतगुरु सत् कबीर ॥ बाजे नाद भई परतीत ॥सत् गुरु आये भौजल जीत ॥ बाज गाज साहेब के दरबार ॥ मारे कुटिल दगा बाज॥हिंदूके गुरु मूसलमीनके पीर ॥ बोलो संतो सत्त कबीर कबीर ॥

ग्यान स्तोत्र संपूर्ण ॥

लिखते ग्यान गोदडी ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, सुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंथ्री उग्र नाम, दयानाम,— साहब, वंश बयालीसकी दया ।
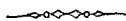
सत्तनाम ॥ लिखंते ग्यान गोदडी ॥

धर्मदास एक बिनती कीन्हा ॥ ज्ञान गोदडी पूँछके लीन्हा ॥ साहेब ग्यान गोदडी का कहो संदेसा ॥ जासे मिटे जीवका अंदेसा ॥

सतगुरु वचन ॥ अलख पुरुष जब किया बिचारा ॥ लख चौरासी धागा

डारा ॥ पांच तत्वकी गोदड़ी बीनी ॥ तीन गुननसे ठाडी कीनी ॥ तामे जीव ब्रह्म और माया॥ समर्थ ऐसा खेल बनाया ॥ पांच पचीसों जीवन लागे ॥ काम क्रोध मोह मद पागे ॥ काया गोदड़ीका बिस्तारा ॥ देखो संतो अगम सिंगारा ॥ चांद सुरज दो पीवन लागे ॥ गुरु प्रताप ते सोवत जागे ॥ शब्दकी सुई सुरतका डोरा ॥ ग्यानका टोपन सरजन जोडा ॥ अब गोदड़ीकी करो हुँशयारी ॥ दागन लगैदेखो विचारी ॥ सुमतकी साबुन सो रज धोई ॥ कुमति मैलको डालो खोई॥ जिन गुदडीका किया बिचारा ॥ तिन ही भेटे सिरजन हारा॥धीरज धूनि ध्यान कर आसन ॥ सत्त कोपीन सहज सिं

घासन॥ जुगत कमंडल कर ग्रहि लीना॥ प्रेम पावडी मुरसिद चीना ॥ सेली सील विवेकी माला ॥ दयाकी टोपी तन धर्म साला ॥ मेहर मतंगा मद बैसाके ॥ मृग छाला मनहीमे राखे ॥ नहचे धोती प वन जनेऊ॥ अजपा जपेसो जाने भेऊ॥ रहे निरंतर सत्तगुरु दाया ॥ साध संगत सो सव कुछ पाया ॥ लकुटी लेके हिरदै जोडी ॥ क्षमा खडाऊ पहर बहोरी ॥ मुक्ति मेखला सुबुधि शरवनी ॥ प्रेम पियाला पीवे मौनी ॥ उदास कूबरी कला निवारी॥ ममता कुत्ती कूं ललकारी॥ जुगति जंजीर बांध जब लीना ॥ अगम अगोचर खिडकी चीना॥ वैराग्य त्याग विग्यान निजध्याना॥ तत तिलक दिया नि

बाना॥ गुरुगम चकमक मस सब तूला॥ ब्रम्ह अग्नि प्रगटकर मूला ॥ संसै शोक सकल भ्रमजारा ॥ पांच पचीसूं प्रगटै मारा॥दिलकी दर्पन दुबधा खोई॥ सो बैरागी पक्का होई॥सुंन महल मैं फेरीदेई ॥ अमृत रसकी भिक्षा लेई ॥ दुख सुखमेला जका भाव ॥ त्रिबेनीके घाटै नाव ॥ तनमन खोज भया निर्बाना ॥ सो लख पावे पद निर्बाना ॥ अष्ट कँवल नौ चंक्र सूजे॥जोगी आप आपकू बूजे ॥ इंगला पिंगलाके घरजाई॥ सुषमना नार जहां ठैराई ॥ ॐग सोहंग तत्त बिचारा॥ बंक नालमें किया सबा मनस गग

बैराग देव नहिं दूजा॥खुलगये कल मल मिले अलेखा॥ ये नेनौं साहेब कूं देखा॥ अहंकार अभिमान बिडारा॥ घटका चौका करो उंजियारा॥ चितकर चंदन तुलसी फूला॥ हितकर संपुट करले मूला॥ सरधा चँमर प्रीतका धूपा॥ नौतम नाम साहेब का रूपा॥ गुदडी पेहेरे आप अलेखा॥ जिन है प्रगट चलायो भेखा॥ साहेब कबीर बक्ष जब दीना॥ सुर नर मुनी गोदडी लीना॥ग्यान गूदडी पढै प्रभाता॥ जनम जनम के पातक जाता॥ग्यान गोदडी पढै मध्याना॥ सो लख पावे पद निर्बाना॥ संध्या सुमरन जो नर करही॥ जरा मरन भव सागर तरही॥ कहै कबीर सुनो धर्मदासा॥ ग्यान गोदडी करो प्रकासा॥

साखी।

माला टोपी सर्वनी, सतगुरु दिया व क्षीस ॥ पलपल गुरु कूं बंदगी, गुरु चरण नमाऊं सीस ॥ भव भंजन दुःख हारन, अंवर करन सरीर ॥ आद जुगादी आप हो, सत गुरु सत् कबीर ॥ संपूर्ण ॥

श्री

अथ श्रीग्रन्थ चितावनी ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,– साहब,

वंश बयालीसकी दया।

सत्तनाम ॥ लिखंते चितावनी ॥

कबीर जनम जाय पुकारिया, धर्मराय दरबार ॥ हंस मेंवासी होरहा, नहिं लागे फास हमार ॥ तुमरी शंका ना करै, हमारी धरो ना धीर ॥ सतगुरु केवल गाजिये, सो कहे कबीर कबीर ॥

धर्मराय बचन॥ कबीर कहे वाकूं जाने दे, मेरी दसी न जाय॥ खेवट याके नावपर, चढे घनेरे आय॥ बाजा बाजे रहतका, पडा नगरमे सोर॥ सतगुरु ख सम कबीर है, मेरी नजर न आवे और॥

सतगुरुबचन॥ सत्का शब्द सुनभाई॥ फकीरी अदल बाछाई॥ सादू बंदगी दीदार॥ सजे उतरो साहेर पार॥ सोहंग शब्दसे कर प्रीत॥ अखंड अनु भगडकूं जीत॥ तनमें खबर कर भाई॥ जामें नाम रोशनाई॥ सुर्ती नगर वस्ती खूब॥ बेहद उलट चढ महबूब॥ सुर्ती नगर मे कर सैल॥ जामे आत्माको महल॥ अंबरी सींद मूलमे लाव॥ जा पे रखो बांयां पांव॥ दहिना मध्यमे धरना॥ आ

सन अंबर यौं करना ॥ द्वादस पवन भर पीजे ॥ ससी घर उलट चढलीजे ॥ तन मन वार कर लीजे ॥ तन मन सहित राखो स्वास ॥ इस विध करो वेहद वास ॥ दोनो नयनके कर वान ॥ भमरा उलट कस कमान ॥ पर्वत छिपा दर्या आन ॥ करले त्रिकुटी अस्नान ॥ सहजे परस पद निर्बान ॥ तेरा मिटे आवा जान ॥ जामे गयवका बाजार ॥ सरोवर दिसे दोई सो पार ॥ जापे खडा कुदरत यार ॥ सोभा कोटि अगम अपार ॥ लागे नौ लख तारा फूल ॥ कर्नी कोट जडिया मूल ॥ ताको देखना मत भूल ॥ रमता राम आप रसूल ॥ माया भरमकी काची ॥ देखो अंदरकी सांची ॥ वरसे नीर

बिनमोती ॥ चंदा सुरज की जोती ॥ झलके झल मला न्यारी ॥ ता बिच अल फहै क्यारी॥ मानो प्रेमकी झारी॥ खुली है अगमकी बारी ॥ बेडा भरम का खो या ॥ दीपक नामका जोया ॥ जोगी जु गत सों जीवै॥ प्याला प्रेमका पीवै॥ मा हेला पीव कूं दीजे॥ तन मन कुरबान क रलीजे ॥ पडीहै प्रेमकी फांसी ॥ मनवा गगनका बासी बाजे बिना तंते तूर ॥ स हजे उदै पच्छम सूर ॥ भौंरा सुगंध का प्यासा ॥ कियाहै कमलमें बासा ॥ रम ता हंसहै राजा ॥ सहजे पलक यह अ वाजा ॥ सुंदर श्याम घनलाया ॥ बादल गगनमें छाया ॥ अमृत बूंद जल लाया देख दोय नयन ललचाया ॥ अजब दी

दार कूं पाया ॥ दर्या सहजमें न्हाया ॥ दर्या उलट उगम्या नीर ॥ ता विच चले चौसट सीर ॥ हंसा आन बैठा तीर ॥ सहजे चुगे मुक्ता हीर ॥ मिलाहै प्रेमका प्यारा ॥ नहीं है नयन सों न्यारा ॥ जीवत मृतुक न व्यापेकाल ॥ ज्यों त्रिकुटी सो पलक न टार ॥ पलका पीउसे लागा ॥ धोखा दिलका भागा ॥ चितावनी चित विलास ॥ जबलग खडे पिंड और स्वास ॥ सोहं शब्द अजपा जाप ॥ ताहैं कबीर साहेब आपो आप ॥ चितावनी चित लग रही, अगम लखे ना कोय ॥ अगम पंथका महल है, अनहद बानी होय ॥ नाम नयनमें रम रहा॥ जाने बिरला कोय ॥ जाको मिलिया सतगुरु ॥ ताको

सुंनमें जोत जग मग जगाई ॥ निरा
कार आप जहां बेद अस्तुति करे ॥ ती
नहूं देवके पिता ताहीं ॥भगवान तिनके
परे स्वेत मूरति धरे ॥ भगकी आन जि
न कूं रहाई ॥ महा सुन्‌ स्थान बैकुंठके
ऊपरे ॥ अनहद बाजा बजे तांहां ठां
ई ॥ चार मुकाम परे खंड सोला कहा ॥
इंडही तेज तामें रहाई ॥ इंडके ऊपरे प
रम धाम अचिंतको ॥ तासकी निरखि
ये प्रेम बानी॥ चारही भान अंजोर तहां
कामनी ॥बरन बहुरूपकी खान जानी॥
सहस्र द्वादश रूह संग रहत है ॥ करत
किलोल बहु भांत सेती ॥ ताहिके बर
नकी कौ [illegible] ॥भरीहै देह सब
नूर [illegible] तामें ज
ड [illegible] ॥ स

श्री

लिखते दसमुकामी रेक्ता ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाग,–
साहब,
वंश बयालीसकी दया ।

सत्तनाम ॥ लिखंते दस मुकामी रेक्ता॥ चले जब लोक कूं सोक सब तागिया॥ हंसका रूप सत् गुरु बनाइया ॥ नासूत कूं छांडके मलकूतकूं पोहोंचिया ॥ विष्णुकी ठाकुरी देख भाई ॥ इंद्र कुबेर जहां रास रंभाकरे॥देव तेतीसकोट तहां रहाई॥ छांड बैकुंठ कूं हंस आगे चला॥

मालुम होय ॥ झंडा रोपा गयबका,दोय पर्वतके संध ॥ साधु पिछाने शब्दको, दृष्टि कमलको बंध॥झलके जोती झलमला ॥ बिन बाती बिन तेल ॥ चौदस सूरज उगमियां ॥ ऐसा अद्भुत खेल ॥ जाग्रत रूपी रहत है ॥ सत् मत गहिर गंभीर ॥ अजर नाम बिनसे नहीं॥ सोहंग सत्त कबीर ॥

इति चितावनी संपूर्ण ॥

श्री

लिखते दसमुकामी रेक्ता ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंथ्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

सत्तनाम ॥ लिखंते दस मुकामी रेक्ता॥ चले जब लोक कूं सोक सब तागिया॥ हंसका रूप सत् गुरु बनाइया ॥ नासूत कूं छांडके मलकूतकूं पोहोंचिया ॥ विष्णुकी ठाकुरी देख भाई ॥ इंद्र कुबेर जहां रास रंभाकरै॥देव तेतीसकोट तहां रहाई॥ छांड बैकुंठ कूं हंस आगे चला॥

सुंनमें जोत जग मग जगाई ॥ निरा
कार आप जहां बेद अस्तुति करे ॥ ती
नहूं देवके पिता ताहीं ॥भगवान तिनके
परे स्वेत मूरति धरे ॥ भगकी आन जि
न कूं रहाई ॥ महा सुन् स्थान बैकुंठके
ऊपरे ॥ अनहद बाजा बजे तांहां ठां
ई ॥ चार मुकाम परे खंड सोला कहा ॥
इंडही तेज तामें रहाई ॥ इंडके ऊपरे प
रम धाम अचिंतको ॥ तासकी निरखि
ये प्रेम बानी॥ चारही भान अंज़ोर तहां
कामनी ॥बरन बहुरूपकी खान जानी॥
सहस्र द्वादश रूह संग रहत है ॥ करत
किलोल बहु भांत सेती ॥ ताहिके बर
नकी कौन महिमा कहूं ॥भरीहै देह सब
नूर सेती॥ महल कंचनके मनी तामें ज
डी ॥ सत्रमा खंड है अचिंत राजा ॥ स

कल सुख साहिबी तासु संग देखिये ॥व
जे अनहद अगाध वाजा ॥ अचिंतके
ऊपरे स्थान सोहंगको ॥ हंस हजार छ
त्तीस विराजा॥ नूर का महल जहां नूर
की भोमका ॥ महा आनंदको कंद सा
जा ॥ करत वहु भांत सो हंस आनंद ज
हां॥ संग सव साथ सोहँग राजा ॥ धीरज
हीइंडमें राजा है तासका ॥वरन वहु रूप
उजियारसाजा ॥ सोहंगके ऊपरे मूलही
सूर्त है॥ संगहै हंस वावन हजारा ॥रूप
की रास सव रूप उनसे भया ॥ उपमा
नहीं दूजी विराजा॥ क्षमासो इंडमें मूल
हीसुर्त हे ॥करत वेहार संग हंस राजा ॥
एकही वर्नसव हंस जो देखिये ॥रूपकी
रास आनंद साजा ॥ सुरतसें भेटके शब्द

की डोरचढ॥ देखमुकाम अंकूर केरा॥स
कल सुख साहिबी तासुके संग है ॥ सुरत
अंकूरका तहां बसेरा॥ सतही इंडमें तास
की साहबी॥सहज कहूं कहा रूपकी रा
स साजा ॥एकही बरन हंस जहां देखि
या ॥ जग मगे जोति बहु रूप छाजा॥
अस्तान पर हंस जो पोहोंचिया ॥ पल
एक बिलंबके ताहां दियो डेरा ॥ देख छ
वि रूप प्रकाश बहु भांत ताहां ॥ जगम
गे जोति ताहां हंस केरा ॥ सुमति सो इं
डमें सहजकी साहबी ॥ सकलही हंस
मिल करत किरला ॥ बदन उजियार छ
वि रूप नीका बनी॥ भानु प्रकास जि
मि कमल फूला ॥ वहांते डोर मक्र ता
रकी लागियां ॥ तांही डोर चढे हंस को

ई ॥ भया आनंद फंद सब छूटिया ॥ पों होचिया जाय सत् लोक सोही ॥ गाय वजायके सकल सब साजके ॥ हंस वहु भांत सो लेन आये ॥ जुगन जुगनके बी छुरे मिले तुम आयके ॥ धायके प्रेमके अंग लगाये॥पुरुषने दरस जब हंसकूं दी निया॥तापत्रय जनमके सकलजाई॥रू प जब पलटके भया सब एकसा॥मानहू भान षोडस उगाई ॥ पोहोपकी सेज अमृत भोजन करे ॥ शब्दकी देह जहां हँस पाई ॥ पोहोपही द्वीपमें पुरुषका वा सहै॥ सच्चितानन्दहै आपसोई॥असंखहै दामिनी विबिधि बिधि दमकही ॥गरज घनघोर झड झमक लाई ॥ गर्ज तहां शब्दको होत सोहावनो ॥ सुनत सब हँ

स सुख प्रेम लाई ॥ करत बिन्हार मन भावनी मुक्ति जहां॥कर्म और भर्म सब दूर भागा॥जूथही जूथ जहांहँस संग रहत है॥ भान षोडस शशि अंग लागा ॥ एकही बर्न सब हँसका देखिया ॥ भर्म अरु कर्म सब दूर भागा॥ रंक और भूपकी परख जहां नां पडै ॥ प्रेम किल्लोल बहु भांत पागा ॥ काम अरु क्रोध मद लोभ अभिमानका ॥ त्याग दिया जैसे तोड धागा ॥ पुरुषके बदनकी कोन महिमा कहूँ ॥कोटि शशि भानु एकरोम लागा॥ जगतमे उभय छबि तासकी नांहिं कोई॥ उपमा देत कोई करै लेखा ॥ जैसे पात बनस्पति नदीकी रेनुका॥नक्षत्र सकल मिलि करै लेखा ॥ केत्तेक चन्द्र सूरज

जो ऊगिया ॥ नखनकी शोभा कोई ना
हिं पेखा ॥ पुरुषके बरनकी कौन महि
मा कहूँ ॥ मुखसे कहे कछु नाहीं आई ॥
पान प्रवाना जिन बंसका पाइया ॥ पो
होचिया जाय सत्तलोक सोई ॥ कहे क
बीर यहि भांति जिवआइया ॥ खोलके
राह हमकही सोई ॥

दशमुकामी रेक्ता संपूर्ण ॥

श्री

अथ श्रीग्रंथ रेक्ता कायाका प्रारंभः ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
बंश बयालीसकी दया ।

रेक्ता कायाका ।

कहोरे पंडिता घटका रेक्ता ॥ काया का भेद कहो कोन पाया ॥ षोडस सुंन काया घट बीचमें ॥ गगन एकवीस ता में बसाया ॥ तीन भँवर गुफा बनी॥ आली सेतमें रंग जहां समताया ॥ त्रिकुटी तीन पुनि त्रिवेनी तीन है ॥ तीनही वंक

नाल घटमें बताया ॥ द्वादश कँवल औ
र चतुर्दश द्वारहै ॥ चार द्वार कपाट ला
यां ॥ छतीस नीरहै पचासी पवनहै ॥
कहो कोन कँवल तामे बसाया ॥ तीनही
नाद अनहद बाजा बजे ॥ कोनसे नाद
सों ध्यान लाया ॥ तीन अस्तान पर ती
न जोति जगमगे ॥ चौथा सत्त नूर को
ई संत पाया ॥एकादश अजपा बसे घट
भीतरे ॥कोन अजपा सो मन रिझाया॥
कहे कबीर तूं शब्दकी खोजकर ॥ काहे
को बात बकबाद लाया ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

सत्तगुरु शब्दकी टेक दम साधके ॥
शब्द जो शब्दहीको अहारीहै ॥ अग्नी प
चंड की जुक्ति बडी बखानी॥करमके सं

ग ले कुमति जारी॥उनमनी ध्यान गही धसी सुंनमे॥चित चैतन्य से लगीतारी॥ कहे कबीर भवसिंधका तरना॥ब्रह्म कं गहेसो ब्रह्मचारी॥ संपूर्ण॥

रेक्ता।

नाम निर्बानकर॥जीव खुर्बान कर मान तूमानरे वचन मेरा॥ सुषमना घा टपर संत आसन करै॥करम और भरम सब मिटै तेरा॥ सुंन्न दर्यावमे हंस मोती चुगे॥ चुगत चुगत नर करत किल्ला॥ कहे कबीर तुम सांच कर मानियो॥ गुरु और शिष्यका वही मेला॥ संपूर्ण॥

रेक्ता।

धन धन कबीरका ग्यान यारो॥ पुस्तक पुरान का पीव है जी॥ जैसे फूलसे अंतर काढलीया॥ दधि दूधके घी

चमें घीव है जी ॥ तारोमें बडा चंद सो भे॥ देवतावोंमें बडा शिव है जी ॥ कुरान पुरान से पिंड रचा ॥ कबीरके कथनीमें जीव है जी ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

भूलमत भांड हो मांड है रांडकी ॥ रांडही सांड अवतारजाया॥जोग जग्य व्रत धरम पूजा॥आद ॐकार लगहै माया॥ वेद पुरान कुरान सबही मिलै॥ आगली रांडका पीछली गीत गाया ॥ रास बिलास सब रांडका जीव है ॥ खांडका मेलकर रांड खाया ॥ कहे कबीर कोई हंस पियासे मिले ॥ फेर रांडकी पिंडमें नहीं आया ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

झिलमिल झिलमिल वरसे नूरा ॥

साहेब मेरा खडा हजूरा ॥ कस्तूरी मृगा के पासा॥ ढूंढे आप सूंगे घासा॥ कहे कबीर गुरु गमका होई॥सब घट तत् लखेगा सोई ॥ संपूर्ण ॥ ६ ॥

रेक्ता।

कहूं रेक्ता दुर्ध देसका ॥ जोत और नूरका कामनाहीं ॥ सेष कर्तार तो पार पावे नहीं ॥ दस औतार कूं गमनाहीं ॥ वेद कतेब दोनो सो भेद न्यारा रह्या ॥ तहां तो अकेला आपसांही ॥ सांच और झूंठ बिच पडगया अंतरा॥ कहो जी सांचतो झूंठका काम नाहीं ॥ कहे कबीर ओ पुरुषतो अगम है॥ पोहोंचे कोई संत वा देश तांई ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

झीन परझीन गुरु ग्यानके ध्यानमें॥

ध्यान गरकायरहिताय लेखा ॥ झिल मिली जोत जहां झनकार वाजा वजे॥ दिलके वीचमें एक चंद देखा ॥ कोट ब्रह्मा जहां वेद पढते रहै॥कोट शंभू ज हां जापजपता ॥ नारदा सारदा हात बांधे खडे ॥ राव और रंक कूं कौन गि नता ॥ चांद सूरजकी गंमनहीं जहां ॥ बेद पुरानकी कौन सुंनता ॥ कहे कबीर कोई लखै निज नाम को ॥ नावपर वैठ कोई संत पार होता ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

आसमानका आश्रा छोडदे प्यारे ॥ उलट देखो घट आपनाजी॥आपमें आप तैतीक कर देख ले॥ छांडदे मनकी कल पनाजी ॥ बिन देखे निज नाम जपे ॥ सो तो रयन का स्वप्नाजी॥साहेब कवीर

दीदार प्रगट देखा ॥ फिर जापकिसीका जपना जी ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

बाजीगर बाजी रची बाजी विस्तारा॥बाजीसे बाजी रमें बाजीगर न्यारा॥ काम क्रोध अहंकार का ले डमरू बजाया॥जलथल माहीं जीवता बाजी ये भरमाया॥ अहंबाज ममता चढी नव डोर पसारी॥ मोहो ढोल बाजे सदा खेलै नरनारी ॥ सुख दुखको गोटा उछले माया मदचीना॥ ब्रह्मा विष्णु महेश कूं बाजी ये सब कीना॥चंचल था सो निश्चल किया निर्भय घर आया ॥ कहे कबीर जिन बाजी तजी ॥ उन बाजीगर पाया ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

बैठ रहूं जब बैठ रहे ॥ ऊठ चलूं जब

आगे धावे॥सोय रहूं तव सुभमे रहता ॥ उठ बैठूं तब कंठ लगावे ॥ मौन रहूं चल बोल उठूं ॥ जब आंख मूं दूं तब माहिं स मावे ॥ सतगुरु संग रहत निसवासर ॥ हात पसारूं तो हात न आवे ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

फारसी पंच मुकामी ॥ चार पीर चौ दा बानी बेद चारि पीजे ॥ काया हसी द मन मुल्ला ॥ बिन गुरु पंथ ना सूजे ॥ औल मुकाम जमरुद ॥ गुदामे बैठके मु ख ब्रम्ह मंत्र जब्राईल॥ पीले आस्वार काफील जैसे हुआल्ला ॥ दुजा मुकाम नासूत है ॥ नाभीमे बैठके नासिका ब्रह्म मंत्र ॥ न कायल हंस आस्वारहै॥ आम ल जेते हुआला ॥ तीजा मुकाम मल्कु त है ॥ हिरदेमे बैठके गोस ब्रम्ह मंत्रा

आजाईल॥ मोर आस्वार आलमजेते हू आला ॥ चौथा मुकाम लाहूत॥ त्रिकुटी में बैठके चस्मा ब्रम्ह मंत्र है ॥ आस्राफील सहेर आस्वार है॥ आतस चलती है तेजहू अलाहा ॥ पांचवा मुकाम हाउत है॥ आर्स मे बैठके सुंन ब्रह्म मंत्र है ॥ आज्राइल तत्क आस्वार है ॥ मुक्बा आला हजरत रसूल है ॥ छठवा मुकाम आला हुसलाम ॥ सत गुरु मूर्ती सदा सत् कहे॥ आतीत फकीर वेद पुरान व्याकरन पढे हैं ॥ आजर नीसाफ सोहू आला ॥ महमद अवतार कहिये तहां ॥ चार गुरु चार पीर येही मता कहे कबीर ॥ जमीनहै जमीनके तलीन ॥ तलका दरवाजा कौ

न है ॥ जुवानहै जुवान का नाम क्या
है ॥ मंत्र जब्राईलहै ॥ हजरत महु दो
नहै (फेफसा) फेफसा के तले कोनहै
(नाकहै)नाकका नाम क्याहै॥ मंत्र आ
स्राफी लहे ॥ अग्नी पीताहै ॥ पीता के
तले कोनहै (आंखीहै) आंखी का ना
म क्याहै ॥ मंत्रमे का ईलहै ॥ आला
नाम कलेजाहै ॥ कलेजाके तले कोनहै
(स्यारहै) स्यार का दरवाजा कोन है
(कानहै) कान का नाम क्याहै ॥ मंत्र
ज ब्राईलहै ॥ दिलहै लामहै (गोदरी है)
सवा हातकी तोराहै ॥ आलाहा नाम
आदीहै ॥ सतगुरु नाम कबीरहै ॥

इतिपंचमुकामी रेक्ता संपूर्ण ।

रेक्ता गावनेका।

खलक सब रयनका सपना ॥ समज देखो कोई नहीं अपना ॥ कठिनहै लोभ की धारा॥वहा सब जाय संसारा॥टेक॥

घडा जानूं नीरका फूटा ॥ पात जैसे डालसे टूटा ॥ यही नर जान जिंदगानी ॥ सबेरा चेत अभिमानी ॥ १ ॥ मत भूलो देख तन गोरा ॥ जगतमे जीवना थोरा ॥ तजो मद लोभ चतुराई ॥ रहो निसंख जगमांही ॥ २ ॥ सजन परिवार सुत दारा॥उसी दिन होयगा न्यारा॥ निकस जब प्रान जावेगा ॥ कोई नहिं काम आवेगा ॥ ३ ॥ ॥ सदा मत जान यह देहा ॥ लगावो एक नामसे नेहा॥ कटे भ्रम जालकी फासी ॥ कहे कबीर अबिनासी ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

समज मन सोच अवकीना॥गुरूसे बूझनां लीना ॥ कहांसे रंग ये आया ॥ नहीं कोइ मोह्य वतलाया ॥ टेक॥

सुर्त है रंगकी प्यासी ॥ पपैया भया वनवासी ॥ आवे नाहिं हात या करनी ॥ सुधारो जाय गुरु चरनी ॥ १ ॥ मिले मुरसिद मेहेर करके ॥ मुरीदा नाम ल खाया है ॥किताबां खोल दिल अंदर ॥ हकीकत कह सुनाया है ॥ २ ॥ है कोई गयवकावासी॥ लखावे ग्रान प्रकासी॥ वसावे गयवका खेडा॥ मिटावे भरम का वेडा ॥ ३ ॥ अचंबा देस है न्यारा ॥ लखे कोई नामका प्यारा ॥ पिया है प्रेमका पानी॥संत जन लेहु पहिचानी॥ ॥४॥ निस दिन मोहिना भूले ॥ विरहके

झोकमें झूले॥ सरन जब कबीरकी धा
वे॥इलाही ग्यान भरपावे ॥संपूर्ण॥

लगन है जाहि सूं लागी ॥ प्रीत क
र कपट छल त्यागी ॥करो पद बंदगी
सेवा॥ तजो सब इष्ट और देवा॥ टेक॥

निरामय रूप नहिं रेखा ॥ सकल
घट वस्तु निज देखा॥जाहि सुर शंभु अ
जध्यावे॥ वेद पुरान श्रुति गावे॥ १ ॥
नाम यक रूपहे सोई ॥लखावे ताहि
ना कोई॥ मिलै कोइ गैबका भेदी॥ ल
खावे चक्रको छेदी॥ २॥ पिया जद प्रे
मका प्याला ॥ हुवा रस चाख मतवा
ला॥अमल रस भक्तिका भीना॥झुके
चहुं ओर रहे दीना॥ ३ ॥ कटी जब न
यनकी झांई॥ पडे लख गगनमें सांई॥

कवीर गुरु सब्द कहि भाखा ॥ नीर पद सीस पर राखा ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

रेक्ता।

चली हूं खोजमैं पिउकी ॥मिटै नहिं सोच या जिवकी॥भई मैं देहकी भोरी॥ न जानत हालको मोरी ॥ टेक॥

बहै नित नयन में पानी ॥ जनम गये बाद हम जानी॥ कछुक दिन खेलमें खोया ॥ समज ओहि बात अब रोया ॥ १॥ घोर जो करम मैं कीना॥सांईका रूप नहिं चीना ॥ रहे नित पासही मेरे ॥ न पाऊं यार कूँ हेरे॥ २ ॥ विकल चहुं ओर कूं धावे॥ तोऊ नहिं कन्थ कूं पावे॥ धरूं केहि बातसों धीरा ॥ गयो गिर हाथसे हीरा ॥ ३ ॥ कबीर गुरु शब्द कहि

भाखा॥नयनमें यार को राखा॥कहे दुख दूर ना होई ॥ लगीहै जानेगा सोई॥४॥

रेक्ता।

लगा सत्नाम से नेहा ॥ भया सब करमका क्षेहा ॥ जगी जब आतमा अंधी ॥ तजी सब देह या गंधी ॥ टेक ॥

दिया जिन प्रेमका प्याला ॥ पिवत ही हुवा मतवाला ॥ मिला जब प्रीतम प्यारा॥ सदा दिल तिनो परवारा ॥ १ ॥ पकडके जहां लेजाई ॥ दयाकी कोठडी तांई ॥ पलंगपर सेज यों दमके ॥ मनो घन दामिनी चमके॥ २ ॥ लगे शशि भान से तकिया ॥ जगा मग जोति जगमगिया॥ सो साहेब आप जहां पौढै॥ कपडा प्रेमका ओढै ॥ ३ ॥ जहां कर जोडके ठाढी॥धनीसों अर्ज कर गाढी ॥

हुकम हजूरको पाऊं॥ अलखके चर नमें जाऊं॥४॥ अरज यह एकहै मेरी॥ भई तुम चरन कीचेरी॥के बाला पीर भर पावे॥ नहीं कोई और मनभावे॥५॥

रेक्ता।

हम न आशक दिवानेहै॥ हमन कू होस दारी क्या॥हमन अजाच या जग से॥ हमन दुनियासे यारी क्या॥

टेक॥खलक सब नाम अपनेकूं॥बहुत क सिर पटकते है॥ हमन गुरु ग्यान ये लमहै॥ हमनको नामदारी क्या॥ १॥ जो बिछुडे पियारीसे॥ भटकते इदर उदर फिरते॥ हमरा यार हम संगहै॥ हमन को इंतजारी क्या॥२॥ न पल बिछुडे पिया हमसे॥न हम बिछुडे पियारीसे॥जहां वहां प्रीत लागीहै॥वाकोहै वेक

रारी क्या ॥ ३ ॥ कबीरा जात है फुक
श ॥ गरूरी डाल सब दिलसे ॥ चल
रहा चालना जुकहै ॥ हमन सिर बोज
भारी क्या ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

लिखंते मंगल ॥ सुकृत फूल गुलाब
को, सब घट रह्यो समाय ॥ कहो कैसे
लखपाइये, गुरुबिन लखा न जाय ॥
॥ टेक॥ तीन त्रिकुटीके ऊपरे, फूले सोहं
गम फूल ॥ जहां नहीं धर्मको आसन ॥
बिन अच्छर निज मूल ॥ १ ॥ चार जो
जनके ऊपरे, पुरुष बिदेही पूर ॥ झग्र
मग्र वा नग्रहै, बाजे अनहद तूर ॥ २ ॥
अपने टेके हम खडे, सतगुरु दिया ब
ताय॥ खिडकी खोल दिखाइया, रहा
गगनकूं जाय ॥ ३ ॥ कहे कबीर धर्मदा

ससे, प्रगट मे दियो लखाय ॥ सो हंसा भल पावहीं, नहिं आवे नहिं जाय ॥४॥

मंगल ॥ अचरज देखो कामनी, कहते को पतिआय ॥ अधर साहेब हम देखिया, सतगुरु दियो लखाय ॥ टेक ॥ चंद सूरज जाहां वाहां नहीं, नहीं वाहां धर्ति अकाश ॥ तेहि पुर मेरो पीतमा, केहि बिध करहुं निवास ॥ १ ॥ गुरु दरसनके कारनै, सरबस देउँ लुटाय ॥ एक पलकके बीछूडे, अब जिव कछु न सुहाय ॥२॥ गुरु दरसन हम पाइया॥छूटल कुल परिवार ॥ अब जाऊं पुर आपने, परख परख टकसार ॥३॥ कहे कबीर धर्मदास सो, हिरदै करो बिचार॥ अरस परस करो कामनी, निर्गुन नाम तुमार॥४॥संपूर्ण॥

मंगल ॥ झग्र मग्र मुक्तामणी ॥ हीराको प्रकाश ॥ जहां वहां मानिक दीप है ॥ तहां पुरुषको वास ॥ टेक ॥ चौदिस दमके दामनी, झलके रवि और चंद ॥ जगमग पंथ निहारले, पुरुष प्रेम आनंद ॥ १ ॥ ऐसा अद्भुत खेल है, अगम भेद टकसार ॥ शब्द सुर्त अस्वार है, हंसा चले वहि द्वार ॥ २ ॥ सेत ध्वजा जहां फरकही, अनहद्द गरजे निसान ॥ सत पुरुषके दरसते, हंसा भये निर्वान ॥ ३ ॥ सेत सिंघासन छत्र है, गर्जत शब्द गंभीर ॥ सत समरथ जहँ बैठही, सनमुख सत कबीर॥४॥ संपूर्ण ॥

मंगल ॥ सब्द सब्द सब जग कहे, सब्द सनेही कोन ॥ ताहि चीन्ह परिच

य करो, हिरदे मे प्रमान ॥ टेक ॥ सुर्त अधार है सब्दके, सब्द लगन आधार ॥ लगन अधार है ततके, सो मैं कहूं पुकार ॥ १ ॥ सब्द सुर्त दोय सम करो, सो एक कैहे नाम ॥ सतगुरु भेद बतावे, जब पोहँचे ओहि गाम ॥ २ ॥ पौन पचासीके ऊपरे, सोही पुरुषको देश ॥ सो चढ हंस सिधावही ॥ बहुरि न पाछे भेस ॥ ३ ॥ पौन बिना निज पौन है, पांच तीनसे न्यार ॥ हंस बिहंगम पावही, पौंचे लोक हमार ॥ कहे कबीर धर्मदाससे, यार सुर्त चितलाय ॥ ग्यान ग्रंथ को मूल है, राखो गुप्त छिपाय ॥ संपूर्ण॥

शब्द ॥ साहब ऐसा अपरंपार, जाको सत् शब्द अधार ॥टेक॥ ब्रह्मा जाको

खोजत धावे॥बेद कितेब पार नहिं पावे॥
सुरनर मुनिवर बहुत पछतावे॥शेष सह
स्त्र मुख निसदिन गावे ॥अस्तुति करहि
पार नहिंपावे॥बिना बिबेक बिचार॥१॥
पिंड ब्रह्मांड कथै ब्रह्मचारी ॥जोलों का
या मनकी जारी॥काया जल बल होगइ
छारी ॥ ताके आगे बस्तु अपारी ॥ कोई
पावे तनमन वार ॥२॥ जानों तीन प्रपं
चिक देवा॥ जीव लगाये अपनी सेवा ॥
करे प्रपंच लखे नहिं भेवा ॥ उन जीवन
का लगे नहिं खेवा॥उडगई काली धार॥
॥३॥ हेत करै कामिनी अर्धंगा ॥ चर्चा
करे क्रोधके संगा॥उनसे होय भक्ति चि
त भंगा॥ जबलग नहिं पांचो एकरंगा॥
छूटे नहिं कपट लबार॥४॥जाजा मनतू

शहाना होई ॥ आशाके घर लखो मत कोई ॥ पाप न पुन्न जहां एक न दोई ॥ निर्भय नाम जपो नर लोई ॥ छुटगयो सकल विकार ॥ ५ ॥ सतगुरु मिले तो लागे तीरा ॥ हंसा होय सुमतका धीरा ॥ जम जालमकी मिटगई पीरा ॥ निरभय पद सत् नाम कबीरा ॥ आवागमन निवार ॥ संपूर्ण ॥

शब्द ॥ मारग मे लूटे पांच जनी ॥ तेरी काया नगरीको कोन धनी ॥ टेक ॥ आसा तृष्णा नदिया भारी ॥ वहगये सिद्ध बडे भेक धारी ॥ जो उवरे सो शरन तुमारी ॥ जैसे चमके सलअनी ॥ १ ॥ पांचपचीस मिलरोके घाटा ॥ साधू जन चढगये उलटी बाटा ॥ घेर लिये सब औ

घट घाटा ॥ पार उतारो आपधनी ॥२॥
बनमें लूटे मुनिजन नागा ॥ डसगइ
मम्मता उलटा टांगा ॥ ज्याके कान गु
रू नहिं लागा ॥ शृंगीऋषिसे आन ब
नी ॥ ३ ॥ संकर लूटे नेजा धारी ॥
रहे तउनकी कोन बिचारी ॥ भूलरही
करमन की मारी ॥ त्रिगुन झुक रही ति
न अनी ॥ ४ ॥ इंद्र बिगारी गौतम नारी ॥
कुब्जा कृष्ण लेगयो मुरारी ॥ राधा
रुक्मणि बिलखत छांडी ॥ रामचंद्रसे
आन बनी ॥ ५ ॥ साहेब कबीर गुरु दी
ना हेला ॥ धर्मदास तुम सुनो निज चे
ला ॥ लंबा मारग पंथ दुहेला ॥ सुमिरो
सिरजन हारधनी ॥ ६ ॥ र ॥

शब्द ॥ रस मैं झरे ॥

टेक ॥ त्रिकुटी संगम बाजा बाजे ॥ रुनुक झुनुक झनकार करे ॥ १॥ है कोई पंडित तत्व बिबेकी ॥ ग्यान बिबेक बिचारकरे ॥ २ ॥ आसन मार मढीमें वैठे ॥ अलख पुरुष वाके नजर पडे ॥ ३॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ अजर पिया फिर नाहि मरे ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

शब्द॥नगरमें रमता जोगी आया॥

टेक ॥ पांच पुत्र पचीसों नाती ॥ एक नारी उपजाया ॥ गुन अवगुन सो न्यारा खेले॥आपका रूप छिपाया॥ १॥ नहीं कछु रूप नहीं कछु रेखा ॥ दमकूं दूर चढाया ॥ इंगला पिंगला माहे ताल बजावे ॥ तो आपको रूप दिखाया ॥ ॥ २ ॥ कोन घर सोवे कोन घर जागे ॥

कोन घर जाय समाया ॥कोन पुरुषको ध्यान धरत है ॥ कैसे मांहे शब्द सुना या॥३॥सूरज घर सोवे चंद्र घर जागे॥ सुन्नमें जाय समाया॥सत्पुरुषोंका ध्या न धरत है ॥ तो सोहंग मांहि शब्द सुना या॥४॥जागेगा सो परमपद पावे॥सोते कूं जम खाया॥कहे कबीर सुनो भाई सा धु ॥ अगम संदेसा लाया ॥ ५ ॥ संपूर्ण॥

शब्द ॥ संतो सत्गुरु अलख लखा या ॥ जासो अपन आप दर्साया ॥

॥ टेक ॥ बीज मध्ये ज्योंवृक्ष दिखा या ॥ वृच्छ मध्येज्यों छाया ॥ परमातम मे आतम जैसे ॥ आतम [illegible] माया ॥ ॥ १ ॥ ज्यों न[illegible] सु[illegible] ॥ सु न्न म[illegible]

च्छर दरसे ॥ अच्छर सब विस्तारा॥२॥ जैसे रवि मध्ये किरण दिखाये॥ किरण मध्य परकासा॥पारब्रह्मते जीव ब्रह्महै॥ जीव मध्ये स्वासा ॥ ३ ॥ स्वासा मध्ये शब्द दिखाया ॥ अर्थ शब्दके मांहीं ॥ब्र ह्मते जीव जीवते ब्रह्महै॥न्यारा मिलास दाही॥४॥ आपहि बीज वृच्छ अंकूरा ॥ आपही फूल फल छाया॥सूरजके किरन प्रकासिक आपहि ॥आपही ब्रह्म जीव है माया ॥ ५ ॥ आतममे परमातम दर से॥ परमातममे झांई ॥ झांईमे पर झांई बोले ॥ लखे कबीरा सांई ॥

शब्द॥ऐसा जानताहै कोई ख्याल॥ ॥टेक॥ धर्ती वेद पताले जावे ॥ सेस ना गकूं बसकर लावे ॥ शेपनाग वासुका

सारा ॥ बासु नाग सत्‌को सारा ॥ कमट पीटपर ख्याल ॥ पूरबको सोध पच्छम कोलावे॥ अंधाधुंदको भेद मिटावे ॥ शिला द्वार दच्छन दे राखे॥ उत्तर जाय सो जीवन चाखे ॥ चारों दिसा को हाल ॥ २ ॥ नौका सोध सरस्वति लावे॥ एकबार सुमेरु चढावे ॥ मेरुदंडपर आसन मारे ॥ सन्मुख धागा सुर्त गहावे॥ गगन गुफाके हाल ॥ ३ ॥

गगन गुफामें अति उजियारा ॥ अजपा ज ॥ बिन माला॥घन्ट शंख सहना या ॥ वृच्छ मदिस रा [illegible] गाजे॥ मे आतम जैरे। [illegible]

॥ १ ॥ ज्यों न [illegible]

न्न मध्ये ॐकशा [illegible]

के भीतर दिवस प्रकासा ॥ हीरा बरत महाल ॥ ५ ॥ कहे कबीर कोई बिरला पावे ॥ जाकू सतगुरु आप लखावे ॥ क्षमा सील संतोष ले आवे ॥ दया दीनता आवे भाई ॥ चलत हमारी नाल ॥ ६ ॥

शब्द ॥ मोकूं क्या तूं ढूंढे बंदे॥मैं तो तेरी पासमें ॥टेक॥ न महजीत में ना देवलमें॥ ना मैं कासी कैलास में ॥ ना मैं मथुरा अवध द्वारका॥मै तो साँची आस में॥१॥ना बकरीमें ना चकवामें ॥ ना मैं छुरी गडासमें॥ना मैं सींग खाल पूछमें॥ ना हड्डी नां मांसमे ॥ २ ॥ ना मैं कोई करम धरममें ॥ नामैं जोग सन्यासमें ॥ नामैं मिलूं जोग जपकीने ॥ मेरी भेट विस्वासमें ॥ ३ ॥ सबमें रहूं सब

न से न्यारा ॥ देखो ग्यान प्रकासमें ॥ खोजी होय तो तुरुत मिलूंगा ॥ एक छिनके तल्लासमे ॥ ४ ॥ शुक बसेर हा कमहै तेरे ॥ मेरा बास मवासमें ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ सब स्वासन के स्वासमे ॥ ५ ॥

शब्द ॥ पास खडाहै नजर न आवे॥ है महबूब प्याराबे ॥ टेक ॥ है घटमांहीं जाने सब घटकी ॥ रहत खलकसे न्याराबे ॥१॥ कोई तीरथ ब्रत जोग तप संजम ॥ यहि करि करि सबहाराबे॥ सुरनर मुनि और पीर औलिया ॥ नाम न कोई विचाराबे ॥२॥ गु[illegible] [illegible]मसे कोई

[illegible] ३॥

हारा ॥१॥ टेक ॥ संकट जोनी कबहु न आवे ॥ ना वो धरें अवतारा ॥ २ ॥ ब्रह्मा वेद भेद नहिं पावे ॥ छूटे पडी लंबारा ॥ ३ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ निर्गुन धनी हामारा ॥ ४ ॥

शब्द ॥ अब हम आनंदको घर पायो ॥ टेक॥ काम क्रोधकी गाघर फूटी॥ ममता नीर बहायो ॥ १ ॥ तज प्रपंच वेदकी किरिया॥निरभय निशान बजायो ॥२॥ पांच तत्वकी यातन गुदरी ॥ सुमतको टोप बनायो ॥ ३ ॥ हद घर छोड बेहद घर आसन ॥ चरन कँवल चितलायो ॥ ४ ॥ चांद सुरज दिवस नहिं रजनी ॥ व्हां जाय लाड लडायो ॥ ५ ॥ कहे कबीर कोई पियाजीके प्यारे ॥ पिया पिया रट लायो ॥ ६॥

न से न्यारा ॥ देखो ग्यान प्रकासमें ॥ खोजी होय तो तुरत मिलूंगा ॥ एक छिनके तल्लासमे ॥ ४ ॥ शुक बसेर हा कमहे तेरे ॥ मेरा बास मवासमें ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ सब स्वासन के स्वासमे ॥ ५ ॥

शब्द ॥ पास खडाहे नजर न आवे॥ हे महबूब प्यारावे ॥ टेक ॥ हे घटमां हीं जाने सब घटकी ॥ रहत खलकसे न्यारावे ॥ १ ॥ कोई तीरथ ब्रत जोग तप संजम ॥ यहि करि कारि सबहारावे॥ सुरनर मुनि और पीर औलिया ॥ नाम न कोई विचारावे ॥ २ ॥ गुरु गमसे कोई विरला पावे॥ कहत कबीर पुकारावे॥ ३ ॥

शब्द॥ करता करम रेखसे न्यारा॥ ना वहमरहि न मारे काहूकूं ॥ सबका पालन

हारा ॥१॥ टेक ॥ संकट जोनी कबहु न आवे ॥ ना वो घरें अवतारा ॥ २ ॥ ब्रह्मा वेद भेद नहिं पावे ॥ छूटे पडी लबारा ॥ ३ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ निर्गुन धनी हामारा ॥ ४ ॥

शब्द ॥ अब हम आनंदको घर पायो ॥ टेक॥ काम क्रोधकी गाधर फूटी॥ ममता नीर बहायो ॥ १ ॥ तज प्रपंच वेदकी किरिया॥निरभय निशान बजायो ॥२॥ पांच तत्वकी यातन गुदरी ॥ सुमतको टोप बनायो ॥ ३ ॥ हद घर छोड बेहद घर आसन ॥ चरन कँवल चितलायो ॥ ४ ॥ चांद सुरज दिवस नहिं रजनी ॥ व्हां जाय लाड लडायो ॥ ५ ॥ कहे कबीर कोई पियाजीके प्यारे ॥ पिया पिया रट लायो ॥ ६॥

शब्द ॥ गलतान मता जब आवेगा॥ तब जिवडा सुख पावेगा ॥ टेक ॥ धीरज की धर्तीपर सोवेगा ॥ क्षमाकी खाक लगावेगा ॥ १ ॥ अचार बिचार छुटे वा जिवका ॥ दुब्धा दूर बहावेगा ॥२॥ पांचो इंद्रीके बल नासे ॥ आपमे आप समावेगा ॥ ३ ॥एकहि ब्रह्म सकल घट दर्से ॥ सम दृष्टी लौलावेगा ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ क्यों न परम पद पावेगा ॥ ५ ॥

शब्द ॥ मैं दिवाना नामका ॥ मुझे कोई ना छेडो बे ॥ टेक ॥ हर किसीकूं मार बैठूंगा, दूर खडे रोबे ॥ १ ॥ मैं भूला घर आपना ॥ बन बन पुकारूंबे ॥२॥एक मेरे हातमे बनी ॥समशेर खलककीबे ॥३॥तू लडने हारे लडलेप्यारे॥हौस लड

नेकी वे॥४॥ हत्ती को न हिसाबमे ॥ मैं
वागकूं मारूं वे॥५॥सिंहकूं फिरूं ढूंढता
वन बन पुकारूं वे ॥ ६ ॥ पूरन प्याला प्रे
मका मेरे हाथमें आया वे ॥ ७ ॥ भर पी
या है कमालने॥ कबीर पिलाया वे ॥८॥

शब्द ॥ साधो मत कोई करो अभि
मानरे॥ खलक समानी खाकमें ॥ टेक ॥
बहुतक तोडे पातिया॥बहुतक देव बनाई
हो ॥ बाद बिवाद काम नहिं आवे ॥ ज
ब पकडे जमराई हो ॥ १ ॥ जैसे माटी
का पूतरा ॥ रचे बनाय बनाई हो ॥ बिन
सत बार न लागही ॥ पानीमे गल जाई
हो॥२॥ जैसे ओसका मोतिया ॥ऐसा है
संसारा हो॥झलकत दीसे दूरसे अच्छा॥
लगे पवन फुटजाई हो॥ ३ ॥ मात पिता

दारा सुत बंधू ॥ और दुलारी नारीहो ॥
ये सब हिलमिल बिछुरेंगे ॥ संग रहे दिन
चारीहो॥४॥कहेकबीर सुनोभाई साधू॥
साहेब अपरंपारा हो ॥ संतन लाधो ना
म साहेबको॥ विष लाधा संसाराहो ॥५॥

शब्द ॥ मेरी अरजी दीन दयालसे ॥
गुरुजी अबकी बेर उबा रोहो ॥

टेक ॥ आईथी मैं वा देससे॥ भई पर
दसन नारोहो ॥ ओ मारगमें भूलगई
जासे ॥ विसर गई निज सारोहो॥१॥ जु
गन जुगन भरमत फिरत हूं ॥ जमके
हात बिकानी हो ॥ अब करजोर विन
ती करूं मैं ॥ मिलके बिछुड न होय हो
॥ २ ॥ विषम नदिया विकार की है ॥
मोह दंभ अहँकारो हो ॥ मोह मारगमें

वांके रहे ॥ जीने खाये सुरनर झारो हो ॥ ३ ॥ शब्द जहाज है कवीरका ॥ सत गुरु खेवन हारो हो॥कोई कोई हंसा आनके बैठे॥ पलमें करूं उवारो हो ॥ ४ ॥

शब्द ॥ को सब्द सिंहासन पाटमें ॥ तुम हंसा बैठे आय ॥ कोन नाम मुक्ता मणि ॥ कोन नामवे अंस ॥ कोन नाम वे पुरुषहै ॥ कोन नाम वे हंस ॥ १ ॥ अजर नाम मुक्ता मणी ॥ उग्र नाम वे अंस॥ग्यानी नाम वे पुरुषहै सुरत नाम वे हंस॥ २ ॥ मूल दिसिज दिपाइयो ॥ आये सुना यम पाय ॥ बैठे हंस उबार सोहंग कर गहि वाह ॥ ३ ॥ जंबूद्वीपमें हंसा आये ॥ पांजी वैठे जाय॥ कहे कवीर धर्म दाससो ॥ तुम लेवो बांह चढाय॥४॥

शब्द ॥ नाम सनेही न छांडिये॥ भावे तन मन जरि जाय ॥ टेक ॥ पानी से पैदा किये नख शिख स्वरूप बनाय ॥ सो साहेब क्यूं छांडिये॥ ओ तो गाढे होत सहाय ॥ १ ॥ महल बने चीने नहीं ॥ बनाये ऊंचे धाम॥ जब जम बैठे कंठमें॥ तेरा कोई न आवे काम ॥ २ ॥ मात पिता सुत बंधवा ॥ और दुलेरी नार ॥ ए सब हिल मिल बिछुरे॥ अंत न आवे कोई काम ॥ ३ ॥ जैसी लागी औरसे ॥ दिन दिन दूनी प्रीत॥ नाम कबीर न छांडिये॥ भावे हार होयके जीत ॥ ४ ॥

शब्द॥ संतो भक्ति भेषसे न्यारी ॥ मन पवना पांचो बस कीना ॥ जिन ये राह सँवारी ॥ टेक ॥ ये संसार अय

सा बनाहै॥कागद का घर कीना ॥माला तिलक छापजो लीना ॥ परम तत्वकाहू ना चीना ॥१॥ तीरथ बरत सब कष्ट का घोडा ॥ मजल न पहुंचे कोई ॥पत्थरको नर करता कर पूजे ॥दुनियां येह कर बिगोई ॥ २ ॥ गोरख नाथ मुद्रा नहिं पहिरी ॥ मूंड नहीं मुंडाया ॥ यह उबारकी फांसी शिर ऊपर॥ गुरुके बंद छुडाया ॥ ३ ॥ गरभ बासमें सुमरन कीना॥ सुखदेव तब कहांथी माल ॥ कहे कबीर भेख सब भूला ॥ मूल छोड गहिडाल॥ ४ ॥

शब्द ॥ अजहूं समझ मन भोराहो ॥ अंजहु समज मन भोराहो ॥ टेक ॥ काया फुलबाडी सुख मत जानो ॥ दोइ दिन फूलनके बासहो ॥ जल बिच मीनकरे

सुख सैना ॥ शिर पर झीमर जम रहो ॥ १ ॥ आज कालकी घडिया बजतहैं ॥ शिर पर कालके पगडा हो ॥ गुरु भक्ति बिन भये नर गद्धा ॥ शिर पर मायाके रगडा हो ॥ २ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ शब्द न माने सो नुगराहो ॥

शब्द॥मन नेकी करलेदो दिनका मिजमान॥टेक॥जोरू लडका कुटुम्ब कबीला॥ दो दिनका तनमनका मेला॥ अंत कालकूं चला अकेला॥ तज माया मंडा नरे॥ १ ॥कहांसे आया कहां जायगा॥ तन छूटे मन कहांरहेगा॥आखर तुझको कौन कहेगा ॥ गुरु बिन आतम ग्यानरे ॥२॥कौन तुम्हारा सच्चासांई॥झूंठा होय सकल संसारा ॥ कहां मुकाम कहां ठि

काना ॥ क्या वस्तीका नामरे॥ ३॥ रहट
माल पनघटकूं फिरता॥आता जाता भ
रता रीता॥जुगन जुगन तू मरता जीता॥
मत करना अभिमानरे ॥ ४ ॥ हिल मि
ल रहिना देके खाना॥नेकी वात सिखाव
त रहिना ॥ कहें कबीरसुनों भाई साधू॥
जपना निरगुन नामरे ॥ ५ ॥

शब्द ॥ मन मौला जाने ॥ गुजर गई
गुजरानरे ॥ टेक॥ कोइ दिन रूखा सूखा
रांधा॥कोइ दिन दूधमलीदा छांधा॥ को
इ दिन पत्र परवल कांदा ॥ कोइ दिन है
हैरानरे॥ १ ॥ कोइ दिन शाल दुशाला अं
गे ॥ कोइ दिन फाटे टूटे नंगे ॥ कोइ दि
न खासे रंगे चंगे॥कोइ दिन तोड़े तानरे
॥ २ ॥ कोइ दिन देवल कोइ दिन मस

जिद ॥ कोइ दिन बाग बगीचा बाडी ॥ कोइ दिन रहिते वृक्षकी छाया ॥ कोइ दिन है मैदानरे ॥ ३ ॥ लख चौरासीका देख तमासा॥ऊंच नीच घर लेवे बासा॥ कहें कबीर सुनों भाई साधू ॥ जपना गुरु का नामरे ॥ ४ ॥

शब्द ॥ नाम रटन लागो रे सोई संत स्याना हो ॥ बिन मुख रटन लागरही जिभ्या न हलाना हो ॥टेक॥ बिन श्रवण सुन्या करे दोइ नयन छिपाना हो॥ त्रिवेणीके घाटपर ॥ अस्नान कराना हो ॥ १ ॥ चंदन चौत्रा पश्चिम दिसा ॥ खिडकी

हो ॥ पानी पवनकी गम नहीं ॥ अमृत वरसाना हो ॥३॥ चंद नहीं जहाँ सूरज नहीं॥तहाँ वहाँ दरसाना हो॥कहें कबीर कोई संतजन॥वाही देसदिखानाहो॥४॥

शब्द ॥संत चले दिश ब्रह्मकी॥तज कुल व्यवहारा॥सीधेमारग चलते॥ मधे संसारा हो ॥ टेक ॥ अरे हो बाबा दादा चलगये॥सोतो मारगखोटाहो॥ऐसो ब निज न कीजिये॥जामें आवे टोटाहो॥१ मर्यादा सब वेदकी सोतो ॥ संतोने मेटी हो॥जैसे गोपी कृष्णसे ॥ लज्जा तज भें टीहो॥२॥अरेहो पंथ पुराना खोजियो॥ औदिसे सब फांसाहो ॥ साहेब कबीर उलटे चले ॥ मिटाया यम फांसाहो॥३॥

शब्द ॥ क्या भरमें भटकत फिरो ॥

करो खोज बनाई हो ॥ टेक ॥ हारे सत् शब्द चीन बिना॥ जीव जमले जाई हो ॥१॥ मूल परवाना पायके॥ निज लगन धराईहो॥२॥यमका अमल मिटायके॥ लेहु अंक चढाईहो ॥ ३ ॥ मूल शब्दसो बसे कहा ॥ जुग जुग समझाईहो ॥ ४ ॥ जिन निश्चय करि मानीया॥ ताहि लेहु छुडाईहो॥५॥ कहे कबीर धर्मदास सो॥ मैं कहूँ चेताई हो ॥६॥ अजर अमर घर ले चलूँ ॥ देऊँ छत्र तनाई हो ॥ ७ ॥

शब्द ॥ तुम खाली देखो वेद पुराना ॥ परम तत्व नहिं चीना ॥ टेक॥ ये संसार ऐसेही भुलाना॥ सार न सौदा कीना ॥ करम भरममें सब जीव उरझे ॥ इस विध जगत भुलाना ॥ १ ॥

वेद पढ पढ पण्डित भूला ॥ काजी भूला कुरानाहो॥ राम रहीम पर शब्द हमारा ॥ सोगत विरले चीना हो ॥ २ ॥ तीन देव और चौथी माया ॥ और निरंजन राई ॥ इन पांचों मिल अमल चलाया ॥ चौंदिस फिरै दुहाई ॥ ३ ॥ सुंन सिखरलग अमल तुम्हारा ॥ जोति स्वरूप ठहराई ॥ देखा ब्रह्म ग्यान तुम्हारा ॥ जीवका कहां ठिकाना ॥ ४ ॥ सतगुरु शरन जीव नहिं आवे ॥ जमके हाथ बिकाना ॥ कहे कबीर सुनों भाइ साधू ॥ शब्द होय ठिकाना ॥ ५ ॥

शब्द ॥ संतो सब्दे शब्द बखाना ॥ संतो॥२॥ शब्दे पास फसे सब कोई ॥ शब्द नाहिं पैचाना ॥ सत सब शब्द सबद

बखानाजी ॥ टेक ॥ प्रथम पुरुष पूरन सु
र्तसे ॥ पांच शब्द उचाराजी ॥ सोहंग
शब्द निरंजन कैहे ॥ ररंकार ॐकारा
जी ॥१॥ पांच शब्द और तत्व प्रकृती ॥
तीन गुन उपजाया जी॥लोक बेद और
चारों खानी ॥ लखचौरासी बनाया जी

ब्द पांचो है मुद्रा ॥ काया बीच ठिका
नाजी ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा ॥ ररं
कार पैचानाजी ॥ ६ ॥ सोहंग शब्द नि
रंजन मुद्रा ॥ है नयनोंके मांहीजी ॥ वा
कूं जाने गोरख जोगी ॥ माहा तेज सो
आही जी ॥ ७ ॥ ॐकार है भूचरि मु
द्रा॥ है त्रिकुटी अस्थानाजी॥व्यास देव
तांही पैचाना ॥चंद सूरज तहँ जाना
जी ॥ ८ ॥ सोहंग शब्द अगोचरि मु
द्रा ॥ भमर गुफा अस्थानाजी ॥ शुक
देव मुनी ताहि पैछाना ॥ सुनिये अनहद
कानाजी ॥९॥ ररंकार है खचरिमुद्रा ॥
दसवेंद्वार ठिकानाजी॥ब्रह्मा विष्णु महे
श्वर देवा ररंकार पहिचानाजी ॥ १०॥
शक्ति शब्द उनमुनी मुद्रा॥ वसे अकास

बखानाजी ॥ टेक ॥ प्रथम पुरुष पूरन सु
र्तसे ॥ पांच शब्द उचाराजी ॥ सोहंग
शब्द निरंजन कैहे ॥ ररंकार ॐकारा
जी ॥१॥ पांच शब्द और तत्व प्रक्रती ॥
तीन गुन उपजाया जी॥लोक बेद और
चारों खानी ॥ लखचौरासी बनाया जी
॥ २ ॥ शब्दे लक्ष चौरासी जीवन ॥ उँधे
मुख झुलाया जी ॥ शब्दे काल कलंदर
कैहे ॥ शब्दे भरम भुलायाजी ॥ ३ ॥
प्रथम पुरुष प्रकास मेटके ॥ बैठ मूंदे द्वा
रा जी ॥ शब्दे निरगुन ॥ शब्दे सरगुन ॥
शब्दे बेद पुकारा जी ॥ ४ ॥ शब्दे पुरु
ष अकहके भीतर ॥ बैठ करे अस्थाना
जी ॥ ग्यानी पंडित जोगी कवितहाँ ॥
शब्दमें अकल रुझानाजी ॥५॥ पांच श

ब्द पांचो है मुद्रा ॥ काया बीच ठिका
नाजी ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा ॥ ररं
कार पैचानाजी ॥ ६ ॥ सोहंग शब्द नि
रंजन मुद्रा ॥ है नयनोंके मांहीजी ॥ वा
कूं जाने गोरख जोगी ॥ माहा तेज सो
आही जी ॥ ७ ॥ ॐकार है भूचारि मु
द्रा॥ है त्रिकुटी अस्थानाजी॥व्यास देव
तांहि पैचाना ॥चंद सूरज तहँ जाना
जी ॥ ८ ॥ सोहंग शब्द अगोचारि मु
द्रा ॥ भमर गुफा अस्थानाजी ॥ शुक
देव मुनी ताहि पैछाना ॥ सुनिये अनहद
कानाजी ॥९॥ ररंकार है खचारिमुद्रा ॥
दसवेद्वार ठिकानाजी॥ब्रह्मा विष्णु महे
श्वर देवा ररंकार पहिचानाजी ॥ १०॥
शक्ति शब्द उनमुनी मुद्रा॥ बसे अकास

सनेही ॥ जामें झिल मिलि जोत देखा
वे ॥ जाने जनक विदेही ॥ ११ ॥ पां
च शब्द पांचो है मुद्रा ॥ सो निश्चय क
रि माना ॥ आगे पूरन पुरुष पुरातन ॥
तिनकी खबर न जाना ॥ १२ ॥ परम पु
रुष पार अधर जहां ॥ अधर तारके आ
गे ॥ ताके आगे कोइ न बखाने ॥ शब्दे
में सब पागे ॥ १३ ॥ साध सिद्ध और
तीनो देवा ॥ पांच शब्दमें अटके ॥ मुद्रा
साधि रहे घट भीतर ॥ फिर ऊंधे मुख भ
टके ॥ १४ ॥ पांच शब्द पांचो है मुद्रा ॥
लोक बेद जमजाला ॥ परम पुरुष बिन
अधर जहां लग ॥ बूझे बिन सब काला
॥ १५ ॥ कहे कबीर बूझके भीतर बूझ
हमारी जाना ॥ सत गुरु मिले तो बूझ
बतावे ॥ पावे ठोर ठिकाना ॥ १६ ॥ सं० ॥

शब्द ॥ सुनो कोई साधू प्रेम लगाय के ॥ निरंजन ख्याल पसाराहो ॥ टेक ॥ धर्ती अकाश रचा अमृत मंडल ॥ तीन लोक विस्ताराहो ॥ ब्रह्मा बिष्णु महा देव प्रगटे॥इनके सिर दीना भारा हो ॥ ॥ १ ॥ ठोर ठोर तीरथ ब्रत थापत ॥ ठग वनको संसारा हो ॥ लख चौरासी जीव भुलाना॥ कोईन पावे पाराहो॥२॥ जार वार भस्म कर डारे॥फिर फिर देई अवता राहो ॥ सतगुरु मिलै तो शब्द लखावे ॥ भौसागर करे पाराहो ॥ ३॥ सतगुरु के शब्द चीने बिनारे ॥ बह्यो जाय संसारा हो॥माया मोहि सकल जगवंधा कोईन पावे पाराहो ॥४॥ भागत जीव ठोर न हिं पावत॥अटकत कालके द्वाराहो॥देख

करामत सब कोइ भूले॥ सिद्ध साध बेहवा राहो ॥५॥ अँमर लोकमें पुरुष बिदेही॥ रोकत उनका द्वाराहो ॥ सेवा कीन पुरुष बर दीना ॥ धर्मराय बटपाराहो ॥ ६ ॥ बिषिया रूप आपहू बैठे ॥ जीवन करत अहाराहो ॥ ब्रम्हा विष्णु महादेव केहे॥ यह नहिं पावे कोउ पाराहो ॥ ७ ॥ इन तीनोंसे निरंजन पारा ॥ निरंजनसे पुरुष निन्यारा हो ॥ कठिन कालसे बांचा चा हो ॥ गहो शब्द टकसाराहो ॥ ८ ॥ कहे कबीर अमर सो होवे ॥ जो निज होय हमाराहो॥ कठिन कालसौ लेहु उबारी॥ बहुरि न आवे संसाराहो ॥ ९ ॥

शब्द॥ पंडित मोहि कहो समझाई॥ जगको कर्ताको बतलावे॥ किन यह जग

उपजाई ॥टेक॥ मच्छ कच्छ वराह नर
सिंग॥ सतजुग बनों चारी॥बामन परश
राम और रामै ॥ त्रेता तीन विचारी॥
॥ १ ॥ कृष्ण बौध दोई द्वापर बर्नू ॥ म
हिमा बर्नू काकी ॥ नौ सिका वसूल द
फतरमें ॥ कलु नि कलंकी बाकी ॥ २ ॥
दफतर खोलो बाकी बोलो ॥ उग्र न का
हू कीना ॥ यह करम पियादा सबके
संगमें ॥ संसे मसी मुख दीना ॥ ३ ॥
जब एको अवतार न होते॥ तब केहि
गत जानो भाई ॥ के पूरबके आगत जि
व सब॥ बीचहिं सूं गत पाई ॥ ४ ॥ जगत
आद औतार मद्धमें ॥ करतम कर्त्ता मा
ने ॥ कर्त्ता मध्यके आद चाहिये ॥ पुत्र
हि पिता बखानी ॥ ५ ॥ एक ईश सब

घटमें व्यापक॥श्रुति कह आवे न जाई॥ जवै जीव यह काया त्यागे॥ तो ईश्वर अछत गंधाई ॥ ६ ॥ ब्रम्ह इच्छासे जगकी उतपत॥ गावो गाल बजाई॥ ब्रम्ह शब्द निपुंशक बनूँ॥ कोने अकल चुराई॥ ७॥ ब्रम्हकी छाया बनों माया॥ रूप बिहून बताई॥ बिना रूप कोई छाया नांही॥ सून मशान सगाई॥ ८॥ बाजीगर सब पंडित पोथी॥ भानमती की कला॥ कहे कबीर कोई नहिं चीना॥ सबही कहै यह भला॥ ९॥

शब्द॥ अब हम आद सनेही आये॥ निर्गुन सर्गुन जब नहिं आये॥ तब जीवन पर हम चल आये॥ जमका त्रास देखा जब भारी॥तब हम हुकम चलाये॥

॥ १ ॥ जो माया प्रपंच न होता ॥ सोवत हंस जगाये ॥ जुगन जुगन हम येही पुकारे ॥ बिरला संत घर पाये ॥ २ ॥ सोरे असंख सहस्र जुग बीते ॥ भेद कोई नहिंपाये॥जब जीवन परतीत न आवे॥ पूँजी खोल बताये ॥ ३ ॥ साहेब कबीर गुरु कीसि आये॥ रामानंद समझाये ॥ भाव भक्ति एको नहिं देखा ॥ न्यारा पंथ चलाये ॥ ४ ॥

शब्द ॥ पहिले शब्द भया ॐकारा॥ तामेसे निकला निरंजन न्यारा ॥ टेक ॥ बीजे शब्द ररंकार भया ॐकारा ॥ तामेसे निकला कुर्म वेव्हारा ॥ १ ॥ तीजे शब्द सुर्ता नारी ॥ तामेसे निकली कन्या कुमारी ॥ २ ॥ तामेसे निपजा ती

नो देवा ॥ ब्रम्हा विष्णु महेश्वर देवा॥३॥ पूंछे ब्रम्हा सुनो माताजी॥कोन तेरो पुत्र कौन घर नारी ॥ ४॥ आद अंत मध्य हम तुम दोई॥कोन तेरा पुरुष कौन तेरी जोरू होई ॥ ५॥

साखी।

माता तूं मेरी भई, पुत्र भया निज कंथ॥ कहे कबीर अचरज भया, तुम देखो विवेकी संत ॥ १ ॥

शब्द॥ सबका साक्षी मेरा सांई ॥ ब्रम्हा बिष्णु रुद्र ईश्वर॥ ले अवतार सबे प्रगटाई॥ टेक॥ पांच पचीस संचित करके ॥ ईने सब जग भरमाई ॥ अकार उकार मकार मात्रा ॥ इनके पार बताई॥ १ ॥ जाग्रत सुप्त शुशुप्ति तुर्या ॥ चहुं अवस्था जोई ॥ बैस्व तैजस पाग्य अ

भिमानी ॥ इनते न्यारा सोई ॥ २ ॥ सुक्षम स्थूल और आनन्द माही॥इन मिल भोग भुगाई ॥ शांतिक राजस तामस त्रिगुन ॥ इन ते न्यारा जाना ॥ ३ ॥ शव्द स्पर्श रूप रस गन्धा ॥ तीन मात्रा जो देखा॥ पंचभूत उपजाये वहु विधि॥ इनमे अलख न देखा ॥ ४ ॥ परापछंती मध्यमा वैखरी ॥ चौवानी पंथ प्रवाना ॥ पंच कोस नीके करिदेखो ॥ इनमे राम न जाना ॥ ५ ॥ पांच ग्यानकी पांच कर्मकी ॥ ये दस इंद्रिय जाना॥ चतुष्ट अंतःकरण कहुं तोहे ॥ इनते न्यारा भाना ॥ ६ ॥ कुर्म नाग धनंजय किरकल ॥ देवदत्तहू देखा ॥ चौदे देव इंद्रिय है चौदा ॥ इनमे अलख न पेखा ॥ ७ ॥

मोती नाम चुनी चुनि बोले ॥ टेक ॥ हल हल मुक्ता जोजन भावे ॥ मौन रहे के हरि जसगावे ॥१॥ मानस सरोवर तटके बासी॥नाम चरन बिन अंत उदासी ॥ २ ॥ कागा कुबुद्धि निकट न आवे ॥ पट दिन हंसा दरसन पावे ॥३॥ नीर छीरका करे निबेरा ॥ कहे कबीर सोही जन मेरा ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

गारी।

अलमस्त दिवानी ॥ लाल भई रंग जोबनिया ॥ टेक ॥ रस मगन भई है ॥ देख लालनकी सेजरिया ॥ १ ॥ कर पंख ढुरावे ॥ संग सोहंग सेलरिया ॥ २॥ जहां चंद न सूरा ॥ रहम नहीं जहां भोरनिया ॥ ३ ॥ जहां पवन ना पानी ॥बिन बादल घन घोरनिया ॥ ४॥ जहां

तूं पद तत्त पद असी पद देखा ॥ बाचे ल क्ष समुझावे ॥ कहे कबीर कोई संत ज ठहेरी ॥ न्यारा कर दर्सावे ॥८॥

शब्द ॥ जोगीजन जाग्रत रह्यो भा ई ॥ टेक ॥ जो जोगीजन सो जाई॥चो र मूस ले जाई ॥ १॥ रसकस लेत निचे य नागनी॥बल बुद्धि सब चुन खाई॥२॥ गेडीसे खोई कर डारे॥ नेक न रहेमिठा ई॥३॥चितके चले चित चल मुनिको ॥ मनके चले व्रत जाई॥४ ॥ मृगानाद त पसी जन मोहे ॥ देत सकल अरु झाई ॥ ५॥ जोगी जंगम मुनिवर लूटे ॥ लूटे ढोलवजाई ॥ ६ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ सतगुरु आप बचाई ॥ ७॥

शब्द॥ हरिजन हंस दिसा ले डोले॥

मोती नाम चुनी चुनि बोले ॥ टेक ॥
हल हल मुक्ता जोजन भावे ॥ मौन रहे
के हरि जसगावे ॥१॥ मानस सरोवर त
टके बासी॥नाम चरन बिन अंत उदासी
॥ २ ॥ कागा कुबुद्धि निकट न आवे ॥
पट दिन हंसा दरसन पावे ॥३॥ नीर छी
रका करे निवेरा ॥ कहे कबीर सोही ज
न मेरा ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

गारी।

अलमस्त दिवानी ॥ लाल भई रंग
जोबनिया ॥ टेक ॥ रस मगन भई है ॥
देख लालनकी सेजरिया ॥ १ ॥ कर पं
ख ढुरावे ॥ संग सोहंग सेलरिया ॥ २ ॥
जहां चंद न सूरा ॥ रहम नहीं जहां भो
रनिया ॥ ३ ॥ जहां पवन ना पानी ॥बि
न बादल घन घोरनिया ॥ ४ ॥ जहां

बीजल चमके ॥ प्रेम अमीकी लगी झरिया ॥ ५ ॥ जहां काया न माया ॥ कर मनही कछु रेखनिया ॥ ६ ॥ जहां आप बिराजे॥विलसत पहोप प्रकासनिया ॥ ७ ॥ धर्मदासकी गारी ॥ बारबार बलिहारनिया ॥ ८ ॥

होरी।

गगन मंडल खेलु होरी ॥ टेक ॥ जग मग जोत जगोरी ॥अब मैं खेलुग०॥ मूल कँवल कूं बंद लगाय करि ॥ षट चक्र कूं फोरी हो ॥ भँवर गुफामें नारी सुषमना ॥ सुंदर नवल किसोरी ॥ १ ॥ अर्ध उर्ध बिच ध्यान लगाय करि ॥ मन पौना गहोरी ॥ उन मनि ध्यान स वार निरंतरि॥सतगुरु पद पकरोरी॥२॥ बाजत ताल मृदंग बाँसरी ॥ अनहदकी

घन घोरी ॥ कहे कबीर सतगुरु प्रतापे ॥ रंग सुरंग रँगोरी ॥ ३ ॥

शब्द ॥ हमकूं शब्द मिले ब्रम्ह ग्यानी॥टेक॥ कागासे जब हंस कियो गुरु॥ दीनो नाम निशानी॥१॥ सुख सागर हंसा जहां बैठे ॥ मुक्त भरे जहां पानी ॥ ॥२॥ कुमत जारके अंजनकी नो ॥ सूर्त सुमत गहि आनी ॥ ३ ॥ सील संतोष पहिरे दो कंकन॥वहीं रहो मस्त दिवानी॥ ॥ ४ ॥ खोल किंवाड गई मेहे कूं॥ देख रूप ललचानी ॥५॥ तुम अस पीव मिले जो हमकूं ॥ तो पियाके मन हम मानी ॥६॥ इतना सिंगार करे तुम बिर हिन॥ चरन कमल चित देनी॥७॥ कहे कबीर सुनोभाई साधू॥मनका दाहबुझानी॥८॥

शब्द ॥ देखिये गुरुगम मस्ताना ॥ टेक ॥ इंगला पिंगला चँवर दुरावे ॥ त्रिकुटी संगम तक्त निशाना ॥ १ ॥ पछम दिसाकी खुली किंवारी ॥ गगन महल बिचकर असनाना ॥ २ ॥ तुर्या चढ गर्जन लागी जब ॥ देख स्वरूप सुंदर रिझाना ॥ ३ ॥ जेत मरे सोई पैछानी ॥ गयब नगर सहिजै चल जाना ॥ ४ ॥ रूप सुखमा सुख मिले हे ॥ अस कहै पलटू बैलाना ॥ ५ ॥

शब्द ॥ सोहि जोगी जाके मनहीमे माला ॥टेक॥ नां कर चले न जिभ्या डोले ॥ नां कछु होत तन का कसाला ॥१॥ नाभी नासिका एकमिलावे ॥ गुप्त चाल खुले वहताला ॥ २ ॥ जायके बैठे गगन

गुफामे॥त्याग दिये सब या भ्रमजाला॥ ॥३॥ दश बाजा बाजे गगनमें ॥दास अ जब सुनि होत निहाला ॥ ४ ॥

शब्द ॥ करनी एक करे नहिं मूरख॥ धोखे भरम भुलाना हो ॥ टेक ॥ जो सा हेब या तन मन दीना ॥ ताहि कूं मिल त लजाना हो ॥ १ ॥ लगन लगी बिन प्रेम ना झलके ॥ परमारथ कैसे आवे हो ॥ २ ॥ लोभ मोहकी गांठ न छूटे ॥ कै से संत कहावे हो॥३॥ असल नकल को इ ना पहिचाने ॥ कैसे झँवरी कहावे हो ॥ ४ ॥ कै ताहूं पन कर्ता नहीं ॥ उनहूंकू कहते सांचा हो ॥ ५ ॥ अष्टकरमको ना स न कीना ॥ मिथ्या साध कहावे हो ॥ ॥ ६ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधू ॥ वि रला संत लख पावे हो ॥ ७ ॥

लिखते कबीर बानी ग्रंथकी सैल॥

घरघर गुरू जगतमें होई॥ हमरे गुरू वचन है सोई॥ बचन बंसकी पारख पाई॥ सो हंसा हम संग सिधाई॥ बचन बदे सो हंस हमारा॥ पारस रूपी है वंस तुमारा॥ पारस छुवे कंचन होय लोहा॥ जैसै पुष्पबास तिल मोहा॥ ऐसे कंचन वंस है रूपा॥ कागाते करे हंस सरूपा॥ धर्मदास तुम पंथके राजा॥ कहेउ शब्द जीवके काजा॥ धर्मदास सुनियो यह बानी॥बचन हमारा तुम निहचे मानी॥ वचन वंस नाहिं लागे भारा॥लेखा देचले कडिहारा॥ बिनलेखा गुरुवाई करई॥ आसा बांध काल मुख परही॥ भ्रमे.सब्द ले नरयलमो रे॥विना एकोत

र जो कंडियारा ॥ ते सब जाइ कालके द्वारा॥विनलेखा जो गुरू कहावे॥सिष्य भूले गुरु ठोर न पावे॥

साखी।

इतना लेखा जो पावही, सो सांचे कंडिहार ॥ शब्द लेखा जाने बीना, छले काल बटपार॥ यहि विधि अंस वंस जो होई॥दूत भूत जम कंपें सोई॥ जाते जाते मोह न लावे॥ अंस वंस सोई कहा वे ॥ कुलकी दसी जानकी खोई ॥ नेहचे राज वंस गुरु होई ॥ तिनके पार स चली हे संसारा ॥ देखत कालहोय जरिछारा ॥

श्री

सतनाम लिखते तत्व विचार ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

प्रथमे अकास[1] ॥ ताते वायू[2] ॥ ताते तेज[3] ॥ ताते आप[4] ॥ ताते पृथ्वी ॥ ताते वायू[6]॥ ताते तेज[7]॥ ताते आप॥ ताते पृथ्वी॥ अब तत्वकी पांच मुद्रा ॥ उनके पांच अस्थान समजाऊं ॥ प्रथम प्रिथवी तत्व ॥ भुचरी मुद्रा ॥ उकार मात्रुका ॥

त्रिकुटी अस्तान ॥ १ ॥ दूजी आपकी ॥ चाचरी मुद्रा ॥ निरँजन नयन अस्थाना ॥ २ ॥तीजी तेजकी॥ अगोचरी मुद्रा ॥ सोहँग जाप ॥ नासा अस्तान ॥ ३ ॥ चौथी वायुकी ॥ खेचरी मुद्रा ॥ ररंकार जाप ॥ दसवे द्वार अस्थान ॥ ४ ॥ पांचमी मुद्रा ॥ अकासकी ॥ उनमुनी ॥ शक्ती आतम जाप ॥५॥ यह पांच मुद्रा॥ और पांच अस्थान ॥ और पांच जाप है ॥ कहां मे न्यारे न्यारे ॥ कोई जाने संत सुजान ॥ इसमे कोही भूल चूक ॥ संत जन लेवो सुधार ॥

सुनो संत बिबेकी अब नाडीका प्रमान ॥

वहत्तर नाडी कैहे ॥ उनमें दस है श्रेष्ट ॥ इनके नाम सुनो ॥ गांधारी ॥ हस्त

नी ॥ पुसा ॥ यससुनी ॥ आलंभुसा ॥ क होका ॥ संखनी ॥ इंगला ॥ पिंगला ॥ सुषमना ॥ इंगला वाम भाग ॥ पिंगला दक्षिन भाग ॥ सुषमना मध्यमे ॥ गंधारी वाम चक्षू ॥ दहिने चक्षु हस्तनी ॥ जिभ्या पुसा ॥ दहिने कर्न ये सुसुमनी ॥ बांयां कर्न आलंभुसा॥ कहो कालींगी ॥ गुदा संखनी ॥ येत्ता दस नाडी प्रमान ॥

साखी चाल।

ब्रह्म जगावे ब्रह्मकूं, ब्रह्म जगावे जीव ॥ जीव मिलावे सुर्तकूं, सुर्त मिलावे पीव ॥ साखी शब्द निसदिन सुने, मिटे न मनका दाग ॥ संगतसे सुधरा नहीं, वाका बडा अभाग ॥ संगत कीजे साधकी, हरै औरकी व्याध ॥ ओछी संगत

नीचकी, आठों पहर उपाध ॥ स्वास स्वासपर नाम ले, मिथ्या स्वास मत खोय ॥ ना जानूं या स्वासकी, आवन होय न होय ॥ कोइ कोइ हंस यह जान ही, जिनपर सतगुरुका प्रताप ॥ संपूर्ण॥

श्री

अथ

श्रीग्रंथ स्वास गुंजारकी सैल प्रारंभः॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,–
साहब,
वंश वयालीसकी दया।

सतगुरु वचन ॥ कहे कबीर सत्त प्रकासा ॥ सुर्ता सुर्त धनी धर्मदासा॥ सत्त सार सुक्रित गुन गाऊं॥ अविचल नाम अखे पद पाऊं॥संसै रहित सदासे गाऊं॥ सील रूप सवहिनके नाऊं॥ करे कुलाहल हंस उजागर॥ मोह रहित सुखके आ

गर ॥ तेहि पुर जरा मरन नाही॥ मन वि
कार इन्द्रिय तहां नाही ॥ सत्त लोक हं
सन सुख होई ॥ सो सुख यहां न जाने
कोई ॥ सो जाने जो वहां रहाई ॥ यहां
वहां आयके कहुं समुजाई ॥ वहांकी चा
ल सो यहां चलाई ॥ आवत जात गहर
नहिं लावे ॥ जो समुजे सो उतरे पारा ॥
विन समुजे सव जमके चारा ॥

साखी।

अमर लोककी महिमा, सत शब्द
उपदेश ॥ हंस हेत सो वर्नू, छूटे जम
को देस ॥

चौपाई।

अमर लोककी अविगत वानी॥ धर्म
दास मैं कहूं वखानी॥ जो समुजे सो उत
रे पारा ॥ विन समुजे सव जमके चारा ॥

धर्मदासोवचन ॥ प्रथम शरण सतगु
रु गुन गाऊं ॥ अच्छर भेद सकल सुधि
पाऊं॥सत्तलोक करभाव अपारा॥सो सा
हेब कहो पसारा ॥ भाखों अग्र अग्रीकी
खानी ॥ भाखउं दीप जहां लग जानी ॥
भाखहुँ पुरुष पुरुषके काया ॥ भाख
हुं अभिन्न अमान अमाया ॥ भाखहुं पु
रुष लोककी बानी ॥ समे सहज भाखों
सैदानी ॥ जो काया प्रभु आप सँवारा ॥
सो समुझाय कहा भेवारा ॥ अंमर ता
र अखंडित बानी॥ स्वासा पारसार सैदा
नी॥ जेते स्वासा प्रभुके देहा ॥ तार तार
सब कहो सनेहा ॥ जेतक बचन पुरुष
उचारा ॥ तेतेक बचन नाम अधिकारा॥
स्वासा पारस अजर निर्बाना ॥ सोरह
सुतके नाम बखाना ॥

साखी।

पंच अमीकी देह धरि, प्रगटी जोत अपार ॥ सुर्त संग निर्तत पुरुष, होत स्वास गुंजार ॥

चौपाई।

जोड हात टेके गुरु पाऊं॥ साहेब कहो सत्यकर भाऊं॥ कहो लोकका प्रगट बिचारा॥कहां लग दीप किया बिस्तारा॥ बनौं दीप गुप्त अनुसारा॥बनौं ज्यां लग सकल पसारा॥बनौं सोरा सुतकर भाऊ॥ जेहि बिध तीन सत्य निर्माऊ॥ आप पुरुष स्वासा अनुसारा॥ताकर कहो सकल बिस्तारा॥ केहि बिध सोरह सुत प्रकासा ॥ कहां कहां के है रहिवासा ॥ कहो बिचार सकल अस्ताना॥ सत्य लोक और जमके स्थाना ॥ कैसे आद अंत प्र

भु कीना॥ कैसे स्वदेह कर चीना ॥ कैसे भये निरंजन राई ॥ कैसे तीन लोक नि माँई ॥ कैसे उपजन विनसन कीना ॥ का जाने बाजी जम दीना ॥ केहि विधि इंद्रिय देह बनाई ॥ कैसे पडे जीव बस आई ॥ कैसे जीव अपन पै दरसे॥ कैसे सत पुरुष पद परसे ॥

साखी।

काया मध्ये स्वास है, स्वांसा मध्ये सार ॥ सार शब्द विचारके, साहेब कहो सुधार ॥

चौपाई।

सतगुरु वचन॥धर्मदास जो पूछो आई ॥ कहूं बुझाय भेद समझाई ॥ कहूं लोक परलोक की वानी॥ कहूं पुरुष सुत सर्व बखानी॥ सुनो संदेस आद निर्बान॥

जाके सुनत काल क्षय माना ॥ सुमिरो आद पुरुष दरबारा ॥ सुमरत आद हंस होय पारा ॥

साखी।

तीन लोकके भीतरे, रोंकरह्यो जम द्वार ॥ वेद शास्त्र अगवा भये, मोहे सब संसार ॥

चौपाई।

धर्मदास चित चेत बुझानी ॥ कहो समुझाय अग्रकी बानी ॥ पुरुष अजावन हते बिदेहा ॥ तत बिहंगम सुर्त सो नेहा ॥ चारकरी सिंघासन जोरा ॥पांच ये आप मध्य आजोरा ॥ चारो करी समान प्रमाना ॥ स्वात बूंद भीतर अकुलाना ॥ अंबरमनी अज्रमनि धीरा ॥ अग्रमनी सुकृत मनि बीरा ॥

साखी।

करि करि महा प्रेमल, स्वास स्वासके खान ॥ तेज करन प्रगट भयो, चीता आन समान ॥

चौपाई।

पुरुष अविगत चितवन कीना ॥ उपजो शब्द सूर्त को चीना॥ रहे गुप्त प्रगट भई काया ॥ स्वासा सार सत् निर्माया ॥ शब्द कीना आपन अस्फूला ॥ शब्दहि माहिं सवन कर मूला ॥ शब्द हिते बहु शब्द उचारा ॥ शब्दहि शब्द भया उजियारा ॥ शब्द पारस शब्द अधारा ॥ शब्दहि ते भयो सकल पसारा ॥ प्रथमें शब्द भयो उच्चारा ॥ निर्त तत् एक कँवल सुधारा॥ निह तत् पर प्रभु आसन कीना ॥ रचना रची सकल तब ली

ना॥रचना रची पोहोपमें भारी॥ सहस्र अठ्याशी दीप सुधारी॥ अछय वृक्ष एक रचा बनाई॥ अग्र बासमेंरही समाई॥

साखी।

पडे पातरस फूलमें,प्रगटी जोत अनूप॥
पारसनिज ततपुरुषहै,सूर्त हंसको रूप॥

चौपाई।

जब पारस ऋतु भये ज्ञाना॥ अग्र प्रताप निमिख घर आना॥ प्रणी प्रण उचारा॥ स्वासा पार सबन उचारा॥ स्वासा सार शब्द गुंजारा॥ पंच अमी कर भये विस्तारा॥ स्वासा पोहप अग्र के खानी॥सोरह सुतके भये उतपानी॥ पंच अमी साहेबके अंगा॥ पांचो तत्व ताहे प्रसंगा॥ स्वासा नेह सबै उपजाया॥ बानी बानी बरन बनाया॥ सत् सा

र सबहीको मूला॥ भये सत सो सब अ स्थूला॥ सत् सार स्वासा सै भारी ॥ अ मी आद पारस तहां धारी॥स्वासा आद सुरंग बखाना॥ भयउ रंग अमी बंधा ना॥ स्वासा अजर नाम अनुमाना॥ प्र गट अमीसो कहूँ सुजाना॥ अजर नाम स्वासा अनुसारा॥ अज़र अमीका बहु बिस्तारा॥आद नाम स्वासा परकासा॥ उपजी अमी अमान स्वासा ॥ नीर ना म भये अनुसारा॥ अचर अमीका बहु बिस्तारा ॥स्वासा पांच भये अनुसारा॥ पंच अमीको सकल पसारा॥ पंच अमी पांचो अधिकारा ॥ पांचो तत् सनेहि सुधारा ॥ पंच अमी सब लोक पसारा॥ आगे तत्व गुप्त अनुसारा॥

साखी।

पंच अमी ते पांच तत्व भये, पांच नाम अधिकार॥ सेन सनेही भये तब, उतपन अमित विस्तार॥

चौपाई।

षोडस स्वासा सार कहाया॥ सोरह सुतकी प्रगटी काया॥ सोरह सुतकी सोरह नाला॥ एकते एक अमान रसाला॥ पोहोप नाल स्वासा अनुसारी॥ प्रगटी सुर्त हँस अति भारी॥ उलट समानी प्रभुके देहा॥ बाहेर भीतर एक सनेहा॥ पंच अमीकी प्रगटी देहा॥ सुर्त पार घर पार सनेहा॥जेतिक सुर्त पुरुष निर्माई॥ अमी समाय खान उपजाई॥पांचो अमी सेत सुत अंगा॥ नाल सात प्रगटी तेहि अंगा॥ नाल सात संग एके भा

ऊ ॥ सातो सुर्त पुरुष प्रगटाऊ ॥ पुरुष सुर्त अगवा कीना ॥ सातो नाल सुर्त संग दीना ॥ सातो नाल सुर्त जब पाई ॥ ताहि नालमे रही समाई ॥ छिन बाहर छिन भीतर आवे ॥ देह विदेही दोनो दर्सावे ॥ अंबर तार निह अच्छर करेऊ॥ सो सब सौंपि सुर्त को दियेऊ ॥ सत पुरुष निज सुर्त सनेही ॥ पारस आद रची तब देही ॥

साखी।

आदर नेहे अच्छर संग लिये, सेत धजा फैराय॥ पलट समानी पुरुषमें, रही आछेय छिपाय ॥

अनुमाना॥सुक्रित अंस भये अगुवाना॥ दुसरे स्वासा बाहर आई ॥उपजे सहज सुंन तिन पाई॥ तिसरे स्वासा पोहप सनेही॥ तत बेहार सो आइ रहाई॥ चौथे स्वासा तेज स्नेही॥ ता संग भये धर्मकी देही॥ पांचवे स्वासा नाम कुमारी॥ उपजी कन्या आद कुमारी॥ सील नाम स्वासा निर्माई ॥छठवे अंस सुजन भयउ॥ सातवे स्वासा नाम अनंगी॥ उपजे अंस भ्रिंग मुनि संगी॥ आठवें स्वासा नाम सुहेली॥उपजे कुर्म सीस उरमेली॥ नवे स्वासा नाम सोहंगी॥ जेहि ते उपजे सुर्त सर्वंगी॥ दसवे स्वासा नाम रसाला॥तेहिते उपजे सर्वं नलीला॥ एकादस भये नाम सुपंगी॥ सुर्त सुभा

व उपजे बहु संगी ॥ द्वादश स्वासा नाम स्माहा ॥ भाव नाम सुत उपजे तांहां॥ तेरह स्वासा अछय सुधारा ॥ तेहिते सुत विवेक अवतारा॥ चौदे स्वासा अमर बंधाना ॥ सुत संतोष धीर निर्बाना ॥ पंधरे स्वासा प्रेम स्नेहा ॥ ताते कद्दल ब्रह्म की देहा ॥ षोडस स्वासा नाम जल रंगी ॥ उपजे दया पाल सुत संगी ॥ षोडस स्वासा षोडस बानी ॥ उपजे जोग सतायन ग्यानी षोडस स्वासा नाम बखाना ॥ षोडस सुत उपजे निर्बाना ॥ षोडस सुतके ये कहि मूला ॥ भिन्न भिन्न प्रगटे अस्थूला ॥ एकहि प्रीत एक बेव्हारा ॥ सबही रहे पुरुष दरबारा ॥ एके पगसे सेवा करही ॥ पुरुषके

पाव आप सिरधरही॥ सेवा करे समाध लगावे॥पुरुप लोक तज अंत न जावे ॥

साखी।

सोरह सुतकी एक गत, एकते एक अधीन॥कर जोरे सेवा करहि,प्रेम भक्ति लौलीन ॥

चोपाई।

सेवा करत बहुत दिन गयऊ॥ पुरुष अवाज अधर धुन भयऊ॥अधर अवाज भये ताहां वानी ॥ निकसी अग्र बास की खानी॥ पोहोप लोक दीप अधिकाई ॥ विमल बास तहां रहा छपाई॥ निरमल अग्र सहज सुख दाई॥ सो हो आग्रान सबहि सुतपाई ॥ पीवत अमी सुत सबे अघाने॥ अपने अपने लोक सिधाने॥ और सकल सुत अछय छपाने॥ ध

में धीर सबसे बरियाने॥छलके वचन पुरुष सो लीना॥पाछे धुंद लोकसे कीना॥

साखी।

और सकल सुत बैठे, अपने अपने स्थान॥ धर्म शेष सब हीसे कियो, ठांव ठांव बरियान॥

चौपाई।

धर्मदासो वचन॥ धर्मदास विनवे कर जोरी॥ साहेब संका मेटो मोरी॥ कैसे आवे सब सुत भारी॥ धर्मराय कस भये विकारी॥

सतगुरुवचन॥ धर्मदास तुम सुन हो बानीं॥ कहूं संदेस आद सैदानी॥ जब प्रगटे प्रभु अंबरतारा॥ निकसी अधर निह अछर धारा॥ पारस प्रमल महां कहूं उडाई॥ सोई परमल धरी दुरा

ई ॥ अग्र छपाय आपमे राखा ॥ सुर्त नेह मुख प्रगट भाखा ॥ प्रथम पुरुष मुख भाखा आई ॥ भाखा अग्र पारस निर्माई ॥ भाखा वचन भयो अधिकारा ॥ भाखाते सकल बिस्तारा ॥ लागा पेट गहे मूल साखा ॥ मूल मिले तवही फल चाखा ॥ गुप्त मूलते प्रगटी साखा ॥ पल्लुव मूलहि पेडहि राखा॥पेड देख पालव फैलावे ॥ पालव फैला अंत नहिं पावे ॥ पालव चढे पेड चितराखा ॥ मिले मूल तब फल रस चाखा ॥ आद अंत दो पेड समाना ॥ आपहि आप आप पैछाना॥ जागी सुर्त पुन पेड निहारा॥फल रस चाख बीच गहि डारा ॥ बीजाते सोही फल होई ॥ फल रस लेतु भूल जो सोई ॥

जागी सुर्त स्वप्न मिट गयऊ॥ दोय चि
त मेट एक चित भयऊ॥ आपे आप भ
ये अतिचारा॥ तेहि अवाज ते वचन उ
चारा॥ उठी अवाज शब्द सत भयऊ॥
कमल मध्ये कस सुन रहाऊ॥ घटमे ब
चन आप संधाना॥ तब चौथी स्वासा
बंधाना॥ तेज पुंज भयो गरभ सरीरा॥
हूको नाल देह बलबीरा॥ कमल नाल
धरि फूँको तबही॥ चौथी स्वासा निक
से जबही॥ फूको कमल तेजकी नेहा॥
चलो परसो अखंडित देहा॥ फूकत कम
ल बार नहिं लागा॥भयो उजियार तिम
र सब भागा॥कारन काल कपट तम धो
खा॥दोइ चित मूलतेजमें राखा॥चौथी
स्वासा विखे स्नेहा॥ मोह विकार धर्म
की देहा॥तिसरी स्वासा गुप्तहि राखा॥

तेहिते काल निरंजन भाखा ॥ फूंकत कँमल तेज झर गयऊ ॥ ताते काल जोत घर भयऊ ॥ जोत जहां लग ज्वाला ते भाखा ॥ तेहिते काल निरंजन राखा ॥ निराकार आकार कराये ॥ जोत कालहू नाम धराये ॥ चौदे द्वार काल जो भाखा ॥ सुंन सो सबे नाम मन राखा ॥ सत् इंड भये प्रचंडा ॥ फूटत अंड भयो भौखंडा ॥ चौदे बुंद अमी ढर गयऊ ॥ चौदे अंस ताहिते भयऊ ॥ चौदह पुरीया द्वार विठारे ॥ इन चौदे बहु ग्यान पसारे ॥ आप समान सबी रचि राखा ॥ चौदे कोट ग्यान तिन भाखा ॥ चौदे अंस धर्म तिन पाये ॥ ते चौदे विद्या फैलाये ॥ ते चौदे अगम अपारा ॥ तापर काल धरम बटपारा ॥ धर्म समाद चित

हिं जमधारा॥ चौदे माहि चार कोतवाला॥कोटिन ताकी कला कहे को पारा॥ जेहिके सुतं कोटिन उजियारा॥कोटिन कला करे बहु भारी॥आपहि पुरुष आपही नारी॥ आपहि वेद आपहीं बानी॥ आपहि कोटी ग्यान बखानी॥आद अजर बोध कहावे॥ मूल नाम गहि धोक लगावे॥ नाना ग्यान कहे बहु ग्यानी॥ प्रगटी आद आप गुन खानी॥कहां लग कहूं ग्यानको भाऊ॥ वहुत कला बहु नाम धराऊ॥ सुतं सरोतर जागे नाहीं॥ मनमथ पवन चंचला ताहीं॥

साखी।

आस धरे बहु जुग गये, भक्ति भाव आधीन॥ एक पाव सनमुख खडे, कर जोडे लौलीन॥ संपूर्ण॥

श्री

सतनाम लिखते पंचीकृत प्रारम्भ ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंश्री उग्र नाम, दयानाम,—

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

अथ लिखते श्रीपंचकृत ॥

सतगुरु वचन ॥ कहे कबीर सुनो संत सुजाना ॥ तुमसे कहूं सब्द सैदाना ॥ पांच आत्मा हमारी भाई ॥ तिनमे रह्या यक शब्द समाई॥सोई शब्द पुरुष निर्मावा॥ ताकी गंम काल नाहिं पावा॥चैतन

जीव ब्रह्म अबिनासी ॥ ता कर काल क
रम भइ फांसी ॥ पांच देह कीनो बिस्ता
रा ॥ तामे देखो एक मत सारा ॥ सो नि
र्नय अब भाक सुनाऊं ॥ भिन्न भिन्न तो
हे कहूं समजाऊं ॥ प्रथमे देह अस्थूल ब
खानी ॥ जाग्रत अवस्था ताकर जा
नी ॥ तहां ऋगवेद बैखरी बांचा ॥ रजो
गुन ब्रह्म देव तहां सांचा ॥ प्रिथवी तत्व
की नरही वासा ॥ मंत्र अकार तहां प्र
कासा ॥ अग्नी ऋषी गायत्री छन्दा ॥
कीलक ब्रह्मा पीत बरन गन्धा ॥ तहां
भूचरी मुद्रा जानी ॥ उषान सूर्ती तहां
समानी ॥ ताकर अब सुन लेहु ठिका
ना ॥ त्रिकुटि अस्थान कहु बंधाना ॥
ग्यान इंद्री नासा जानी ॥ इंद्री कर गुदा

पैछानी ॥ हाड चाम नाडी रोम मासा॥ यह प्रकृति किन रही वासा ॥ आवान नाग तहां वाय बखानी ॥पिंडज खानी इंगिन बानी ॥

साखी ।

कोस अन्नमय कहतहूं, मुक्त सालोक वखान ॥ प्रथम देह बर्नन कह्यो, ब्रह्म लोक अस्थान ॥

चौपाई ।

दूजे सूक्षम देह बखानी ॥ स्वप्न अवस्था ताकर जानी ॥ यजुर्वेद मध्यमा बाचा॥सत्वगुन विष्णुदेव तहां साचा॥ जलको तत्त तहां बखाना॥वाही सुरजॐकार मंत्र उचारा॥ नष्टुप गाईत्री छंद समेता॥श्रृंग वीज बर्नो रस श्वेता ॥खेचरि मुद्रा ताहां बखाना ॥ सूरज अनुदत

भये अस्ताना ॥ ग्यान करम इंद्रिय दो जानी ॥ रसना उपस्तीत लेवो पैछानी॥ सेत विंद कफ मेद वखानी॥ मुत्र सहित पांचो परवानी ॥ प्रान कुर्म वाह्य ताहां होई ॥ सत सत्मे कहो विलोई ॥ उपम ज खान तहां प्रकासा॥ इंगिन बानी ज हां निवासा ॥

साखी।

कोस प्रान मय जानिये, मुक्त सानीप वखान ॥ लोक तहां वैकुंठ है, सुक्षम देह वखान ॥

चौपाई।

गत गाइत्री छंद बखाने॥ ह्री रंग ब्रीज रक्त वर्नो॥ चाचारि मुद्रा कहूं अनूपा॥ स्वरित सूर अस्थानहै जाका॥चक्षूचरन इन्द्रीद्वय ताकी॥निद्रासंग आळस है भाई॥क्षुधा तृषा प्रक्रतिराही॥ वायस मान कीरला जानी॥जारज खान चिंगीन वानी॥

साखी।

कोस मनोमय जानिये, मुक्त तहां सारूप॥ कारन देही वर्नऊँ॥पुर कैलास अनूप॥

चौपाई।

तुर्या अवस्था चौथी जानिये॥माहा कारन देह प्रवानी॥वेद अथर्वन ताकर होई॥वाचा परा दोगुन सोई॥ शक्ति देवता वाय तत देखा॥ मंत्र इकार वरन

सशि देखा ॥ तेरा छ्टप गाईत्रीछंदा ॥ कागे बीज नील बरन वंदा ॥ स्पर्श कहे अघोचरी मुद्रा ॥सोहंग सुर कैहे प्रवंधा ॥ भूर भवन अस्थान प्रवाना ॥त्वचा पान इंद्रिय सैदाना ॥ बैठन उठन संकोच न भाई ॥ धावन और बल करन लखाई ॥ ताहां वाय बरन सुनाई ॥ देवदत्त समा न रहाई ॥अंडज खानी किंगिन बानी ॥ कोस ग्यान मे नेहचे जानी ॥ मुक्त सायुज राह वंद लोका ॥ देहे महा कारन को लेखा ॥

साखी।

महा कारन देहे चतुर्थ, सो सवही को मूल ॥ ताहीते प्रगट भये, कारन सुक्षम अस्थूल ॥

चौपाई।

अब सुनो वेद भेदकी बानी ॥ केव
ल देह पंचम जानी ॥ उनमनी अवस्था
जाकर जानी ॥ वाचा और नीर गहे भे
दा ॥ देव निरंजन तत अकासा॥ ॐका
र मंत्र तहां प्रकासा ॥ ब्रह्म ऋषी तहां
पुनि जानी ॥ अवेक्त गाईत्री छंद प्रवा
नी ॥ जग बीज श्याम वर्नों शब्दा ॥ हं
सा सो करही महामुद्रा ॥ नाद स्वरूप
कहूं अस्ताना॥ श्रवन बचन इंद्रिय द्वय
जाना ॥ काम क्रोध मोहो मद लोभा ॥
वाय यान धनंजय सोभा ॥ खानी नर
की सिंगिन बानी॥कोस आनंद मय क
हो बखानी ॥ मुक्तसायुज ताहां पुनि दे
खा ॥ भैरव स्थान लोक पुनि देखा ॥ त
हां लोक शिव मुनि ध्यान लगाई ॥ आ

गे अगम गम काहु न पाई ॥ चार वेदता के गुन गावे ॥ आगे कोई भेद न पावे ॥

साखी।

चार वेद कूं भेद यह, वीज मंत्र निज सार ॥ आगे अगम अगोचर, सत् गुरु कहे पुकार ॥ चार देह है या देहमें, निर्नेय वेद बखान ॥ कहे कवीर पुकार के, सत् शब्द निर्बान ॥

चौपाई।

काया माहे कीन रहिवासा ॥ सो सब भेद कहो प्रकासा ॥ प्रथम देह अस्थूल रहाई ॥ तेहि अस्थान कहों समुजाई ॥ चक्षु गहे तिन कीनो वासा ॥ बानी वैखरी प्रकासा ॥ जाग्रत अवस्था कहूं बखानी ॥ ब्रह्मा देव तहां रजतानी ॥ सूक्षम देहे का भेद वताई ॥ कंठ स्थान र

ही ठैराई ॥ वाचा कही मध्यमा सोई॥त
मोगुन रुद्र देव ताहां जोई ॥ हिरदे स्था
न पंश्यती वानी ॥ सत्व गुन विष्णु देव
ताहा जानी॥कारन देह तहा बंधाना॥शु
शुप्ति तहँ अवस्था जाना॥वानी परा वर्ब
अस्थाना॥ देव शक्ति चैतन्य बखांना ॥
सोहँग देहिपुनि तहां वहांलहिये॥परमा
नन्द भोग सोकैहे ॥ श्रवा खाद विवर्जि
त मुक्ता ॥ त्रिगुना तीत साक्षी उक्ता॥ के
वल देह त्रिकुटि अस्थाना ॥जोति स्वरू
प तहां बंधाना ॥ देव निरंजन है ब्रह्म वा
चा ॥ उन मुनि तहां अवस्था साचा ॥
जोगी जोग समाधि लगावे ॥ आपनिरं
जन जोति दिखावे॥चार वेद यह निर्नय
ठानी ॥ सत् सत् यह वानी जानी॥पांच
शरूप काल निर्माई ॥ सुर नर मुनि सब

रहे उरझाई॥अब सुनो पंच देह प्रवाना॥ भिन्न भिन्न मैं कहों बखाना॥ त्रीहस्य अर्ध इंद्रिय अस्थूला॥ द्वादश मास सुक्षम मूला॥तीजे कारन देह बखानी॥ तास अधर मात्रा जानी॥ चौथेको अब भाखूं लेखा॥तास प्रवान ससि सूर बिसेषा॥देह पंचमी बरन सुनाऊं॥ अंलगुअष्ट अर्ध प्रवान रहाऊं॥ अब आगेको भाखूं लेखा॥ सूक्षम रूप शब्द जो पेखा॥वारुकोप्र प्रवान लखाई॥ जो गुरु मिले तो भेद बताई॥ दसवां भाग बारुको जाना॥ताके विसवा बीस बखाना॥ ताहु ते सुक्षम प्रवाना॥ सोई स्वरूप पुरुष निर्वाना॥ सव्द स्वरूप अधर निवासा॥ सब घट सांही कीन रहिवासा॥ पंचीकृत निर्नय॥

इति श्रीपंचीकृत संपूर्ण॥

जय ॥ पुरुष ब्रह्मकी ॥ साडे तीन मात्रा
की देहि ॥ अकार मात्रा कहिये ॥ ॐ
कार मात्रा, मकार मात्रा कहिये ॥ र
कार अर्ध मात्रा कहिये ॥ ये साडे ती
न मात्रा संपूर्न कहिये ॥ तासु पुरुष ब्र
ह्म कहिये ॥ तासु त्वचा ग्यान कहिये ॥
आपमें देखे सर्वमें देखे ॥ पुरुष ब्रह्म सं
पूर्न देखे ॥ पुरुष ब्रह्मते, शक्ती ब्रह्म भ
ये ॥ सक्ती ब्रह्मकी दो मात्राकी देह क
ही ॥ सोहंग मात्रा मकार मात्रा कहि
ये ॥ येदो मात्रा संपूर्न कहिये ॥
जो जाने सो जीवन मुक्त कहिये ॥
आपमें देखे, सर्वमें देखे ॥ सक्ती ब्रह्म
संपूर्न देखे ॥ तासुक्षुद्र ग्यान कहिये ॥
सक्ती ब्रह्मते जीव ब्रह्मभये ॥ जीव ब्रम्ह

की, बिन देही कहिये॥ कारन, सुक्ष म, अस्थूल, ये तीन देही कहिये॥ कारन देहीके तीन नाम कहिये॥ कारन कहिये लिंग कहिये॥ जोत कहिये॥ कारन देही पांच तत्वकी कहिये॥ शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, कारन देहीते सुक्षम देही नव ततकी कहिये॥ सब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, मन, बुद्धि, चित, हंकार, यह नव तत्व कहिये॥ सुक्षम देही ते अस्थूल देही॥ पंदरा तत्वकी कहिये॥ अकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी, श्रवन, नासिका, नयन, जिभ्या, और त्वचा, शब्द, हस्त, पांव, गुदा, और लिंग, ये पंद्रा तत कहिये॥ तासूं अस्थूल देही कहिये॥ अस्थूल देही की पांच अवस्था

कहिये॥ अकह देही की पूरी अवस्था अविगत देहीकी तुर्या, कारन देहीकी शुशुप्ती, सुक्षम देहीके स्वप्न अवस्ता, अस्थूल देहीकी जाग्रत अवस्ता, कहिये॥ यह पांच अवस्ता संपूर्न कहिये॥ तासु अस्थूल देह कहिये॥ अस्थूल देही के तीन नाम कहिये॥ अस्थूल, दीर्घ, विरट कहिये॥ तासु ब्रह्म ग्यान कहिये॥

साखी।

ब्रह्मग्यान सबही कथे, ब्रह्म न चीन्हे कोय॥ ब्रह्मग्यान चीन्हे विना, जनम जनम दुख होय॥ संपूर्ण॥

(जंजीरा) पांच कोस पूर्व बांधूं॥ पांच कोस पश्चिम बांधूं॥ पांच कोस उत्तर बांधूं॥ पांच कोस दक्षिन बांधूं॥ पांच कोस जलहल बांधूं॥ पैठ पताल रा

जा बासक कूं बांधूं॥अकासका आकास बांधूं॥ पतालका पताल बांधूं॥ सतर नाडी बांधूं॥ बहत्तर कोठा बांधूं॥ दृष्ट की दृष्ट बांधूं॥ मूठकी मूठ बांधूं॥ तोटिया मसान बांधूं॥ आगिया बेताल बांधूं॥ डोका मसान बांधूं॥ मटिया मसान बांधूं॥ गांव खेडेके देव भूत बांधूं॥ डाकिनी सांकिनी बांधूं॥ कर्नीं कोटवाल बांधूं॥ हडवाई बांधूं॥ अगन वाई बांधूं॥ पांचूं पीर तुरकनकूं बांधूं॥ आवता जावता बांधूं॥ बैठता उठता बांधूं॥ राह बाटकी बिद्या बांधूं॥ घर बाहेर बांधूं॥ आसन बासन बांधूं॥ आन साहेब कबीरकी॥ सत सुकित मेरे बांधे॥ न बांधे तो कबीर धर्मदास

चार गुरु ॥ बंस व्यालीसके बांधेसे बंधे ॥ काम पडे सो दिन नदिया चडते पानी लीजे ॥ तांहां ऊद गूगलकी धूप देके, घृतका दीपक लगावना ॥ पानीमें नख नहीं डुबावना ॥ चार दाने उडदके पानीमे डालना ॥ दंडवत करना॥ पानीसे हाथ जोडके कहना जलरंग साहेब मैं जो कामकूं लेजाता हूं॥ सो काम सिद्ध करो ॥ न करे तो चमारके कुंडमें पडो ॥ मीता धोबीके सोन्नीमे पडे ॥ छितछितके छोड देवे मुसलमान जनावरको छोडदेवे॥ न छोडे तो कबीर धर्मदास च्यार गुरु बंस व्यालीसकी आनहै ॥

संपूर्ण ॥

से वृक्ष वृक्षकी छाया॥ ऐसे रहै ब्रम्हसंग माया॥ज्यों सरिता माहिं वृक्ष दिखाही॥ ऐसे ब्रम्ह जीवके मांहीं॥ माया बट ब्रम्ह नहिं दर्सै॥जीव अचेत केही विधि दरसे॥ माया पार ब्रह्म हित जानी॥और न कोऊ दूसर मानी॥एक अकेला ब्रह्म अपारा॥

शंकराचार्य बचन॥ हेस्वामी एक पूछों तोही॥ सो समजाय कहो अब मोही॥ केतक सक्त ब्रह्मते भयऊ॥तिनका नाम न्यारा कर दरसाऊ॥ औ केतक नाम ब्रह्मके भयऊ॥सो भिन्न भिन्न मोहि समजाऊ॥ माया परब्रह्म हित जानी॥ सो स्वामी कैसे करिमानी॥

कबीर उवाच ॥ जो तुम बूझो सोइमें भाखूं॥ तुमसे अन्तर कछू न राखूं॥

श्री

अथ श्रीग्रंथ।

कबीरसाहेब औरशंकराचार्यकी गोष्टी॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष
मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी ध
र्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम,
प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल
नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम,
प्रगटनाम, धीरजनाम, पंश्री उग्र
नाम, दयानाम,—
साहब,
वंश बयालीसकी दया।

शंकराचार्य बचन॥ हे स्वामी मोहे कहो समजाई॥ब्रम्हरूप केहि बिधीरहाई॥ कैसे उन संग माया आंई॥ जिवके संग ब्रम्ह कस रहई॥

कबीर उवाच॥ ब्रम्ह येक सुद्ध चैतन आई॥ माया अचेत संग रहाई॥ जय

से वृक्ष वृक्षकी छाया॥ ऐसे रहै ब्रम्हसंग माया॥ज्यों सरिता माहिं वृक्ष दिखाही॥ ऐसे ब्रम्ह जीवके मांहीं॥ माया बट ब्रम्ह नहिं दर्सै॥जीव अचेत केही विधि दरसे॥ माया पार ब्रह्म हित जानी॥और न कोऊ दूसर मानी॥एक अकेला ब्रह्म अपारा॥ शंकराचार्य बचन॥ हेस्वामी एक पूछों तोहीं॥ सो समजाय कहो अब मोही॥ केतक सक्त ब्रह्मते भयऊ॥तिनका नाम न्यारा कर दरसाऊ॥ औ केतक नाम ब्रह्मके भयऊ॥सो भिन्न भिन्न मोहि समजाऊ॥ माया परब्रह्म हित जानी॥ सो स्वामी कैसे करि मानी॥

कबीर उवाच ॥ जो तुम बूझो सोइमें भाखूं॥ तुमसे अन्तर कछू न राखूं॥

ब्रह्मते तीन सक्ती भयऊ॥ इच्छा क्रिया ग्यान निरमयऊ॥ औमायाके तीन सक्ति कयऊ॥ संसे मिथ्या विप्रीत॥औ ब्रह्मके पांच नाम कहेऊ॥ ब्रह्म,काल,करम, जीव,स्वभाव, ये पांच नाम कहेउ॥

शंकराचार्य बचन ॥स्वामी ब्रह्मका हेसो कहिये॥

कबीर उवाच॥ अखन्ड अबिनासी, ताहे सो ब्रह्म कहिये॥ काल काहे सो कहिये ॥ आपसे आप अवगुन उठावे॥ ताहे सो काल कहिये ॥करम [illegible] सो कहिये॥ सकल शर[illegible] सो करम कहिये॥ ज[illegible] ॥ आपके [illegible] चीन्हे [illegible] जीव कहिये [illegible]

खाटा मिट्ठा दुःख सुख जाने, ताहि सो स्वभाव कहिये ॥ औ मायाके पांचो नाम कोनसे कहिये ॥ माया, अकास, सुन्न, सक्ति, प्रकृति, यह पांच नाम कहिये ॥

शंकराचार्य वाच॥ स्वामी माया काहेसो कहिये ॥

कबीर उवाच ॥ ब्रह्मते इच्छा भई ॥ तासो माया कहिये ॥ अकास काहेसो कहिये ॥ पिंड ब्रह्मांडको आकार रचोहे, ताहेसो आकास कहिये ॥ सुंन काहेसो कहिये ॥ जडतासो सुन्न कहिये ॥ शक्ति काहेसो कहिये ॥ सकल इन्द्रीकूं जीते, तासूं शक्ती कहिये ॥ प्रकृति काहेसो कहिये ॥ अधर शाम वृच्छ, तासो प्रकृति कहिये॥ औ माया ब्रह्मके संजोगसे सर्व

सृष्टी उतपंन भई॥ प्रथम पुरुष पुरुससे प्रकृति॥प्रकृतिसे मोहो तत्व॥ मोह तत्व से अहंकार॥ अहंकारसे त्रिगुन॥ त्रिगुनसे अकास॥ अकाससे वायु॥ वायुसे तेज॥ तेजसे उदक॥ उदकसे पृथ्वी॥ पृथ्वी मायाका बिकार॥ शरीर तेज ब्रह्म का जीव चैतन्य॥ शंकराचार्य बचन॥चैतन काहेसो कहिये॥

कबीरउवाच॥आपकूं आप जाने॥ तासूं चैतंन कहिये॥ चारों अंतःकर्न जाने ग्यान इंद्रि कर्म इंद्रि जाने॥ अस्थूल मात्रा व प्रकृति जाने॥ तासो चैतन्य कहिये॥माया ब्रम्ह सदा संगहीहै॥ कबहूं न्यारा नहीं॥ अब पांच तत्वका रंग समजाऊं॥ पृथ्वी पीत बर्नहै॥ जल स्वेत होई॥

अग्नि लाल॥ वायु हरा॥अकास श्याम॥ पंच तत औ प्रकृति पच्चीस॥ ये सब मिलके अंतःकर्न होई ॥ मन पानीका रूपहै॥ बुद्धी पृथ्वी होय॥ चित्त वायु रूप है॥ अहंकार अग्नि होय॥ ये च्यारो अंतःकर्न कहिये॥शब्द अकासको रूपहै॥ स्पर्श वायुको रूपहै॥रूप तेजसे आया है॥ रस पानीका जानो॥गंध पृथ्वीसे होतहै॥ ऐसे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, ये पांचो ततहै॥पांचहे मात्रा अकाइंद्री, श्रवन, वायुइंद्रियहै, त्वचा नयन इंद्रीहे, तेजकी जिभ्या इंद्री है जलकी नासा इंद्री हे॥ पृथ्वीकी ये पांच ग्यान इंद्री कहिये॥ अब कर्म इंद्रिय समुझाइये॥वचन इंद्री आकासकी॥ हस्त इंद्री पवनकी॥ चेर

न इंद्री है तेजकी॥ लिंग इंद्रीहै जलकी॥ गुदा इंद्री है पृथ्वीकी ॥ यह दस इंद्री कहिये ॥ चौबीस अंस मायाके कहिये॥ येक अंस ब्रम्हको कहिये ॥ सबीसमो अंस ब्रम्ह विष्णुको कहिये॥ शंकराचार्य वचन॥महा विष्णु काहे सो कहिये॥ कबीर उवाच॥ संसारकी आद अंत जाने ॥ आवा गवन जाने॥विद्या अविद्या जाने ॥ ये षटगुन संपूर्न जानें॥ तासु महा विष्णु कहिये॥ब्रम्ह विष्णुके सरीर दोई ॥ एक शरीर पंद्रा तत्वको ॥ वाके तीन नाम कहिये॥ अस्थूल,वैराट, दीर्घ, औ येक सरीर नव तत्वको ॥ वाके तीन नाम कहिये ॥ सुक्षम, लिंग, जोत, अवस्था चार कहिये॥जाग्रत,स्वप्न,शुशुप्ति,

तुर्या ॥ शंकराचार्य उवाच ॥ जाग्रत अवस्था काहे सो कहिये ॥

कबीर उवाच॥पांच तत्व जाग्रत रहे॥ तासु जाग्रत कहिये॥स्वप्न अवस्था काहे सो कहिये॥कछुक निद्रा कछुक जाग्रत॥ येहि विधि स्वप्न अवस्था कहिये॥सुषुप्ति अवस्था काहे सो कहिये ॥गाढ निद्राके वीचेमें ॥ सब इंद्री लीन होय जाती है ॥ ताहे सो कहिये॥तुर्या अवस्था काहे सो कहिये ॥ये तीन अवस्थाको जाने॥तुर्या नाम ताहे सो कहिये॥और च्यार वाचा कहिये ॥ परा पश्यंति मध्यमा वैखरी ॥ और पांचवीं उनमुनिब्रम्हरूप दरसाई॥ पंद्रा तत्वकी विनसे देही नव तत्वकी वासना रहाई ॥ जो कोई दोनोको वि सराई॥ निर्वान पदको पावे सोई ॥

अथ लिखते शब्द पारख ॥

निस दिन सिंगी अनहद बाजे ॥ सदा रहे उनमुनिके छाजे ॥ सुर्त शब्दमें रहे समाई ॥ कहे कबीर गुलतान कहाई ॥ १ ॥ बहुत दिवसका सूता जागा ॥ खोल कपाट नाम सो लागा ॥ धन सतगुरु जिन जुगत बताई ॥ कहे कबीर सब बिपति मिटाई ॥ २ ॥ घटमें भया नामका हेला ॥ भूल गये सब खेलं खेला ॥ मोह माया की काटे फांसी ॥ कहे कबीर मिटै चौरासी ॥ ३ ॥ स्वामी सौं

ग्यान चिराकी मनमें जूपी॥ कहै कबीर सो मुक्ति सरूपी ॥५॥ फाटा टूटा कंथा पैरे॥मन ममताको घटमें घेरे॥ जमकी चौकी मान वडाई॥कहै कबीर सब दिये उठाई ॥६॥ मन राजा सरगुन मे रीजे॥ जैसे बकरी खटिक को धीजे ॥ निरगुन सेती लाजे मरसी ॥ कहे कबीर तब कैसे तरसी ॥७॥ फांसी लिये हातमें माया॥ जब बाघणने बकरा खाया॥ पडा पडा मम आवे रोई॥ कहे कबीर ऐसा दुख होई ॥८॥ माया का है जोरावर फंदा॥ तासो उबरे कोई यक बंदा ॥ स्वास स्वास पर सुमरन लागा ॥ कहै कबीर बिषै सब भागा ॥ ९ ॥ जयसे सापिन किया कुंडाला॥ कोइ यक बचा देगया टाला॥

कहे कबीर कुंडाला पहिरे ॥ निरभय होके जगमे खेले॥१०॥सब संसार कुंडाला मांही ॥ ताते सरपणि घरघर खाई॥ कहै कबीरकोइ बाहेर आवे ॥ ताको माया नहीं सतावे ॥ ११ ॥ करै बिव्हार ओअपच्या बोले॥मनमें फूला फूला डोले॥ मांग जाचके करै रसोई ॥ कहै कबीर नफा ना होई॥१२॥ बहुत जतनसे जगत प्रबोधे॥अपने घटको नाहिं न सोधे॥ अंधा शब्दको नाहिं न परचे॥कहे कबीर ब्रह्म किम दरसे॥१३॥ दुनियांसेती बकबक मुवा॥ज्यों ललनीने पकडा सुवा॥ऊपर पांव तलेमें मूंडी॥कहे [illegible]ीर संसारी डू

कठिन धारना हंसकी भाई॥ जौ नट
नीने ब्रत चढाई॥ बरत करै औ तन मन
साधे॥ कहै कबीर कला आराधे॥१६॥
सुर्त नीर्तसे नटनी खेले॥ तन संभार आ
गे पग मेले॥ऐसी धारना नामसो लावे॥
कहे कबीर सो हंस कहावे॥ १७॥ अं
तर लागी कर्मकी टाटी॥ दसो दिसा सु
र्त जा फाटी॥धोका चिंतामें दिन बीता॥
कहे कबीर सो रहगया रीता॥ १८॥
जाग सिताबी अब क्या सोवे॥ टाराटूरी
मे दिन क्या खोवे॥ छांड अनेक एककूं
ध्यावे॥ कहे कबीर निरभय होय जावे॥
॥ १९॥ वाका गढको बेगी लीजे॥ पा
छे नहिं पिया ना दीजे॥ तन मन झूझे
सोई सूरा॥ कहे कबीर साहेबका पूरा॥
॥ २०॥ रात दिवस मिल ग्यान पुकारे॥

घटका बैरी चुन चुन मारे॥ अगम पंथ की राह उबारे॥ कहे कबीर नहिं जमके चोरे॥ २१॥ मुखसे बचन कहे नाहिं खारा॥ हिंदू तुरक दोनोसे न्यारा॥ उज्जल की राह लीजे भाई॥ कहे कबीर धक्का ना खाई॥ २२॥ बिंद नादसो न्यारा रहिना॥ निसिदिन साहेब साहेब कहिना॥ कहे कबीर समजके देखो॥ आन बिषेको नाहिन लेखो॥२३॥ सुन्न शिखरमे तारी लागी॥ सुता सुर्त भडकके जागी॥ कहे कबीर पियासे लागी॥ दिलकी दुरमति तबही भागी॥ २४॥

साखी।

दोरी लागी भय मिटा, नाद रहा घर नाय॥ सुर्त सवागन होरही, पर घर पीउ न जाय॥ २५॥ संपूर्न॥

श्री

अथ।

श्री सुमरन चवका येकोत्तर ॥

सत्य नाम, सत्य सुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त्य, पुरुष, मुनिन्द्र, करुणा मय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूडामणि नाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरु बाला पीर नाम, केवल नाम, अमोल नाम, सुरति सनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, पंथी उग्र नाम, दयानाम,–

साहब,

वंश बयालीसकी दया।

लिखते श्रीसुमरन चौका येकोत्तर ॥

सिंहासनं ध्यान ॥ अज्ञ अचिंत अ कह अविनासी ॥ आद ब्रह्म अमरापुर बासी ॥ अदली अमी अज्यावन सोई ॥ आद नाम सत् सुकित होई ॥परमानन्द

अखिल सनेही ॥ सत्तनाम सत पुरुष वि
देही ॥ निह कामी निहअक्षर सांचा ॥
अज्ञ अविगत सवहीमे राचा ॥ अमर
अपार अनंत अभेदा ॥ अचल अचिंत
न जानै भेदा ॥ अक्षर अगम अगो
चर कैये ॥ अगम अलेख गही सत चि
त रहिये ॥ अभे औगह अकथ बखा
ना ॥ अंबु चरन औ पुरुष पुराना ॥
दीनवंधु करुना मै सागर ॥ दया सिंधू
हँसपति आगर ॥ दीन दयाल सो अ
धम उधारन ॥ हिरंवर मुनि भवसागर
तारन ॥ रूप अथाह अनहद राता ॥ जो
ग जीत सवहिनके दाता॥ करुनामय सं
तन सुख दाई ॥ अभय अचिंत नाम गु
न गाई ॥ सचितानन्द सो सदा उजाग

र ॥ जोग संतायन पति सुख सागर ॥
सुर्त नाम सोजपिये ग्यानी ॥ अमि अं
कूर वीज सैदानी ॥ प्रथम पुर्ष सवन क
र मूला ॥ अमोघ दीप नाम अस्थूला ॥
अलखनाम पुरुषोतम गावो॥नाम मुनिं
द्र सदा गोहरावो॥ सर्ब माही साद पती
सोई॥भक्तराज बूजो नरलोई॥सत् संतो
ष सो सदासनेही॥ शब्द रूप है अविच
ल देही॥ प्राननाथ पिउअमृत बानी ॥स
त्तलोकपति नाम बखानी॥सतगुरु जम
निवारण जाना॥बंदी छोरनेहेचे कर मा
ना ॥ आवा गवनका दुःख मिटावो॥चौ
रासी लक्ष बंधन मुक्तावो ॥ सीतल रूप
सदा उजियारा ॥ धर्मराय सिर मरदन
हारा ॥ मुक्ति दाता सीतल उजियारा ॥

नाम परायण प्राण पियारा ॥ अस्थिर नाम अभय पद दाता ॥ अक्षय राज नायक विख्याता ॥ सत्त साहेब कहो ब होर बहोरी ॥ अक्षय वृक्ष हिरंबर डोरी॥ पोहोप दीप मंडन गुरु सांचा ॥ हंस सो हंगम नाम बिच राचा ॥ सोहंग सब्द नाम यकसारा॥सत्त बचन बोले कनिहा रा ॥ इच्छा रूप संत जनगावे ॥ ग्यानी बीज अमोल कहावे अबोल असोच अ संसै धीरा ॥ केहि नाम यकोतर सत्त क बीरा॥इकोतर नाम सुमरे जो कोई ॥ता को आवागवन न होई ॥ नाम यकोतर सुमरहु जबही ॥ सतगुरु बैठ सिंहासन तबही ॥ आरति नाम इकोतर चहिये ॥ इकोतर विना न नरयल गहिये॥आरति

नाम इकोतर धारा ॥ इकोतर बिना कैसा कडिहारा ॥ इकोतर बिना नहिं कनिहारा ॥ अयसे मत मानो कनिहारा॥ इकोतर नाम जाने बिस्तारा ॥ ताको जानो निज कनिहारा ॥ पांच नाम येहीमें भाखा ॥ सहज पक्षपाल नासा राखा ॥ (सुर्त सहज पालनं) ॥ जल रंग श्रवन हे भाई ॥ हंसन तिलक यकोत्तर लहु जाई ॥ वायु अंग श्रवन लीलहे भाई ॥ सुर्त डोर गहो समजाई ॥ इकोत्तर नहिं जाने बिस्तारा ॥ सो जानो मिथ्या कंडियारा॥जो जाने यकोत्तर बिस्तारा॥ सो जाने हे निज कनिहारा ॥ नहीं तो दूत हे बटपारा॥ले जीवनको करे अहारा

साखी।

एकोत्तर नाम जाने बिना, धरे सिं

हासन पाव ॥ कहे कबीर वा महंत सिर, कोट वज्रकी घाव ॥ धर्मदास हंसन तिलक, लेहो यकोत्तर जान ॥ अंस सुजन जन मुक्त पद, सत्त सब्द परवान ॥ तिल भर काया मूल कवलमें, जहां पुर्ष रहि बास ॥ कहे कबीर सो पाइये, जो इकटक सुमरे नाम ॥ तिल भर काया सहज कँवलमें, जहां पुर्ष अस्थान ॥ सहज नाम जुग बांधिया, बावन नाम कर नेह ॥ दीप अजपाके ध्यानमें, जाहां भई सुर्तकी देह ॥ देह भई तब जानिये, ग्यान ध्यान लवलीन ॥ सुर्त सोहंगम शब्द हे, तब जम होये छीन ॥ सोहंग शब्द निज सांच हे, जपो अजपा जाप ॥ कहे कबीर धर्मदाससो, तुम देखो

अगम अगाध ॥ तुम इकटक सुमिरो स
त, गहि राखो तुम पास ॥ सोहंग शब्द
मे मुक्ति हे, सांच सुनो धर्मदास ॥ सु
मिरन सार इकोतर, चंद सूर घर सार ॥
कहे कवीर धर्मदाससे ॥ तास नाम
कनिहार ॥

चौपाई।

एती गम जान जो पावे ॥ सो भ
वजलमे गुरू कहावे॥ एकोत्तर नाम सिं
हासन ध्याना ॥ संपूर्ण ॥

अथ प्रथम सुमरन चौका ॥

नरयल मालुम करनेका ॥ सत कबी
र धर्मदाससो कही दीन ॥ अबिचल पुर्ष
नाम ॥ अबोल अंडोल नाम ॥ अज्या
वन वंदी छोड नाम ॥ सिंभु संतोष ना
म ॥ उदेचंद अछेराज नाम ॥ एते नाम

रहे लवलाई ॥ जमरा वाको देख डराई॥ अंबु अपवन नाम ॥ अंबु शंभु नाम ॥ और सतका भया प्रकास ॥ अजर नाम नरियल संचरे ॥ अमोल नाम वे पुर्ष है॥ सोहंग हंस ताहां बिलमावा ॥ सो तो धर्मदास बैठे हे पुर्ष पुराना ॥ सोहंग सुर्त तुम मोर सुजाना ॥ ॐग नाम तुम जगमें देऊ ॥ हंस छुडाय कालसो लेऊ ॥ यही नाम जीवजो पावे॥बोधे हंस लोक में आवे ॥

साखी।

मे कबीरका हूं दरबानी, दरवाजे रहुं ठाड ॥ आत जात सुख ऊपजे, हंस न को नहिं गाड ॥ यह इकोतर सुमरे कोई, इकोतर नाम पुर्ष सनेही ॥

इति श्रीचवका यकोतर ॥ सुमिरन ध्यान संपूर्ण ॥

शब्द ॥ अवधू ग्यान काहेसों कहिये ॥ कोहे ग्यान बिग्यान सो कोहे ॥ कैसे निज पद लहिये ॥

टेक ॥ कोहे जीव ब्रह्म सो कोहे ॥ कोनहे अक्षर सो न्यारा ॥ कोनहे नाम अनामी कोहे ॥ कोन कहिये करतारा ॥ १ ॥ च्यार अवस्था पांचो मुद्रा ॥ जोग करे सो कवन ॥ मुक्ति नाम काहे सो कहिये ॥ कोन सार निज पवन॥२॥ कहो सबद कहांते आया ॥ करहि अवाज अमोल ॥ का टकसार होत घट भीतर ॥ कोन राह होई बोल ॥ ३ ॥ बाहर भीतर व्यापक कोनहै॥सकल ठोर कोहि वास॥उतपति परले कौन करतहै॥ कौन को सकल तमास॥४॥ यति युगति

लखे सो कोनहे॥ अलख नाम हेकाका॥ कहे कबीर सुनोहो गोरख॥ खोज करहु तुम ताका॥ ५ ॥

शब्द॥ अवधू सुनो शब्दका जवाब॥ करो छान जान जो पावो॥ हासिल सब हि हिसावा॥टेक॥ ग्यान सोई जो आत म चीन्हे॥ और ग्यान कछु नाहीं॥ चा र दिसाका छांडि आसरा॥ मगन रहे मन माहीं॥ १ ॥ ध्यान सोई जो उनमु नि सूझे॥ बालक अस बिग्याना॥ यहि रहनी चूके नहि कबहू॥ चाहे नहि मा न अमाना॥ २ ॥ जीव सोई जो जुग जुग जीवे॥ उतपति परले मांहीं॥ देह धरे भरमे चौरासी॥ निरभे कबहू नांहीं॥ ३ ॥ ब्रह्म सोई जो सब घट व्यापक॥

अक्षरको क्षय नाहीं॥ ॐकारहै आदि
सवनका ॥ त्रिगुन तत्व तेहि माहीं॥
४॥ नाम सोई जाकोहै रूपा॥ निहअक्ष
र निज माना॥ राम कृष्ण अवतार आ
दिले॥ धरे निरंजन ध्याना॥५॥ नाभि
कमल ते शब्द उठतहै॥ हिरदे कमल
टकसारा॥ कंठ कँवल होय वानी वोले॥
निकसे मुखके द्वारा॥ ६॥ मनहि अव
स्था मनही मुद्रा॥ मन कर्ता तिहुँलो
का॥ मुक्ति नाम ताहिको कहिये॥ मि
टिगया धंधाधोखा॥७॥ सार वचन
है सबके ऊपर॥ पवन पचासीके पारा॥
उतपति परलय काल करतहै॥ वासे रहै
निनारा॥ कहै कबीर सुनो हो अवधू॥
संत होय सो बूझै॥ गुपत प्रगट औ वाहर

भीतर॥ सकल ठौर तेहि सूझे॥८॥सं०॥

शब्द ॥ आपहि खेल खिलाडी साहेव ॥ आपहिं ध्यान धारी है ॥ टेक ॥ तंबूतो असमान वनाया ॥ जमीं दुलैचा डारीहै॥ चांद सूरज दो जरत चिराका ॥ तेरी कुदरतन्यारीहै ॥ १ ॥ पांचतत्वका किया पसारा ॥ त्रिगुन माया सारीहै ॥ चैतनरूप आपहो बैठे ॥ यही अचम्भा भारीहै॥२॥ चारोंयुगकी चोपड मांडी॥ खेलै नर और नारीहै ॥ तीन देव जाकी साख भरत है ॥ पाप पुण्य अधिकारीहै॥ ॥३॥सुरतिनिरतिसे माड मचाया॥आप फसा जग धारीहै ॥ फांसा चाहे जयसा जिताव ॥ सारी कवन बिचारी है ॥ ४ ॥ छके पंजेसे नरद बचावो॥ बाजी कठिन

करारीहै ॥ जाकी नरदपको घर आवे ॥ सोईसुघड खिलाडीहै॥५॥ जाके शिरपर सच्चा साहेब ॥ वाकूं जगत भिखारी है॥ कहे कबीर सुनो भाई साधो ॥ अबकी जीत हमारी है ॥ ६ ॥ संपूर्णम् ॥

इति समाप्तोयं ग्रंथः ।

सत्य कबीरो जयति ।

शांतिः शांतिः शांतिः ।

सत्तनाम कवीरकी विषयानुक्रमणिका।

यह पुस्तक नीचे लिखे पते से मिलेगी॥

ठक्करनारायणदास गोविन्दजी.

के०आ०–संतबालादासजी हकीम.

ग्रान्टरोड (बम्बई)